



TECHNOLOGIES FOR
NEW INDIA@75
आज़ादी का अमृत महोत्सव

संयुक्तांक: 13 व 14

वर्ष: 2022

आंकुर



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारत सरकार का स्वायत्तव निकाय

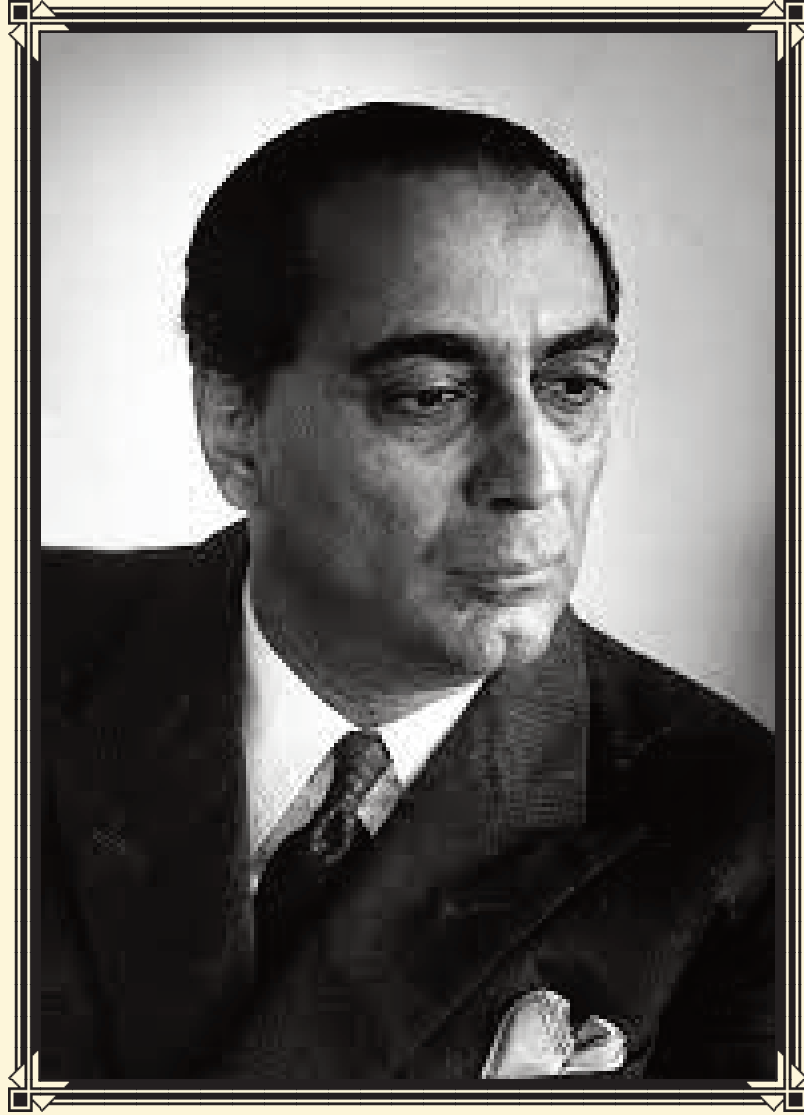
अणुशक्तिनगर, मुंबई

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	आलेख	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		3
2	राजभाषा कार्यान्वयन समिति		4
3	संरक्षक की कलम से ...		5
4	संरक्षक की कलम से ...		6
5	मार्गदर्शक की कलम से ...		7
6	संपादकीय		8
7	हमारे राष्ट्र की सेवा में परमाणु	श्री के.एन. व्यास – श्री एम. रमणमूर्ति	9–15
8	मन विहंगम	श्रीमती नीरजा त्रिपाठी	16
9	नमन स्वप्न-दृष्टा!	श्री प्रसाद गोखले	17
10	सुन्दर कर अपना परिदृश्य	डॉ. धनुर्धर झा	18
11	मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी हानि	श्री जी. रामचन्द्र गौड	19
12	मुस्कुराइए, मुस्कुराइए	श्री तरुण कुश	20
13	शहीदों को नमन	श्रीमती एडवीन डव	21
14	कुछ तो बचें	श्रीमती सुनीता सुचारी	22
15	सहनशक्ति की मूरत	डॉ. दीपक क्रांति	23–24
16	तुमको सलाम	श्रीमती मस्की संगीता	25
17	ये अमन-चैन से कैसे रहते?	श्री हरि शंकर त्रिपाठी	26
18	अमर जवानों को नमन	श्री योगेन्द्र शास्त्री	27
19	समर्पित आशीष	श्री रामचंद्र रेगर	28
20	अंकुर	श्रीमती सुमन दुबे	29–30
21	ऐ हिंदी मैं तुझे क्या बतलाऊं	श्री राजेश कुमार	31
22	सफर को मंजिल बनाकर	श्री योगेश धानुका	32
23	हम हैं बच्चे दिल के सच्चे	श्रीमती एम. लता	33
24	रस विचार	डॉ. धनुर्धर झा	34–38
25	स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका	श्रीमती ज्योति अविनाश पेंटे	39–40

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	आलेख	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
26	नव आँगन है, नव चौबारा ...	श्रीमती राज रानी सिंह	41
27	कुछ खोया, कुछ पाया है।	श्री सत्यवान भिवाजी लोखंडे	42
28	प्रकृति में क्रोध है, तो करुणा भी ...	श्रीमती के. श्रीलता	43
29	गीत खुशी के हम गाएँ	श्री जयवर्धन भटनागर	44
30	नयी पीढ़ी का आईना हूँ	श्रीमती अमला प्रदीप पंडित	45-46
31	आँगन बगिया महकाओ ...	श्रीमती अनुपमा तपन मंडल	47
32	शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है ...	श्रीमती आभा श्रीवास्तव	48-50
33	व्यापक फायदों के लिए ...	श्री विश्वांभर शिवाजीराव लांडगे	51-52
34	शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास संभव नहीं	श्रीमती एस. अनीता	53-54
35	सोशल मीडिया उपयोगकर्ता के अनुशासन और नियंत्रण को सुदृढ़ किया जाए तो ...	श्री रमेश तिलवे	55-56
36	वास्तविकता से दूर सपनों की दुनिया में ...	श्री महेश वालेन्द	57-58
37	स्पष्ट नीति सोशल मीडिया के लिए समय की मांग ...	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन	59-60
38	रचनात्मकता आज के समय की मांग ...	सुश्री रीना	61-64
39	शिक्षण सहायक सामग्री उपयोगी, कौतूहलपूर्ण और स्पष्ट हो...	श्री सतीश एम. मेश्राम	65-67
40	मात्र चॉक और चुनौतियों के सही मिश्रण से, शिक्षक जीवन बदल सकते हैं	श्री एस. अनीता	68-69
41	खेल आज को बेहतर बनाता है और भविष्य का निर्माण करता है	श्री अनूप पाठक	70-72
42	पुरुषों और महिलाओं के खेलों की लोकप्रियता के बीच एक बड़ा अंतर है ...	श्रीमती शकुंतला जलगांवगर	73-74
43	खेल वर्तमान को बेहतर बनाते हैं और भविष्य का निर्माण करते हैं...	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन	75-76
44	कहानी: शहरी संस्कृति और बदलता परिवेश	श्रीमती किरन देवी	77-78
45	हिंदी पखवाड़ा-2020		79-81
46	हिंदी पखवाड़ा-2021		82-84



डॉ. हेमी जहँगीर भाभा

संरक्षक



डॉ. वी.पी. वेपुगोपालन

अध्यक्ष, र.का.स. एवं
अध्यक्ष, प.ऊ.शि.सं



श्री पी. गोवर्धन

संयोजक, र.का.स. एवं
सचिव, प.ऊ.शि.सं

मागद्शिक



श्री दिलीप सिंह

सदस्य सचिव, र.का.स. एवं
प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शै.इ., प.ऊ.शि.सं

संपादन



श्री रयाम बाबू

सदस्य, र.का.स. एवं
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, प.ऊ.शि.सं



श्री हरि शंकर त्रिपाठी

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक (एसएस)
प.ऊ.कै.वि.-2, मुंबई

-: टंकण एवं डिजाइन :-

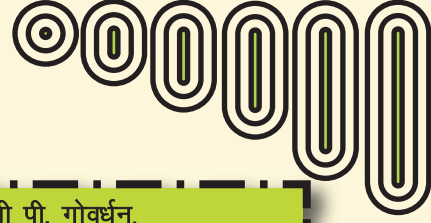
श्री रयाम बाबू

वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, प.ऊ.शि.सं

नोट: ई-पत्रिका में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि प्रबंधन या संपादन मंडल की उनसे सहमति हो।



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति



डॉ. वी.पी. वेणुगोपालन,
अध्यक्ष,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्री पी. गोवर्धन,
सचिव,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्री दिलीप सिंह,
प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शै.इ
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्री बी. वेंकन्ना,
प्रधानाचार्य,
प.ऊ.के.वि.-2, मुंबई



श्री आनंद कुमार,
प्रधानाचार्य,
प.ऊ. कनिष्ठ महाविद्यालय, मुंबई



श्री रामदास वासुदेवन,
प्रधानाचार्य,
प.ऊ.के.वि.-6, मुंबई



सुश्री इनू बंसल,
प्रधानाचार्य
प.ऊ.के.वि.-5, मुंबई



श्री संतोष एन. जाधव,
प्रधानाचार्य,
प.ऊ.के.वि.-4, मुंबई



सुश्री मीना एच. हिंगोराणी,
प्रशासनिक अधिकारी-III,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति

श्रीमती उर्मिला लाल,
उप-प्रधानाचार्य,
प.ऊ.के.वि.-1, मुंबई



श्री प्रसाद गोखले,
उप-प्रधानाचार्य,
प.ऊ.के.वि.-3, मुंबई



श्रीमती ज्योती अ. पेंटे,
वरिष्ठ लेखा अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्री पी. रवि बाबु,
सहायक लेखा अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्रीमती शोभना डी. पनिकर,
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्रीमती सुनीता ता. कोर,
सहायक लेखा अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्रीमती प्रेमा अरुणाचलम,
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्रीमती संध्या रा. आंब्रे,
सहायक प्रशासनिक अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्री श्याम बाबू,
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था





परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
(भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय)
ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY
(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Government of India)



डॉ. वी.पी. वेणुगोपालन
अध्यक्ष

Dr. V.P. VENUGOPALAN
Chairman



संरक्षक की कलम से ...

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था अपनी गृह पत्रिका 'अंकुर' के वर्ष 2022 अंक का प्रकाशन करने जा रही है।

राजभाषा के रूप में हिंदी का सफ़र लगभग सात दशक का है। इसके विकास में संचार माध्यमों जैसे- दूरदर्शन, रेडियो, हिंदी फिल्मों और साहित्य का अति महत्वपूर्ण योगदान रहा है। राजभाषा संबंधी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से न केवल राजभाषा के प्रगामी अनुप्रयोग को बढ़ावा मिलता है बल्कि अधिकारियों/ कर्मचारियों की रचनात्मक क्षमता प्रदर्शन को एक माध्यम मिलता है।

हिंदी हमारे लोकाचार और जीवन दर्शन की वाहिका है। अतः संवैधानिक कर्तव्य के साथ-साथ यह हमारा नैतिक दायित्व भी है कि हम हिंदी से पूरी तन्मयता से जुड़ें और राजभाषा नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करें। इस दृढ़ विश्वास के साथ कि 'अंकुर' पत्रिका दिनोंदिन नवीन विचारों से पल्लवित-पुष्पित होती रहेगी मैं, इससे जुड़े समस्त संपादक मंडल एवं कर्मचारियों को बधाई देता हूँ।

जय हिंद !

वेणुगोपालन

(डॉ. वी.पी. वेणुगोपालन)
अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था
(परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय, भारत सरकार)

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic Energy, Govt. of India)



पी. गोवर्धन
सचिव

P. Goverdhan
Secretary



संरक्षक की कलम से ...

यह हर्ष का विषय है कि परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की गृह पत्रिका 'अंकुर' का वर्ष 2022 अंक ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशित होने जा रही है।

भारत में हिंदी की व्यापकता और लोकप्रियता को देखते हुए संविधान निर्माताओं ने हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया और 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। इसी क्रम में राजभाषा अधिनियम एवं नियम बनाए गए जिनके अनुपालन में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन का दायित्व प्रत्येक अधिकारी व कर्मचारी का है।

वर्तमान में कोई भी भाषा सूचना प्रौद्योगिकी के बिना पल्लवित और पुष्पित नहीं हो सकती। निश्चित ही राजभाषा नीति के शत-प्रतिशत कार्यान्वयन और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए सूचना प्रौद्योगिकी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। ई-पत्रिका, ई-समाचार पत्र और वेबसाइट, सोशल मीडिया आदि का नियमित और भरपूर प्रयोग राजभाषा प्रचार-प्रसार के लिए प्रभावी माध्यम सिद्ध हो सकते हैं।

गृह पत्रिका अपने उद्देश्य के अनुरूप हिंदी कार्यान्वयन में सहयोगी की भूमिका को निभाने में सफल हो, ऐसी शुभकामनाओं के साथ।

पी. गोवर्धन

(पी. गोवर्धन)

सचिव,

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(भारत सरकार के परमाणु ऊर्जा विभाग का स्वायत्त निकाय)

केंद्रीय कार्यालय, पश्चिमी क्षेत्र, प.ऊ.के.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

ATOMIC ENERGY EDUCATION SOCIETY

(An Autonomous Body under Department of Atomic energy, Govt. of India)

Central Officer, Western Sector, AECS-6, Anushaktinagar, Mumbai-400094



मार्गदर्शक की कलम से ...

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की राजभाषा पत्रिका 'अंकुर' के अंक 2022 को आपके कर-कमलों में समर्पित करते हुए असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था शिक्षण एवं गैर-शिक्षण कर्मचारियों के लिए हिंदी भाषा के प्रयोग के प्रोत्साहन तथा प्रचार-प्रसार के लिए एक मंच उपलब्ध कराने का कार्य 'अंकुर' के माध्यम से करती है।

अपने नाम 'अंकुर' के अनुरूप यह पत्रिका अनेक प्रांतों के रचनाकारों की लेखनी से निर्गत भावों को ग्रहण करती हुई अब पौधे से वृक्ष बनने की दिशा में अग्रसर है। इस पत्रिका में लिखित सामग्री परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के अखिल भारतीय हिंदी प्रेमियों की राजभाषा के प्रति अंतरंग स्नेह का प्रमाण है। इन रचनाओं से हमारी संस्था के कर्मचारियों की लेखन-प्रतिभा का सहज ही आभास मिलता है।

हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह रचना आपको भाएगी।

इस पत्रिका के संपादन हेतु संपादक मंडल को हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(दिलीप सिंह)

प्रधानाचार्य एवं प्रमुख, शै.इ.,
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



संपादकीय



“हिंदी की प्रतिस्पर्धा अंग्रेजी से है, सभी स्थानीय भाषाएँ हिंदी की सखी हैं। हिंदी के समृद्ध होने से देश की सभी भाषाएँ समृद्ध होंगी व स्थानीय भाषाओं की समृद्धि से हिंदी समृद्ध होगी”- सूरत राजभाषा सम्मेलन में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री के विचार केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए दूरगामी अर्थ रखते हैं। निःसंदेह भाषा ज्ञान के रास्तों को खोलती है लेकिन हमारे ही देश में अंग्रेजी पर हम सभी की अति-निर्भरता ने गाँव, कस्बों व शहरों तक के विद्यार्थियों को अंग्रेजी भाषा ज्ञान के अभाव के कारण विज्ञान और तकनीकी ज्ञान से वंचित कर दिया है। उच्च शिक्षा में अंग्रेजी पाठ्यक्रम व अंग्रेजी भाषा की अनिवार्यता व हिंदी भाषा में पाठ्यपुस्तकों में अभाव युवा पीढ़ी के विकास में बाधक है।

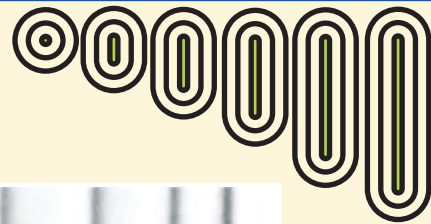
आज एक ओर हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं, दूसरी ओर आजादी के इतने वर्षों उपरांत भी हम ज्ञान-विज्ञान के पाठ्यक्रमों को हिंदी, मातृभाषा व क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध कराने में असमर्थ हैं, जो थोड़ा बहुत उपलब्ध भी हो रहा है उसकी भाषा को सरल करने की आवश्यकता है। भाषा की इस दुरुहता के कारण हमारी बहुत सी प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर नहीं मिल पा रहा है।

वर्तमान जरूरतों को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने नई शिक्षा नीति 2020 लागू की है। नई शिक्षा नीति में भाषा के संबंध में उत्पन्न उन सभी सवालों को समझा व नई शिक्षा नीति का हिस्सा बनाया गया है जिस पर अधिकतर हिंदी आयोजनों में चर्चा होती आ रही है। इस नीति के अंतर्गत राजभाषा आयोग, 1955 की सिफारिशों में से एक भारतीय भाषाओं के ज्ञान और सीखने की सिफारिश को शामिल किया गया है। नई शिक्षा नीति वर्तमान चुनौतियों और सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर तैयार की गई है और यह स्वभाषा के संदर्भ में अधिक मुखर होती है जो सरकारी कामकाज में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए सकारात्मक संकेत है।

हमारी मातृ भाषाएं हमारी लोक व व्यापक जन की संवाद व संप्रेषण की भाषा है। यह हमारे राष्ट्र की धरोहर है यदि हम इनके प्रति ही स्वाभिमान का भाव पैदा नहीं कर सके तो फिर हम अपने राष्ट्र के प्रति भी स्वाभिमान का भाव नहीं रख सकते हैं। महात्मा गाँधी जी ने भी कहा है कि “मेरी मातृभाषा में कितनी खामियाँ क्यों न हो? मैं इससे इसी तरह चिपटा रहूँगा जिस तरह बच्चा अपनी माँ की छाती से। यही मुझे जीवनदायनी दूध दे सकती है।” यह सच है कि कोई भी राष्ट्र तब तक मजबूत नहीं बनता जब तक उसकी ज़मीन अर्थात उसका जन मजबूत नहीं होता है। हमारी मातृ भाषाएं इसी बड़े व व्यापक जन समूह का प्रतिनिधित्व करती है। जब यह जन समूह मजबूत होगा तो उसका प्रतिनिधित्व करने वाली हमारी हिंदी भाषा भी स्वतः मजबूत होगी। क्योंकि हिंदी का शब्द भण्डार तो उसकी मातृभाषा, क्षेत्रीय बोलियों व भारतीय भाषाओं के शब्दों के भंडार से निर्मित है। ऐसे में बहुभाषिकता हमारी कमज़ोरी नहीं बल्कि हमारी विशेषता है।

Shyam

श्री श्याम बाबू
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



हमारे राष्ट्र की सेवा में परमाणु के.एन. व्यास – एम. रमणमूर्ति



परमाणु बिजली उत्पादन महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो दुनिया भर के ऊर्जा उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। दुर्भाग्य है कि इस मामले में शंकालु प्रवृत्ति दिख रही है, जिसके कारण कार्बन का न के बराबर उत्सर्जन करने वाले इस ऊर्जा स्रोत को छोड़कर सौर, जल, पवन एवं भूतापीय ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की तरफ अग्रसर हुआ जा रहा है। वे स्रोत परमाणु ऊर्जा की अपेक्षा कार्बन का अधिक उत्सर्जन करने के कारण ही नहीं बल्कि अपनी अप्रत्याशित प्रकृति और दक्षता की कमी के कारण भी ऐसे कई देशों में बिजली की बुनियादी जरूरत पूरी करने में नाकाम रह सकते हैं, जो देश आक्रामक तरीके से उन्हें बढ़ावा दे रहे हैं। इससे ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का साया गहराने के बाद भी प्राकृतिक गैस का प्रयोग बढ़ रहा है, जिससे और भी कार्बन उत्सर्जन हो रहा है।



परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोगों पर जिनेवा में 1955 में हुए पहले सम्मेलन की अध्यक्षता करते डॉ. होमी भाभा

परमाणु ऊर्जा विकासशील देशों के पूर्ण औद्योगीकरण में, अपनी सभ्यता को बनाए रखने में और उसके विकास में सहायक मात्र नहीं है, बल्कि उसके लिए नितांत आवश्यक है। परमाणु ऊर्जा प्राप्त करने और उसका उपयोग करने का जो ज्ञान मानव ने अर्जित किया है, उसे मानव इतिहास का तीसरा युग माना जाना चाहिए।

होमी जहांगीर भाभा

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की क्षमताएं किसी भी राष्ट्र की सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति की बुनियाद हैं।

20वीं शताब्दी के आरंभ में वैज्ञानिक खोजों का जो दौर आया, उसका कारण प्रकृति को और भी विस्तार से समझने के लिए मानवीय ज्ञान में वृद्धि करने की प्रबल इच्छा थी। प्रकृति की शक्तियों को खंगालने, समझने और संभवतः जीतने की मनुष्य की सहज इच्छा विभिन्न क्षेत्रों में कई वैज्ञानिक

खोजों का कारण बनी है। पदार्थ की प्रकृति के बारे में बारीक से बारीक बात जानने की जिज्ञासा ने परमाणु संरचना की खोज करा दी। रदरफोर्ड एवं बोर् ने पता लगाया कि परमाणु के केंद्र में नाभिक होता है, जो निश्चित बंद कक्षाओं में घूमते इलेक्ट्रॉन से घिरा होता है। परमाणुओं की प्राकृतिक रेडियोधर्मिता तथा स्वतः विखंडन की खोज क्रमशः बेकेरल और रदरफोर्ड पहले ही कर चुके थे लेकिन 1932 में चैडविक द्वारा न्यूट्रॉन की खोज किए जाने के साथ

के.एन. व्यास भाभा आणविक अनुसंधान केन्द्र (बार्क), मुंबई के निदेशक हैं। वह सामरिक उपकरणों के लिए ईंधन विकास तथा डिजाइन में अहम भूमिका निभा चुके हैं। साथ ही महत्वपूर्ण नाभिकीय संयंत्रों के मुख्य घटकों पर गहन कार्य कर चुके हैं। इंडियन न्यूक्लियर सोसायटी उत्कृष्ट सेवा पुरस्कार समेत कई सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं। ईमेल: director@barc.gov.in

एम. रमणमूर्ति बार्क प्रशिक्षण विद्यालय के कार्यक्रम क्रियान्वयन विभाग में अभियांत्रिकी स्नातकों तथा विज्ञान परास्नातकों के लिए ओरिएंटेशन कोर्स (आईसीईएम) के प्रमुख हैं। आणविक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में मानव संसाधन विकास विषय पर लगातार शोध और लेखन करते रहे हैं। ईमेल: mmurthi@barc.gov.in

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

ही परमाणु विज्ञान कहलाने वाली वैज्ञानिक शाखा ने गति पकड़ ली।

आइंस्टीन यह प्रतिपादित कर ही चुके थे कि ऊर्जा और द्रव्यमान समतुल्य होते हैं और यह अनुमान भी लगा चुके थे कि पदार्थ में एकत्र ऊर्जा की बड़ी मात्रा का अंततोगत्वा उपयोग कर ही लिया जाएगा। क्यूरी दंपती 1934 में ही स्थिर नाभिक पर अल्फा कणों की बौछार से कृत्रिम रेडियोधर्मिता उत्पन्न कर चुके थे। ओटो हान

संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) की स्थापना की गई और भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी भाभा की अध्यक्षता वाले एक सम्मेलन में इसकी घोषणा की गई। आईएईए के उद्देश्य वास्तव में सराहनीय थे, जिनका लक्ष्य संपूर्ण मानव जाति के लिए परमाणुओं का शांतिपूर्ण प्रयोग करना एवं परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकना था।

और फिट्ज स्ट्रासमैन ने 1938 में नाभिकीय विखंडन की खोज की, जिसमें बड़ी मात्रा में ऊर्जा उत्पन्न होती है, लियो जिलार्ड ने अनुमान लगाया कि स्वतः होने वाली विखंडन प्रक्रिया नाभिकीयशृंखला अभिक्रिया के कारण होती है, एनरिको फर्मी ने स्वतः चलने वाली नाभिकीयशृंखला अभिक्रिया का सफल प्रदर्शन किया और अंततोगत्वा 1945 में परमाणु अस्त्र का निर्माण एवं प्रयोग हो गया, जिसने दुनिया को हमेशा के लिए बदल दिया। मानवता के इतिहास में नए युग का आरंभ हो गया था, जिसकी विशेषता इन घातक हथियारों के द्वारा बार-बार स्वयं को ही खत्म करने की क्षमता थी। इस युग में मानव ने प्रकृति की ताकत की खोज कर ली, जिसका सेहरा नोबेल से सम्मानित वैज्ञानिकों के एक समर्पित दल के सिर बंधा, जिनका उद्देश्य प्रकृति के रहस्यों से पर्दा हटाना भर था।

शांति के लिए परमाणु: आदर्शवादी तस्वीर

प्रत्येक परिस्थिति से एक नई उम्मीद पैदा होती है, नया समाधान मिलता है।

बीसवीं शताब्दी में दो विश्वयुद्धों ने दुनिया को बरबाद कर दिया था और मनुष्य के प्रति मनुष्य की अमानवीयता के चीभत्स और क्रूर प्रदर्शन में लाखों लोग जान गंवा चुके थे। जापान पर 1945 में गिराए गए दो परमाणु बमों का भयावह प्रभाव आंखें खोलने वाला था और उसने मानव जाति को इतना सदमा दिया, जितना व्यापक संहार के किसी भी हथियार ने पहले कभी नहीं किया था।

ऐसे बुरे समय में परमाणु शक्ति का उपयोग शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए करने के युग का सूत्रपात होने की आशा जग गई। 'शांति के लिए परमाणु' यानि 'एटम फॉर पीस' अमेरिकी राष्ट्रपति श्री ड्वाइट डी आइजनहोवर की पहल थी, जिसकी शुरुआत 1953 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 470वें पूर्ण अधिवेशन में भारत की ही श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने की थी, जो महासभा की अध्यक्ष थीं। इस भाषण से परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण प्रयोगों पर अंतरराष्ट्रीय समुदाय का ध्यान गया, रेडियोधर्मिता का प्रयोग विभिन्न शांतिपूर्ण उद्देश्यों विशेषकर परमाणु की ताकत का उपयोग करने के लिए ऊर्जा उत्पादन में करने के वायदे किए गए - *ऐसा रास्ता तलाशने के लिए, जिससे मनुष्य के चमत्कारिक आविष्कार उसकी मृत्यु के कारण नहीं बनें, बल्कि उसके जीवन के प्रति समर्पित हों।* इसीलिए संयुक्त राष्ट्र के घोषणापत्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (आईएईए) की स्थापना की गई और भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के जनक डॉ. होमी भाभा की अध्यक्षता वाले एक सम्मेलन में इसकी घोषणा की गई। आईएईए के उद्देश्य वास्तव में सराहनीय थे, जिनका लक्ष्य संपूर्ण मानव जाति के लिए परमाणुओं का शांतिपूर्ण प्रयोग करना एवं परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकना था।

सुविख्यात वैज्ञानिक, प्रशासक एवं महान द्रष्टा डॉ. होमी जहांगीर भाभा के नेतृत्व में भारतीय परमाणु आयोग की स्थापना के साथ 1954 में भारतीय परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम की यात्रा आरंभ हुई। विभिन्न उद्देश्यों के लिए परमाणु शक्ति के उपयोग के क्षेत्र में बहुत कुछ प्राप्त किया जा चुका है। आगे हम इनमें से कुछ उपयोगों पर चर्चा करेंगे ताकि खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा एवं राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने वाले एवं

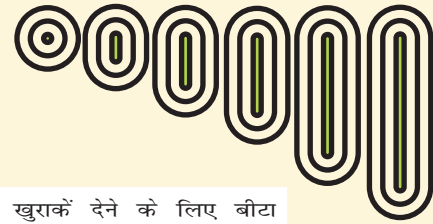
विभिन्न प्रकार के चिकित्सकीय, सामाजिक तथा औद्योगिक उपयोग में आने वाले हमारे कार्यक्रमों की झलक प्राप्त हो सके। इस क्षेत्र में जो कुछ संभव है और जो कुछ हमने प्राप्त कर लिया है, वह सब कुछ इसमें शामिल नहीं होगा। किंतु इससे देश के परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के हमारे ध्येय, देश के नागरिकों को बेहतर जीवन प्रदान करने के लिए परमाणु एवं विकिरण प्रौद्योगिकी का उपयोग, का पता जरूर चल जाएगा।

विकिरण: दोधारी तलवार

रेडियोधर्मिता अर्थात् परमाणु से विकिरण के उत्सर्जन का पता नाभिकीय विखंडन का युग आरंभ होने से बहुत पहले चल चुका था और कैंसर के उपचार में इन विकिरणों का नियंत्रित प्रयोग दुनिया के कुछ हिस्सों में आरंभ भी हो चुका था। कहा जा सकता है कि 20वीं शताब्दी के आरंभ में दुनिया को यही पता था कि विकिरण एवं रेडियोधर्मिता का प्रयोग कैंसर के उपचार में तथा पीड़ा कम करने में किया जाता है। बाद के दशकों में नाभिकीय विखंडन ने बिजली बनाने के लिए परमाणु ऊर्जा के उपयोग को संभव

20वीं शताब्दी के आरंभ में दुनिया को यही पता था कि विकिरण एवं रेडियोधर्मिता का प्रयोग कैंसर के उपचार में तथा पीड़ा कम करने में किया जाता है। बाद के दशकों में नाभिकीय विखंडन ने बिजली बनाने के लिए परमाणु ऊर्जा के उपयोग को संभव बना दिया। किंतु परमाणु के शांतिपूर्ण प्रयोगों से कृषि, चिकित्सा तथा औद्योगिक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर दूसरे प्रयोग होने लगे हैं।

बना दिया। किंतु परमाणु के शांतिपूर्ण प्रयोगों से कृषि, चिकित्सा तथा औद्योगिक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर दूसरे प्रयोग होने लगे हैं। ये सभी प्रयोग कृत्रिम रेडियोआइसोटोप की उत्पत्ति पर निर्भर करते हैं, जिनका उपयोग इसीलिए होता है क्योंकि उनमें से रेडियोधर्मिता प्रस्फुटित हो रही होती है। ये कृत्रिम रेडियोआइसोटोप रिएक्टरों अथवा कणों की गति बढ़ाने वाले यंत्र में स्थिर आइसोटोप (समस्थानिक) की बौछार द्वारा बनाए जाते हैं, जिससे नाभिकीय अभिक्रिया



होती है और उसके बाद रूपांतरण होकर रेडियोधर्मी आइसोटोप बन जाते हैं। 200 से अधिक आइसोटोप का प्रयोग विभिन्न कार्यों में नियमित रूप से किया जाता है, जिनका वर्णन नीचे के अनुच्छेदों में है।

उपचार के लिए स्वास्थ्य सेवा

स्वास्थ्य सेवा में रेडियोआइसोटोप का प्रयोग परमाणु ऊर्जा के सबसे अहम शांतिपूर्ण प्रयोगों में शुमार हो गया है। वर्तमान संदर्भ में सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार

परमाणु चिकित्सा से रोग के आरंभिक चरणों में भी अंगों के कामकाज में असामान्यता पहचानने में मदद मिलती है। कैंसर, तंत्रिका तंत्र के विकारों (जैसे अल्जाइमर और पार्किंसंस रोग) तथा हृदय रोगों की पहचान उनकी आरंभिक अवस्था में ही हो जाती है, जिससे उपचार भी जल्द आरंभ हो जाता है

भारत में प्रतिवर्ष रोगियों की 6 लाख से अधिक जांच (प्रतिजन अर्थात् एंटीजन की पहचान समेत) की जाती है। इसमें देश भर के 500 से अधिक केंद्र शामिल हैं, जिन्हें रेडियो औषधि के प्रयोग से लाभ मिल रहा है। विकिरण चिकित्सा की बात की जाए तो भारत के 62 शहरों में इस समय 270 से अधिक रेडियोन्यूक्लिक चिकित्सा इकाइयां काम कर रही हैं। इन तकनीकों का लाभ हर किसी को पहुंचाने के उद्देश्य के साथ आम आदमी को लाभ पहुंचाने के लिए इस तकनीक का दायरा बढ़ाने के इरादे से बार्क परमाणु ऊर्जा विभाग के अन्य घटकों के साथ करीब से काम कर रहा है।

परमाणु चिकित्सा पद्धति: निदान

परमाणु चिकित्सा पद्धति, चिकित्सा की विशेष शाखा है, जो विभिन्न प्रकार के रोगों और समस्याओं के सुरक्षित एवं पीड़ारहित निदान एवं उपचार के लिए रेडियोधर्मी पदार्थों के अवशेषों (रेडियोफार्मास्युटिकल्स) का प्रयोग करती है। रेडियोफार्मास्युटिकल्स को इंजेक्शनो से लिया जा सकता है, सूंघकर लिया जा सकता है, खाया जा सकता है और कुछ रोगों के स्थान पर पहुंचाया जाता है। इस तरह गामा सिनेमेटोग्राफी का प्रयोग

कर उस स्थान की छवि प्राप्त कर ली जाती है अथवा रोग के स्थान पर कोशिकाओं को मारने के लिए विकिरण की उतनी ही मात्रा दी जाती है, जो आसपास के सामान्य ऊतकों पर कोई प्रभाव नहीं डाले। परमाणु चिकित्सा से रोग के आरंभिक चरणों में भी अंगों के कामकाज में असामान्यता पहचानने में मदद मिलती है। कैंसर, तंत्रिका तंत्र के विकारों (जैसे अल्जाइमर और पार्किंसंस रोग) तथा हृदय रोगों की पहचान उनकी आरंभिक अवस्था में ही हो जाती है, जिससे उपचार भी जल्द आरंभ हो जाता है और रोग एवं मौतों में कमी आई है।

इमेजिंग अर्थात् छवि प्राप्त करने के लिए सबसे सामान्य आइसोटोप टेक्नेटियम 99एम आयोडीन 123 (आई), टाइटेनियम 201 (टीआई), इंडियम 111 (आई) और फ्लोरिन 18 (एफ) हैं। टेक्नेटियम-99 एम नैदानिक परमाणु चिकित्सा में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाला रेडियोआइसोटोप है और माना जाता है कि दुनिया भर में हर वर्ष होने वाले लगभग 2.5 करोड़ नैदानिक परमाणु चिकित्सा अध्ययनों में से 80 प्रतिशत से अधिक इसी आइसोटोप की सहायता से किए जाते हैं। बार्क के विकिरण चिकित्सा केंद्र (आरएमसी) में स्थापित पोजिट्रॉन इमिशन टोमोग्राफी (पीईटी) वाली मेडिकल साइक्लोट्रॉन स्कैनिंग प्रणाली नियमित तौर पर फ्लोरिन 18 (एफ) लेबल वाले एफडीजी कण उत्पन्न करती है, जिनका प्रयोग कैंसर तथा हृदय रोगों की जांच में किया जाता है। वर्ष 2015 में फ्लोरिन 18 (एफ) फ्लूरो डी ग्लूकोज (एफडीजी), फ्लोरिन 18 (एफ) फ्लूरो थाईमिडाइन (एफएलटी), फ्लोरिन 18 (एफ) सोडियम फ्लोराइड (एनएफ) और फ्लोरिन 18 (एफ) फ्लूरोमिजोनिडाजोल (एफएमआईएसओ) जैसे पीईटी रेडियोफार्मास्युटिकल की 133 खेप मुंबई और आसपास के विभिन्न अस्पतालों में भेजी गई थीं, जिनमें लगभग 240 क्यूरी फ्लोरिन 18 रेडियोधर्मिता थी।

लक्षित रेडियोन्यूक्लाइड चिकित्सा पद्धति

चिकित्सा संबंधी रेडियोफार्मास्युटिकल परमाणु चिकित्सा के क्षेत्र में बेहद तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में शुमार है, जिसमें रोगग्रस्त स्थानों पर आयनीकरण करने वाले विकिरण

की चिकित्सा खुराकें देने के लिए बीटा उत्सर्जन करने वाले रेडियोन्यूक्लाइड का प्रयोग होता है, जो लक्ष्य विशेष के लिए तैयार किए जाते हैं। बार्क द्वारा तैयार किए गए आयोडीन 131 (आई) लुटेटियम 177 (एल्यू), फासफोरस 32 (पी), सेमेरियम 153 (एसएम) और रेनियम 188 (आरई) जैसे रेडियोन्यूक्लाइड पर आधारित ढेरों उपचार संबंधी रेडियोफार्मास्युटिकल विभिन्न परमाणु चिकित्सा केंद्रों को उपलब्ध कराए गए हैं। तंत्रिका-अंतःस्रावी कैंसर के उपचार में लुटेटियम 177 (एल्यू) डोटा टेटका प्रयोग होता है, जबकि हड्डियों में दर्द कम करने के लिए सेमेरियम 153 (एसएम) मिथलिन फास्फोनिक एसिड (ईडीटीएमपी) और लुटेटियम 177 (एल्यू) मिथलिन फास्फोनिक एसिड (ईडीटीएमपी) का इस्तेमाल किया जाता है। आरएमसी के थायरॉयड क्लिनिक में थायरॉयड कैंसर के उपचार समेत थायरॉयड से जुड़ी सभी समस्याओं पर काम किया जा रहा है और आयोडीन 131 (आई) से उनका उपचार किया जा रहा है। 2015 में बार्क द्वारा विकसित रेडियोफार्मास्युटिकल का प्रयोग कर 40,000 से अधिक रोगियों का उपचार किया गया है।

विकिरण चिकित्सा पद्धति

विकिरण चिकित्सा पद्धति (थेरेपी) में विशेष मशीनों अथवा रेडियोधर्मी पदार्थों के द्वारा उच्च ऊर्जा वाले विकिरण का प्रयोग किया जाता है। विकिरण शरीर के बाहर मशीन से दिया जा सकता है, जिसे बाह्य

आंतरिक रेडियोन्यूक्लाइड चिकित्सा में सीलबंद रेडियोधर्मी स्रोत को अस्थायी अथवा स्थायी रूप से लक्षित क्षेत्र पर या उसके निकट रखकर रोग का उपचार किया जाता है। ब्रैकीथेरेपी के जरिये टेलीथेरेपी की अपेक्षा बड़ी मात्रा में विकिरण देकर कैंसर का उपचार करना संभव है।

विकिरण विकिरण पद्धति (एक्सटर्नल बीम रेडिएशन थेरेपी) अथवा टेलीथेरेपी कहा जाता है। यह विकिरण शरीर के भीतर कैंसर कोशिकाओं के निकट रेडियोधर्मी पदार्थ से भी आ सकता है, जिसे आंतरिक विकिरण

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



पद्धति अथवा ब्रैकीथेरेपी कहा जाता है। विकिरण चिकित्सा का लक्ष्य घातक कोशिकाओं को नष्ट करने के लिए गांठों अथवा शरीर के भागों पर निश्चित मात्रा में विकिरण डालना होता है।

एक्सटर्नल बीम रेडिएशन थेरेपी

एक्सटर्नल बीम रेडिएशन थेरेपी में आम तौर पर मशीन (कोबाल्ट 60 टेलीथेरेपी इकाई अथवा लीनियर एक्सीलेरेटर) का इस्तेमाल किया जाता है, जो उच्च ऊर्जा वाली विकिरण की किरणों को उस क्षेत्र पर डालती है, जिसका उपचार किया जाना है। इस पद्धति का प्रयोग वक्ष कैंसर, अंतर्दियों के कैंसर, सिर और गर्दन के कैंसर तथा फेफड़ों के कैंसर का उपचार करने में हो

बार्क पिछले कई दशकों से पौधों के प्रजनन में उत्परिवर्तन लाने के लिए आयनीकरण वाले विकिरण का प्रयोग कर रहा है और देश में व्यावसायिक खेती के लिए भारतीय किसानों को विभिन्न फसलों की 42 किस्में दी जा चुकी हैं।

सकता है। बार्क ने टेलीथेरेपी की एक मशीन तैयार की है, जिसे भाभाट्रॉन का नाम दिया गया है। देश में लगभग 50 कैंसर अस्पतालों में भाभाट्रॉन लगी हुई हैं। यह देसी मशीन आयातित टेलीकोबाल्ट मशीनों की तुलना में सस्ती और बेहतर है। बार्क द्वारा विकसित किया गया सिम्युलेटर 'इमेजिन' उपचार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में और उपचार आरंभ करने से पहले उसकी योजना सुनिश्चित करने में प्रयोग होता है।

ब्रैकीथेरेपी

आंतरिक रेडियोन्यूक्लाइड चिकित्सा में सीलबंद रेडियोधर्मी स्रोत को अस्थायी अथवा स्थायी रूप से लक्षित क्षेत्र पर या उसके निकट रखकर रोग का उपचार किया जाता है। ब्रैकीथेरेपी के जरिये टेलीथेरेपी की अपेक्षा बड़ी मात्रा में विकिरण देकर कैंसर का उपचार करना संभव है।

कुछ मामलों में इंफ्लॉट को कुछ मिनट से लेकर कुछ दिनों तक निश्चित अवधि के लिए शरीर के भीतर रखा जाता है। अस्थायी इंफ्लॉट के लिए इरीडियम-192 समस्थानिक

पसंद किया जाता है। स्थायी इंफ्लॉट के लिए रेडियोधर्मी बीज अथवा इंफ्लॉट गांठ अथवा उपचार योग्य क्षेत्र में स्थायी तौर पर रख दिए जाते हैं। ऐसे रेडियोधर्मी स्रोतों से निकलने वाले विकिरण की खुराक हफ्ते या महीने बीतते-बीतते कम होती जाती है और अंत में लगभग शून्य हो जाती है। इसके बाद इंफ्लॉट निष्क्रिय हो जाते हैं और उपचार वाले स्थान पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। स्थायी ब्रैकीथेरेपी का प्रयोग आम तौर पर प्रोस्टेट कैंसर के उपचार में होता है।

बार्क द्वारा विकसित टाइटेनियम के आवरण वाले बारिक आयोडीन-125 कैप्सुल ने नेत्र कैंसर के उपचार में नई दिशा प्रदान की है। फिलहाल तीन अस्पताल 'बार्क आई-125 ऑक्ज्यू-प्रोस्टा सीड' का इस्तेमाल कर रहे हैं। अभी तक 120 से अधिक रोगियों का उपचार हो चुका है। 'बार्क आई-125 ऑक्ज्यू-प्रोस्टा सीड' को प्रोस्टेट कैंसर के उपचार के लिए स्थायी इंफ्लॉट के रूप में अस्पताल में भी रखा जाता है। बीटा उत्सर्जन करने वाले रेडियोन्यूक्लाइड का प्रयोग करने वाली ब्रैकीथेरेपी महत्वपूर्ण अंगों के निकट त्वचा की ऊपरी परत में कैंसर के उपचार का भी अच्छा विकल्प है। बार्क ने फासफोरस 32 स्रोत तैयार करने की एक पद्धति विकसित की है। वास्तविक प्रयोग से पहले का मूल्यांकन सफल होने के उपरांत फासफोरस 32 स्रोतों को नई दिल्ली स्थित एम्स में प्रयोग के लिए भेजा गया है।

खाद्य सुरक्षा: खाद्य पदार्थों में वृद्धि

पिछले कुछ वर्षों में भारत में शानदार आर्थिक वृद्धि हुई है, किंतु हमारे देश की बढ़ती जनसंख्या के कारण हमारे कृषि संसाधनों पर मांग का बोझ भी बढ़ गया है। देश की अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी घटने से समस्या विकराल हो गई है और खाद्य सुरक्षा की चिंता उत्पन्न हो रही है। इस स्थिति में खाद्य, पोषण, पर्यावरण तथा आजीविका की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी की सहायता से प्राकृतिक संसाधनों के सतत प्रबंधन की आवश्यकता है ताकि देश का समग्र विकास हो सके। आयनीकरण वाले विकिरण पर आधारित प्रौद्योगिकियों के प्रयोग से कृषि उत्पादकता की समस्या के सुरक्षित, स्वच्छ एवं आर्थिक रूप से व्यावहारिक समाधान मिल सकते हैं।

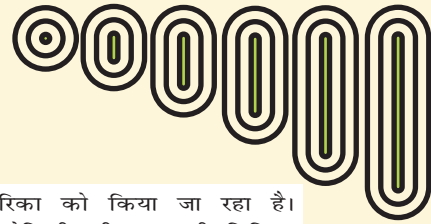
परमाणु कृषि

बार्क पिछले कई दशकों से पौधों के प्रजनन में उत्परिवर्तन लाने के लिए आयनीकरण वाले विकिरण का प्रयोग कर रहा है और देश में व्यावसायिक खेती के लिए भारतीय किसानों को विभिन्न फसलों की 42 किस्में दी जा चुकी हैं। इनमें नए किस्म की मूंगफली, साबुत मूंग, काले चने, अरहर, सोयाबीन, लोबिया, सरसों, सूरजमुखी और चावल शामिल हैं, जो जैविक तथा अजैविक समस्याओं का प्रतिरोध तो कर ही सकती हैं, उनमें एक या अधिक बेहतर गुण भी डाले गए हैं जैसे अधिक उपज, शीघ्र उपज, बड़े बीज आदि। चावल और गेहूँ की उत्पादकता तथा बीमारियों से प्रतिरोध की क्षमता बढ़ाने के लिए उनमें भी उत्परिवर्तन किए जा रहे हैं। इनके अतिरिक्त केला, गन्ना, पपीता, अनानास, आलू, हल्दी तथा अदरक की बेहतर किस्में देने के लिए प्रजनन की नई रूपरेखा भी तैयार की गई है, जिसमें बड़ी संख्या में पौध तैयार करने के लिए पादप सामग्री का भंडार कई गुना बढ़ाना शामिल है।

बार्क ने फलों (लीची, आम, चेरी) और सब्जियों (आलू, प्याज), समुद्री भोजन, मसालों (हल्दी, मिर्च) के संरक्षण के लिए विकिरण तकनीक विकसित की हैं और उनमें से कई तकनीकें वाणिज्यिक प्रयोग के लिए उपलब्ध हैं। भारत में अभी खाद्य विकिरण के 15 संयंत्र काम कर रहे हैं। उनमें से एक नासिक में है, जिसका प्रयोग आम, प्याज तथा आलू के विकिरण के लिए होता है।

खाद्य सुरक्षा: उत्पादन व संरक्षण

खाद्य सुरक्षा तथा संरक्षा में कीड़ों की मार एक और बाधा है क्योंकि भारत समेत दुनिया भर में इससे कृषि उत्पादकता का बहुत क्षरण होता है। भारतीय कृषि व्यवस्था की बड़ी त्रासदी यह भी है कि उपजाई हुई लगभग 30 प्रतिशत खाद्य सामग्री कीड़ों के हमले, प्रदूषण तथा फफूंदी लगने के कारण बर्बाद हो जाती है। यह समस्या कटाई के समय भी आती है और कटाई के बाद खाद्य तथा नकदी फसलों के रखरखाव एवं



भंडारण के समय भी आती है। कटाई के बाद नुकसान रुकने से खाद्य उत्पादन एवं मांग के बीच बढ़ती खाई पट सकती है। इसीलिए यदि हमें बढ़ती उपज का फायदा उठाना है और भारतीय अर्थव्यवस्था को ताकत देने के लिए बढ़ती आबादी को खिलाना है तो कृषि उत्पादों का संरक्षण बेहद महत्वपूर्ण हो जाता है।

कीड़ों पर नियंत्रण के सबसे लोकप्रिय तरीकों जैसे कृत्रिम कीटनाशकों के प्रयोग

समय बीतने के साथ यह लगातार स्पष्ट होता जा रहा है कि परमाणु ऊर्जा ही ग्लोबल वार्मिंग की अप्रिय लेकिन वास्तविक समस्या का समाधान प्रदान करती है क्योंकि अक्षय ऊर्जा जैसे सौर, जल एवं पवन ऊर्जा के स्रोतों समेत सभी ऊर्जा स्रोतों में सबसे कम कार्बन उत्पन्न करने वाली प्रौद्योगिकी यही है।

और दूसरी विधियों से कई समस्याएं खड़ी हो जाती हैं जैसे स्वास्थ्य को नुकसान, पारितंत्र बिगड़ना और कीड़ों में कृत्रिम कीटनाशकों के विरुद्ध प्रतिरोध उत्पन्न हो जाना। विकिरण से रासायनिक पदार्थों तथा सूक्ष्मजीवियों को नष्ट करने की प्रक्रिया का व्यावहारिक, प्रभावी तथा पर्यावरण के अनुकूल विकल्प मिल सकता है क्योंकि रसायन के प्रयोग से मनुष्य के स्वास्थ्य एवं पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव होता है। खाद्य सुरक्षा एवं संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विकिरण वाले खाद्य को अपनाने तथा देश की आपूर्ति शृंखलाओं में शामिल करने की एवं इस प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रयोग को बढ़ावा दिए जाने की त्वरित आवश्यकता है।

इस तकनीक में खाद्य तथा कृषि जिंसों को विकिरण ऊर्जा की नियंत्रित खुराक दी जाती है ताकि भंडारित उत्पादों से कीड़े समाप्त करने, अंतरराष्ट्रीय व्यापार बाधाएं दूर करने के लिए अलग किए गए कीड़े समाप्त करने, फलों तथा सब्जियों में पकने और बासी होने की क्रिया को धीमे करने, कंदों, गांठों और तनों में अंकुरण रोकने, खाद्य बर्बाद करने वाले सूक्ष्मजीवियों को समाप्त करने एवं खाने में जनस्वास्थ्य के महत्व वाले परजीवी एवं प्रतिजन समाप्त करने जैसे वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकें।

कच्चे तथा रेफ्रिजरेटर में रखे गए खाद्य में जीवाणु प्रतिजन समाप्त करने का यह एकमात्र तरीका है। इसे रेफ्रिजरेटर में रखी गई पहले से डिब्बाबंद जिंसों में भी इस्तेमाल किया जा सकता है।

यह भी स्पष्ट होना चाहिए कि विकिरण ऊर्जा के सीधे प्रयोग से इस प्रकार के प्रभाव दिखाता है और उत्पाद में रेडियोधर्मिता के लक्षण बिल्कुल भी नहीं आते। 'खाद्य सुरक्षा एवं संरक्षा सुनिश्चित करने' एवं 'अंतरराष्ट्रीय व्यापार में तकनीकी बाधाएं दूर करने' के लिए भोजन के विकिरण प्रसंस्करण को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगठनों जैसे अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी, खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ), विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ), विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ), कोडेक्स एलिमेंटेरियस कमीशन, अमेरिकी कृषि विभाग (यूएसडीए), फूड स्टैंडर्ड्स ऑस्ट्रेलिया न्यूजीलैंड तथा भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसआई) ने मान्यता दी है। भारत में हाल ही में एफएसएसआई द्वारा विकिरित खाद्य पदार्थों को श्रेणीवार मंजूरी दिए जाने से खाद्य विकिरण के नियम अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुरूप हो गए हैं।

मसालों, खाद्यान्नों, खाद्यान्न से बनने वाले उत्पादों, फलों, सब्जियों और मांस समेत 60 से अधिक प्रकार की खाद्य सामग्री का दुनिया भर में विकिरण से उपचार किया जा रहा है। इसके क्षेत्र में बार्क ने फलों (लीची, आम, चेरी) और सब्जियों (आलू, प्याज), समुद्री भोजन, मसालों (हल्दी, मिर्च) के संरक्षण के लिए विकिरण तकनीक विकसित की हैं और उनमें से कई तकनीकें वाणिज्यिक प्रयोग के लिए उपलब्ध हैं। भारत में अभी खाद्य विकिरण के 15 संयंत्र काम कर रहे हैं। उनमें से एक नासिक में है, जिसका प्रयोग आम, प्याज तथा आलू के विकिरण के लिए होता है ताकि उनका संरक्षण हो, वे जल्दी खराब नहीं हों तथा अंतरराष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा मिले। भारत में विकिरण उपचार वाले खाद्य की मात्रा लगातार बढ़ती जा रही है। नवी मुंबई, वाशी स्थित विकिरण प्रसंस्करण संयंत्र ने 2015 तक लगभग 34,000 टन उत्पादों का विकिरण किया था। विकिरण वाले आमों का निर्यात 2007

से ही अमेरिका को किया जा रहा है। विकिरण प्रौद्योगिकी की जानकारी विभिन्न कृषि विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं को भी दी जा रही है।

कुल मिलाकर यह ध्यान रखना आवश्यक है कि हरित क्रांति से पिछले कुछ दशकों में भोजन की उपलब्धता निश्चित रूप से कई गुना बढ़ गई है, लेकिन आने वाले दशकों में मांग की चुनौती से निपटने के लिए इन तकनीकों में और सुधार की आवश्यकता है ताकि फसलों की उपज एवं गुणवत्ता बढ़ाई जा सके। विकिरण उपचार पर आधारित रणनीति में कृषि क्षेत्र के भीतर आमूलचूल परिवर्तन लाने और हमारे देश को समृद्धि की ओर ले जाने की क्षमता है।

ग्लोबल वार्मिंग: गंभीर संकट

पिछले कुछ वर्षों में जलवायु परिवर्तन तथा ग्लोबल वार्मिंग के सभी सूचक यही बता रहे हैं कि पृथ्वी गंभीर संकट के कगार पर खड़ी डगमगा रही है, जिसका कारण ग्लोबल वार्मिंग और उसके कारण दुनिया भर में हो रहे जलवायु परिवर्तन हैं। पिछले तीन दशक में ही वातावरण में कार्बन डायऑक्साइड 400 पीपीएम के खतरनाक स्तर तक पहुंच चुकी है और तापमान में 1 डिग्री सेल्सियस से अधिक की वृद्धि हो

कार्बन उत्सर्जन कम करने की अंतरराष्ट्रीय बाध्यताओं वाली तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था होने के नाते आज भारत को परमाणु ऊर्जा के जरिये बिजली उत्पादन तेजी से बढ़ाने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में हम तेजी से विकास करने जा रहे हैं क्योंकि हमारे पास 21 कार्यरत संयंत्र हैं और 12 संयंत्रों की योजना है।

चुकी है। इस वृद्धि ने जलवायु पर गंभीर प्रभाव डाला है और समुद्री जल के स्तर में वृद्धि तथा बार-बार गर्मी बढ़ना, अप्रत्याशित बारिश और तूफान जैसे दुष्परिणाम हम देख ही रहे हैं। इसका सबसे बड़ा कारण मानव गतिविधियां ही हैं, जो पिछले कुछ दशकों में बहुत तेजी से बढ़ी हैं। इनमें जीवाश्म ईंधन- लकड़ी, कोयला, प्राकृतिक गैस और तेल का तेजी से बढ़ता इस्तेमाल शामिल है,

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



जिससे वातावरण में कार्बन डाई ऑक्साइड बढ़ती जा रही है।

परमाणु ऊर्जा के लक्ष्य: आगे की राह

समय बीतने के साथ यह लगातार स्पष्ट होता जा रहा है कि परमाणु ऊर्जा ही ग्लोबल वार्मिंग की अप्रिय लेकिन वास्तविक समस्या का समाधान प्रदान करती है क्योंकि अक्षय ऊर्जा जैसे सौर, जल एवं पवन ऊर्जा के स्रोतों समेत सभी ऊर्जा स्रोतों में सबसे कम कार्बन उत्पन्न करने वाली प्रौद्योगिकी यही है।

कार्बन उत्सर्जन कम करने की अंतरराष्ट्रीय बाध्यताओं वाली तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था होने के नाते आज भारत को परमाणु ऊर्जा के जरिये बिजली उत्पादन तेजी से बढ़ाने की आवश्यकता है। इस क्षेत्र में हम तेजी से विकास करने जा रहे हैं क्योंकि हमारे पास 21 कार्यरत संयंत्र हैं और 12 संयंत्रों की योजना है। परमाणु ऊर्जा क्षेत्र अगले कुछ वर्षों में ऊर्जा सुरक्षा तथा जलवायु राहत के मामले में बहुत योगदान करता दिखता है।

अपशिष्ट प्रबंधन: अपशिष्ट से धन

भारत में रोजाना भारी मात्रा में कचरा पैदा होता है। इसमें संक्रामक सूक्ष्मजीवी होते हैं और इसका निस्तारण ठीक तरीके से नहीं होने पर बीमारियां फैल सकती हैं, जिसके कारण यह जनस्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इसके साथ ही इसमें आवश्यक सूक्ष्म एवं वृहद पोषक, विशेषकर जैविक कार्बन भी होते हैं, जो मृदा एवं फसल उत्पादन के लिए उपयोगी होते हैं। जनस्वास्थ्य एवं पर्यावरण की रक्षा के लिए और कृषि क्षेत्र में उपयोग हेतु वांछित मात्रा में जैविक खाद तैयार करने के लिए कचरे को स्वच्छ करने में विकिरण प्रौद्योगिकी का प्रयोग होता आ रहा है। अहमदाबाद नगरपालिका परिषद ने पूरी तरह स्वचालित तरीके से रोजाना 100 टन कचरे की सफाई करने और जैविक खाद बनाने का देश का पहला संयंत्र खोला है। इस प्रकार के विकिरण संयंत्रों का प्रयोग पूरी तरह स्वचालित तरीके से पूरे शहर का कचरा एक ही स्थान पर परिशोधित करने के लिए किया जा सकता है। इस

प्रौद्योगिकी में स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्यों को पूरा करने में योगदान करने की प्रबल संभावना है।

हाइड्रोजेल: घाव भरना

हाइड्रोजेल की एक पतली पारदर्शी परत होती है, जिसे जले हुए स्थान पर तथा घाव पर पट्टी करने के मामले में बहुत काम आती है। इसे पीवीए जैसे जलस्नेही (हाइड्रोफिलिक) बहुलकों के अणुओं को रासायनिक तरीके से अथवा गामा/इलेक्ट्रॉन

जनस्वास्थ्य एवं पर्यावरण की रक्षा के लिए और कृषि क्षेत्र में उपयोग हेतु वांछित मात्रा में जैविक खाद तैयार करने के लिए कचरे को स्वच्छ करने में विकिरण प्रौद्योगिकी का प्रयोग होता आ रहा है। अहमदाबाद नगरपालिका परिषद ने पूरी तरह स्वचालित तरीके से रोजाना 100 टन कचरे की सफाई करने और जैविक खाद बनाने का देश का पहला संयंत्र खोला है। इस प्रकार के विकिरण संयंत्रों का प्रयोग पूरी तरह स्वचालित तरीके से पूरे शहर का कचरा एक ही स्थान पर परिशोधित करने के लिए किया जा सकता है। इस प्रौद्योगिकी में स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्यों को पूरा करने में योगदान करने की प्रबल संभावना है।

किरणों के विकिरण से क्रॉस लिंकिंग मोलिक्यूलस तैयार किया जाता है। जेल जैसी संरचना का त्रिविमीय नेटवर्क तैयार हो जाता है, जिसमें बड़ी मात्रा में जल रुक जाता है। गामा के विकिरण से एक ही बार में जेल तैयार भी हो जाता है और रोगाणुनाश भी हो जाता है।

हाइड्रोजेल जीवाणुहीन परत के जरिये घाव तक ऑक्सीजन की आपूर्ति कम करता है, जिससे चोट को नमी और टंडक मिलती है। यह बगैर घाव वाली सतह पर मजबूती लेकिन नरमी के साथ चिपक जाता है, लेकिन घाव की सतह पर नहीं चिपकता, जिससे दर्द नहीं होता। पारदर्शी होने के कारण आसानी से दिख जाता है कि घाव कितना भर रहा है। इसके निर्माण के लिए जरूरी कच्चा माल बहुत सस्ता होता

है और आसपास मिल जाता है। इसकी प्रक्रिया बार्क के वैज्ञानिकों ने विकसित की थी और प्रौद्योगिकी को व्यावसायिक उत्पादन के लिए सौंप दिया गया। यह बेहद महत्वपूर्ण वैकल्पिक उत्पाद है, जो भारतीय बाजारों में कम कीमत में उपलब्ध है।

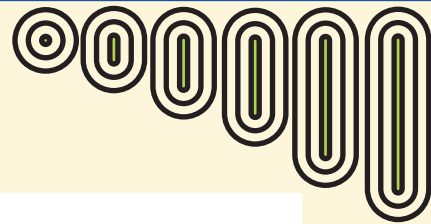
जल: जीवन का अमृत

घरेलू, कृषि एवं औद्योगिक क्षेत्रों की बढ़ती मांग के कारण पानी की कमी होती जा रही है। समस्थानिक जलविज्ञान की तकनीकों विभिन्न स्थानों पर नए एवं नवीकरणीय भूमिगत जल स्रोतों का पता लगाने और उनकी मात्रा नापने में सटीक सहयोग करती हैं। ये भूजल के उद्भव, अवधि और वितरण के बारे में तो बताती ही हैं, भूजल तथा सतह के बीच के संपर्क तथा जलीय परतों की पूर्ति की प्रणाली की जानकारी भी देती हैं। बांधों तथा सिंचाई प्रणालियों से जल रिसाव जानने के लिए, झीलों एवं जलाशयों की गतिशीलता समझने के लिए, बहाव की दर, नदियों में जल तथा तलछट जमने की दर जानने के लिए सतही जल संसाधनों की निगरानी में भी इसका प्रयोग होता है। प्राप्त जानकारी को संसाधन नियोजन एवं जल संसाधनों के सतत प्रबंधन में प्रयोग किया जाता है।

हमारे वैज्ञानिकों ने पानी में प्रदूषण का पता लगाने के लिए सस्ते और प्रयोग में आसान किट तैयार किए हैं। इन किट का प्रयोग भूजल में फ्लोरीन और गंगाजल में क्रोमियम जैसे तत्वों का पता लगाने के लिए किया जा रहा है। बार्क के प्रौद्योगिकीविदों ने जीवाणु की मिलावट को समाप्त करने के लिए तथा खारे पानी और समुद्री जल से नमक दूर करने के लिए छानने की झिल्ली भी तैयार की है। जलशोधन की ये सभी तकनीकों भारतीय उद्योगों को सौंप दी गई हैं तथा सस्ते समाधानों के जरिये इनसे समाज के बड़े वर्ग को लाभ मिल रहा है।

औद्योगिक उपयोग: विनिर्माण में सहायता

विनिर्माण की अच्छी पद्धतियां क्रियान्वित करने के माध्यम के रूप में कई प्रकार के साधनों का प्रयोग औद्योगिक एवं विनिर्माण क्षेत्र में किया जा रहा है। ऐसे महत्वपूर्ण उपयोगों में से कुछ का विवरण इस प्रकार है।



विकिरण द्वारा कीटाणुनाश

चिकित्सा उपकरणों यथा सिरिंज, रुई, जले घाव पर पट्टी, सर्जिकल दस्तानों, दिल के वाल्व, पट्टियों, प्लास्टिक एवं रबर की चादरों तथा सर्जरी में काम आने वाले उपकरणों, पाउडर, मलहम एवं घोल और त्वचा प्रत्यारोपण में प्रयोग होने वाली हड्डियों, तंत्रिकाओं और त्वचा जैसे जैविक पदार्थ एवं उत्पाद।

रेडियोग्राफी

गामा किरणें उत्सर्जित करने वाले रेडियोआइसोटोप को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना एक्स-रे मशीनों की तुलना में आसान है और उनसे अधिक ऊर्जा वाला विकिरण उत्पन्न हो सकता है। इसीलिए नई गैस और तेल पाइपलाइन प्रणालियों में जोड़ जांचने के लिए इनका प्रयोग किया जा सकता है, जिसके लिए रेडियोधर्मी स्रोत को पाइप के भीतर तथा फिल्म को जोड़ के बाहर रखना होता है। अलग-अलग सिद्धांतों पर आधारित रेडियोग्राफी के अन्य प्रकार (न्यूट्रॉन रेडियोग्राफी / ऑटोरेडियोग्राफी) पदार्थों की मोटाई एवं घनत्व मापने के लिए अथवा दूसरे माध्यमों से नहीं दिखने वाले पुर्जे तलाशने के लिए प्रयोग किए जा सकते हैं।

भविष्य की झलक

हमारा उद्देश्य पाठकों को जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में काम आ रही और राष्ट्र का आर्थिक एवं सामाजिक लाभ कर रही परमाणु प्रौद्योगिकी के प्रयोगों की व्यापकता के बारे में बताना है। ये ऐसे लाभ हैं, जो निकट भविष्य में लंबी अवधि तक काम आते रहेंगे क्योंकि वैसा उपयोग और किसी का हो ही नहीं सकता। परमाणु बिजली उत्पादन महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जो दुनिया भर के ऊर्जा उत्पादन में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है। दुर्भाग्य है कि इस मामले में शकालु प्रवृत्ति दिख रही है, जिसके कारण कार्बन का न के बराबर उत्सर्जन करने वाले इस ऊर्जा स्रोत को छोड़कर सौर, जल, पवन एवं भूतापीय ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की तरफ अग्रसर हुआ जा रहा है। वे स्रोत परमाणु ऊर्जा की अपेक्षा कार्बन

परमाणु बिजली उत्पादन ने लगभग सभी पहलुओं जैसे परिचालन एवं सुरक्षा रिकॉर्ड, क्षमता उपयोग, कार्बन उत्सर्जन तथा कचरा उत्पादन की मात्रा पर शानदार प्रदर्शन किया है। प्रसार एवं अपशिष्ट भंडारण से जुड़े मुद्दों को संभाला जा सकता है और नई पीढ़ी के रिक्टरों के आने से ये समस्याएं और भी कम हो जाएंगी।

का अधिक उत्सर्जन करने के कारण ही नहीं बल्कि अपनी अप्रत्याशित प्रकृति और दक्षता की कमी के कारण भी ऐसे कई देशों में बिजली की बुनियादी जरूरत पूरी करने में नाकाम रह सकते हैं, जो देश आक्रामक तरीके से उन्हें बढ़ावा दे रहे हैं। इससे ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन का साया गहराने के बाद भी प्राकृतिक गैस का प्रयोग बढ़ रहा है, जिससे और भी कार्बन उत्सर्जन हो रहा है। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि दुनिया निष्पक्ष तरीके से सोचे और ऊर्जा क्षेत्र में परमाणु ऊर्जा की भूमिका कम करने से बाज आएं। परमाणु बिजली उत्पादन ने लगभग सभी पहलुओं जैसे परिचालन एवं सुरक्षा रिकॉर्ड, क्षमता उपयोग, कार्बन उत्सर्जन तथा कचरा उत्पादन की मात्रा पर शानदार प्रदर्शन किया है। प्रसार एवं अपशिष्ट भंडारण से जुड़े मुद्दों को संभाला जा सकता है और नई पीढ़ी के रिक्टरों के आने से ये समस्याएं और भी कम हो जाएंगी।

संदर्भ

1. मेकिंग ऑफ द एटॉमिक बॉम्ब: रिचर्ड रोड्स, साइमन एंड शुस्टर, 1986
2. द केस ऑफ ऑप्टिमिज्म ऑन क्लाइमेट चेंज: अल गोर, टेड टॉक, 2016
3. अवॉर्टिंग द क्लाइमेट क्राइसिस: अल गोर, टेड टॉक, 2006
4. बायोलांजी एंड मेडिसिन: एक्साइटमेंट ऑफ रिसर्च एंड डिप्लॉयमेंट ऑफ इट्स आउटकम- द ट्वेन डू मीट इन बार्क, कृष्णा बी सैनीज, बार्क न्यूजलेटर, पेज 7, सितंबर-अक्टूबर 2013
5. इंडस्ट्रियल ऐप्लिकेशंस ऑफ रेडियोआइसोटोप्स: आईएनसीएएस बुलेटिन, अंक 16, जून 2001
6. आइसोटोप्स ऐप्लिकेशन इन एग्रीकल्चर: आईएनसीएएस बुलेटिन, अंक 6, संख्या 4, नवंबर 2007
7. रेडिएशन टेक्नोलॉजी फॉर सीवेज स्लज हाइजीनाइजेशन: ललित चाण्णोय, बार्क न्यूजलेटर, पृष्ठ 41, नवंबर-दिसंबर 2012
8. द लिबेरेशन ऑफ द इन्वॉयर्नमेंट: जेसी एच ऑसुबेल, इंटरनेट रिसोर्स
9. एग्रीकल्चर एंड फूड सिक्योरिटी: एसआईआरडी, बार्क पब्लिकेशन, 2013
10. द मैनी यूज ऑफ न्यूक्लियर टेक्नोलॉजी: विश्व परमाणु संघ की वेबसाइट, मार्च 2014 तक अद्यतन
11. हाउ फियर ऑफ न्यूक्लियर पावर इज हर्टिंग द इन्वॉयर्नमेंट: माइकल शेलेनबर्गर, टेड टॉक, सितंबर 2016
12. पीसफुल यूज ऑफ न्यूक्लियर एनर्जी: मीटिंग सोसाइटील नीड्स, डॉ. मोहम्मद अल बरदेई, आईएईए, भारतीय परमाणु सोसायटी का 15वां वार्षिक अधिवेशन (इनसाक-2004), मुंबई, भारत

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

.... महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी विरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

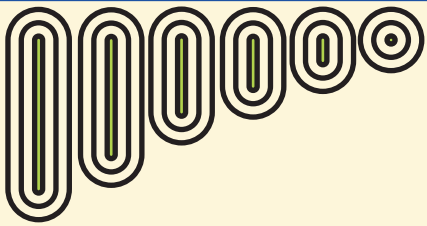
.... डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

.... सुमित्रानंदन पंत

हिंदी राष्ट्रीयता के मूल को सींचती है और उसे दृढ़ करती है।

.... पुरुषोत्तम दास टंडन



श्रीमती नीरजा त्रिपाठी

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-4, मुंबई

मन विहंगम

जीवन के अंतर्द्वन्दों से एक नयी पहचान कर ले,
मन विहंगम छोड़ दे संताप, तू अभियान कर ले।

1. सुख है क्या और दुःख है क्या, जीत क्या और हार क्या,
दोनों ही जीवन के हिस्से दोनों से रिश्ता पास का
छोड़ सब संदेह और यथार्थ का सत्कार कर ले,
मन विहंगम छोड़ दे संताप, तू अभियान कर ले।

2. कल जो हुआ उसे भूल जा, होगा क्या ये सोच मत
वर्तमान के इन पलों को, हर्ष से स्वीकार कर
न ढूँढ रात्रि के रहस्य तू, सूर्य का आह्वान कर ले,
मन विहंगम छोड़ दे संताप, तू अभियान कर ले।

3. जीवन के इस संग्राम का मृत्यु ही अंतिम विराम है
फिर आह क्या प्रलाप क्या सब सक्त की संतान हैं
सीख प्रकृति के नियम और खेल को आसान कर ले,
मन विहंगम छोड़ दे संताप, तू अभियान कर ले।
वक्त से नाराज़गी व्यर्थ है

वक्त के हर अंदाज का कुछ अर्थ है
समझ समय के सबक और, समय पर विश्वास कर ले,
मन विहंगम छोड़ दे संताप, तू अभियान कर ले।

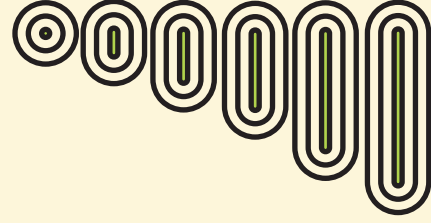
5. हो सके तो ईद के धागे से, कुछ मिठास बुन
बस प्यार का पर्याय हो, कुछ ऐसे पल चुन-चुन के चुन
कर स्वयं का विस्तार और स्वयं से साक्षात्कार कर ले,
मन विहंगम छोड़ दे संताप, तू अभियान कर ले।



नमन स्वप्न-दृष्टा!



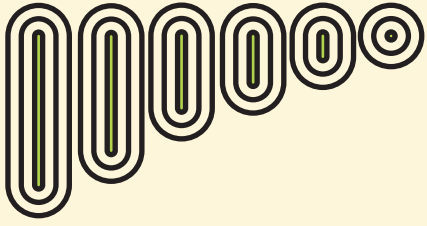
परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के जनक हैं होमी इस महान शिल्पी का हम स्मरण करते हैं इन्हीं के कार्यों, सेवाओं, उपलब्धियों के लिए सादर नमन करते हैं। आपके स्वप्न से भारत आत्मनिर्भर हुआ है अनुसंधान का मार्ग और प्रशस्त हुआ है आपके प्रयासों से नाभिकीय कार्यक्रमों को नया आयाम मिला है विश्व-पटल पर गौरव बढ़ा है। इस संस्थान में अभियांत्रिकी, पर्यावरण व शिक्षण विज्ञान, स्वास्थ्य सुरक्षा- ऐसे विविध विषयों पर नित शोध कार्य होते हैं, अनवरत ये होते रहेंगे जनकल्याण के लिए सदा प्रतिबद्ध रहेंगे परमाणु देश की सेवा में अर्पित हो यही ध्येय रखेंगे। दूरदर्शिता थी, आपकी ही थी अभिलाषा आपकी ही कार्यान्वित हो त्रि-स्तरीय नाभिकीय कार्यक्रम हो संपन्न देश सामरिक दृष्टि से शांति कार्यों में प्रयोग हो परमाणु ऊर्जा स्वावलंबी बनें हम थोरियम की सम्पदा से बहुमूल्य योगदान है आपके हे स्वप्न द्रष्टा! कोटि कोटि नमन आपको।



श्री प्रसाद गोखले

उप-प्रधानाचार्य,

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-5, मुंबई



डॉ. धनुर्धर झा

स्नातकोत्तर अध्यापक

परमाणु ऊर्जा कनिष्ठ महाविद्यालय, मुंबई

सुन्दर कर अपना परिदृश्य

जन-जन में जागृति जागी है, जग-जग में आई है पुकार ।
नयी चेतना चेत उठी है, जाग उठा फिर यह संसार ॥

चिड़ियाँ चहक-चहक कर कहती, बढ़े चलो नित सब परिवार ।
आँधी दूर चली जाएगी, जब आएगी श्रम की धार ॥

चोंच पोछती सबको कहती, शुद्धता पर करो विचार ।
पंख झाड़-झाड़ कहती है, कर को साफ करो हर बार ॥

मुख-छादन से मुख ढक जन-जन, आच्छादित कर के
तन-मन ।
अपने-अपने काम पे निकले, नव-नव चहुँ दिशि हुआ
सृजन ॥

पूनम की चंदा को देखो, तम को दूर भगाती है ।
सूरज की ये चंचल किरणें, सबको राह दिखाती हैं ॥

प्रण लेना है सब मानव को, जग को जागृत करना है ।
शुद्ध हवा और निर्मल जल का, सेवन सबको करना है ॥

प्रकृति पुकार-पुकार के कहती, जागो, देखो जग का दृश्य ।
परिश्रम जल से सींच-सींच कर, सुन्दर कर अपना परिदृश्य ॥



मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी हानि

यदि कोई आपसे पूछे कि आप अपने जीवन में लाभ चाहते हैं या हानि, तो निश्चित रूप से आप कहेंगे कि मैं केवल लाभ चाहता हूँ और यह बिल्कुल सही भी है क्योंकि कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति जीवन में हानि नहीं चाहेगा। किंतु हमें पहले यह तो जानना होगा कि हमारा असली लाभ या हानि किसमें है। यदि हम यह जानने का प्रयास नहीं करते हैं तो निस्संदेह हमें हानि ही स्वीकार करनी होगी। किसी भी वस्तु के मिलने पर हमें कितना बड़ा लाभ होगा या खो जाने पर कितनी बड़ी हानि होगी, यह उस वस्तु के हमारे जीवन में महत्व से निर्धारित होता है। किसी के लिए धन महत्वपूर्ण होता है और किसी के लिए स्वास्थ्य अथवा पारिवारिक संबंध। जो धन को अधिक महत्व देता है, वह एक-एक पैसा बड़े ही ध्यानपूर्वक व्यय करता है। इस बात का पूरा ध्यान रखता है कि एक पैसा भी व्यर्थ न हो। परंतु अज्ञानतावश कोई यह नहीं समझ पाता कि धन, स्वास्थ्य व पारिवारिक संबंधों से भी अधिक मूल्यवान होता है समय। हम जीवन में जो कुछ भी प्राप्त करते हैं वह समय से ही करते हैं। उदाहरणार्थ, हम जिस संबंध को अधिक समय देंगे वह अधिक सुदृढ़ होगा। धन या स्वास्थ्य लाभ के लिए भी हमें समय व्यय करना पड़ेगा। परंतु क्या हम इनमें से कोई भी वस्तु देकर बीते हुए समय का एक अंश भी पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इसका अर्थ हुआ कि समय से हम सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं, परंतु एक बार जो समय निकल गया उसे किसी भी प्रकार से पुनः प्राप्त कर पाना असंभव है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि किसी भी मनुष्य के लिए समय ही सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु है। यदि कोई व्यक्ति अपने समय का एक क्षण भी व्यर्थ गँवाता है तो यह उसके लिए सबसे बड़ी हानि होगी। इसलिए प्रत्येक मनुष्य के लिए, जो जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है, समय का सदुपयोग करना अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

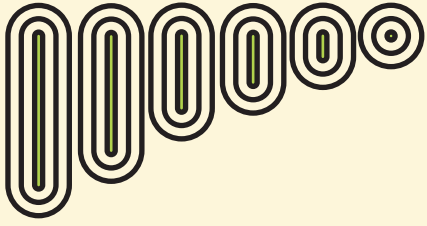


श्री जी. रामचन्द्र गौड

प्रधानाचार्य,

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, मैसूर

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



श्री तरुण कुश

उप-प्रधानाचार्य,
 केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

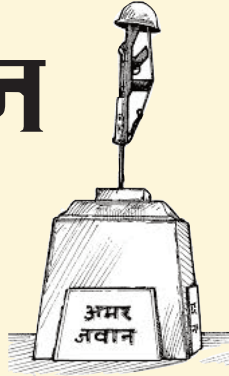
मुस्कुराइए, मुस्कुराइए

मुस्कुराइए, मुस्कुराइए
 जिंदगी को थोड़ा आसान बनाइए, मुस्कुराइए मुस्कुराइए
 मुश्किलों को थोड़ा आसान बनाइए, मुस्कुराइए मुस्कुराइए।
 आसपास के माहौल को हल्का फुल्का बनाइए
 थोड़ा मुस्कुराइए, थोड़ा जरूर मुस्कुराइए।
 अपनी सेहत को बेहतर बनाइए
 मुस्कुराइए बेवजह भी कभी तो मुस्कुराइए।
 चुनौतियों को अपनी ताकत का एहसास कराइए
 मुस्कुराइए जरूर मुस्कुराइए।
 दर्द का मरहम बनाइए मुस्कुराहटों को, मुस्कुराइए मुस्कुराइए।
 किसी अपने के लिए मुस्कुराइए, जरा मुस्कुराइए।
 मुस्कुराइए, मुस्कुराइए।
 आगे देखिए, माफ कीजिए,
 भूल जाइए, अपनाईए और
 मुस्कुराइए, मुस्कुराइए।
 जिंदगी आसान है मुस्कुराइए
 जिंदगी को और आसान बनाइए,
 सीखिए निर्दोष, निष्काम मुस्कुराहट भगवद् स्वरूप बच्चे से
 मुस्कुराइए, मुस्कुराइए।
 स्वयं के लिए, संयम के लिए साधना कीजिए
 सीखिए हर पल मुस्कुराना, मुस्कान को संबल बनाइए।
 पर रोकिए अपने को, संतुलन बनाइए
 किसी के दुःख, गम, मजबूरी, बीमारी का बन जाइए सहारा
 रखिए मुस्कुराहट को सही समय, स्थान, व्यक्ति के लिए।
 मुस्कुराइए, मुस्कुराइए
 अपनी गलतियों पर, अपनी नादानियों पर,
 दोहराईये मत, सीखिए, बदलिए अपने आपको
 मुस्कान के साथ, सहजता के साथ।
 मुस्कुराइए, मुस्कुराइए।



शहीदों को नमन

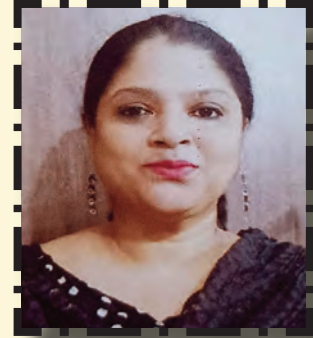
वो मौत हमारी नसीब में थी
पर खुद के सर पर ले लिए।
वो पीड़ा हमारी होनी चाहिए थी
पर खुद का नाम लिख दिए।।



हमारे 'कल' को सुरक्षित रखने
खुद का 'कल' गवाँ दिए।
दुश्मन हम तक ना पहुंचे
इस खातिर मौत को गले लगा लिए।।

कर्ज नहीं चुका सकते
शहीदों का इस बलिदान का।
देश तो हमारा भी है
पर कीमत उन्होंने चुका दिया।।

प्राण त्याग दिए वास्ते-ए-वतन।
उन शहीदों को शत-शत नमन।।



श्रीमती एडवीन डव

प्रेप शिक्षिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, मैसुरु

कुछ तो बचें

समझौतों पर समझ, झुककर सब सह लेना
बुतपरस्ती के बाज़ार में बेज़ान पड़ी, चुप रहना

जो कल थे हमारे गहने, आज बंधन है
सौदागरी हाथों के, अब वो खंजर हैं

कुछ और चल गढ़ते हैं, अलग अपने लिए
जो न सोने के, ना चांदी के सांचों में ढले

अंगारों में पिघले और चोटों में पले
हर औरत के जिस्म पर, बख्तर—सा सजे

घायल है लहू—लुहान, सब अंदर—बाहर
इस जंग में, कोशिश से अपनी कुछ तो बचें
हाँ, कुछ तो बचें।



श्रीमती सुनीता सुवारी

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, जादूगोड़ा



सहनशक्ति की मूरत

बहुत भयावह होती है
मातृत्व के लिए तैयार होती बेटियों की ज़िन्दगी,
भय और भी भयावह हो जाता है तब,
जब
'पीरियड' झेलती लड़की ने
नहीं पढ़ा हो स्कूल का एक भी पीरियड;
और
पत्थरों को पिघलने वाली परिस्थितियाँ उस परी के लिए
तब आ जाती हैं
जब
एक अनपढ़-गँवार बेटी
जीती है
बिना माता के ही
माता बनने के योग्य बनते हुए

रोज बना-बना के बन्नो
घरोंदे बिगाड़ती है
पर वो परी भी
शर्मो हया से,
झिझक से झेलती है
संक्रमण
कभी विषाणुओं का
कभी वासनाओं का;
और
खोल नहीं पाती मुँह
किसी खोखले 'अपने' के सामने;

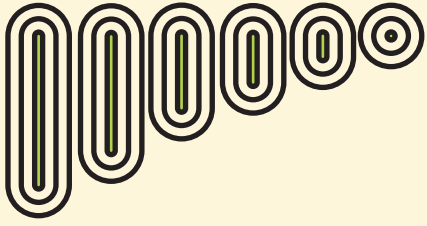
शायद यहीं से शुरू हो जाता है
'सहना'
जो
शादी के बाद भी
बेटियाँ
सहती रहती हैं
बिना कुछ मुँह खोले
यातनाएं
कभी बहू बनकर,



डॉ. दीपक क्रांति

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, अणुपुरम



कभी बच्चे की माँ बनकर,
तो कभी लाचार बूढ़ी माँ बनकर;
और औरत
बन जाती है
बार-बार
सहनशक्ति की मूरत !
—डॉ दीपक क्रांति

2. बेटियाँ

सौभाग्य की सिंगार हैं बेटियाँ,
माँ काली कभी अम्बे—अवतार हैं बेटियाँ !
वंश—परम्परा के वरदान बेटे हैं अगर तो,
माँ—बाप को मिली परम पुरस्कार हैं बेटियाँ!
वीभत्स भ्रूण—हत्या के ठेकेदारों सुन लो,
सृष्टि के शुभारंभ की संचार हैं बेटियाँ !

सहनशीलता में संसार की सुंदरतम कृतियाँ हैं पर,
सास पे बहू का कभी बहू पे सास का अत्याचार हैं बेटियाँ !

कभी सूर्पणखा कभी सीता कभी द्रौपदी बनकर,
रामायण—महाभारत की भी आधार हैं बेटियाँ !

कभी आदि—अंत की अभिन्न अंग हैं,
अत्याचार होने पर अंगार हैं बेटियाँ !

है एक ही शरीर—रचना पर देखते दूसरों की बहू—बेटियाँ,
लोगों के लिए अपने ही घरों में क्यों बेकार हैं बेटियाँ !

मुखिया से मुख्यमंत्री तक अब्बल सदा से हैं,
कौन कहता है आज लाचार हैं बेटियाँ !

नफरत करें तो सर्वनाश भी कर दें,
ममता,क्षमता प्यार —दुलार हैं बेटियाँ !
बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ 'दीपक',
गावों में अभी भी अनपढ़—गँवार हैं बेटियाँ !

3. दहेज और बेटी

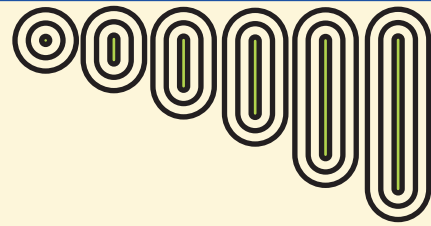
दहेज को लेकर
समाज की दोहरी नीति
और
बेटियों की आप बीती
सुनने के बाद
हर माँ
जनना चाहेगी बस बेटा,
माँ ही घोटना चाहेगी
आगतुक बेटी का गला !

ताकि हो सके 'उद्धार'
उस उधार के 'बोझ' का,
ताकि न मारा जाये
बार—बार
उसको
भविष्य में ताने मार—मार;
इस तरह मजबूर औरत ही
बन जाती है दुश्मन
'भावी' औरत की;
क्योंकि दहेज के बिना
बन जाती है ब्याही बेटी
महज़ एक बैरंग चिट्ठी;
जिसके पास न तो है
अपनेपन का कोई लिफ़ाफ़ा,
न ही है कोई महंगा
टिकट सटा हुआ
उसके 'टिके' रहने के लाइसेंस—सा;

अगर है तो बस पता,
पिता के पास मायके लौट जाने का;
आखिर
कब तक करे नारी
आत्महत्या?



तुमको सलाम



ऐ शहीद जवानों तुमको सलाम
ऐ शहीद जवानों तुमको शत शत नमन,
अपने लहू से सींचा तुम परवाने ने,
यूँही नहीं ए वादियों ज़न्नत कहलाती हैं।
हस्ते हस्ते अपने प्राण न्यौछावर कर दिए,
देश तुम्हारा ताकि ले सके चैन की नींद,
ऐ अमर योद्धा । अमर रहेगी तुम्हारी वीरता की कहानी,
दे रहा सारा देश तुमको सलामी ।
सोते थे खुद कांटों पर,
डट कर खड़े हुए सीना तान दुश्मन के सामने,
न तुम्हारे लिए कोई होली, न कोई दिवाली,
न लगती तुम्हे कोई सर्दी, न कोई धूप,
अपने सुख दुख त्यागकर, सब रिश्ते नाते भूलकर,
देश को रखा तुमने बरकरार और देशवासियों को सुरक्षित,
तुम हो वो चाँद, सूरज और तारा,
जिससे जगमगाए यह देश सारा ।
गर्व है इन देशवासियों को,
भारत माता के तुम जैसे वीर सपूतों पर,
अपने देश के लिए समर्पित बलिदानों पर,
खुद की जान की बाज़ी लगा दिए,
मां की बेड़ियों को तोड़ने के लिए
हँसते-हँसते फाँसी पर झूल गए ।
देश के खातिर अपनी कीमती ज़ान को बलिदान चढ़ा दिए,
कल की पीढ़ी तुम्हारी राह पर चलेगी और गायेगी
तुम्हारी वीरता की गाथाएँ ।



श्रीमती मस्की संगीता

प्राथमिक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, मैसूरु



ये अमन-चैन से कैसे रहते?

यार! परिंदों से पूछो,
ये अमन-चैन से कैसे रहते।
ये कैसे अपनी भूख मिटाते,
कैसे अपनी प्यास बुझाते।
कितना सुखी है इनका जीवन,
कहीं नहीं सीमा का बंधन।
तरु-फुनगी पर झूला करते,
कटुक निबोरी रस से खाते।

यार! परिंदों से पूछो,
ये अमन-चैन से कैसे रहते?

खूब सबेरे कलरव करते,
ढले शाम घर आ जाते।
कैसी घड़ी पास है इनके,
समय का रोना कभी न रोते।
धूप-छाँव सब एक सरीखे,
चहक-चहक ये सह जाते।

यार! परिंदों से पूछो,
ये अमन-चैन से कैसे रहते?

निज जीवन में मस्त ये रहते,
कल की चिंता कभी न करते।
प्रकृति सुरक्षा हरदम करते,
क्षितिज-मिलन को तत्पर रहते।
देश-विदेश यात्रा कर आते,
ईश-डाकिए ये कहलाते।
शांतिपूर्ण संदेशा लाते,
सुंदरता से मन बहलाते।

यार! परिंदों से पूछो,
ये अमन-चैन से कैसे रहते?



श्री हरि शंकर त्रिपाठी

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-2, मुंबई



अमर जवानों को नमन

देश की खातिर मरने वाले उन अमर जवानों को नमन।
जिन्होंने अपने लहू से देश सँवारा उनको शत शत नमन॥

देश की सुरक्षा सब चाहें पर स्व लाल न भेजें कोई
बड़ी बड़ी बातें सब करें पर आचरण में लाता है कोई
निज स्वार्थ को त्यागकर राष्ट्रहित हेतु सोचता है कोई
उन राष्ट्रहितैषी सैनिकों को मेरा है शत शत नमन॥ 1॥

देश की सीमा पर खड़ा हुआ भाई पुत्र-बेटा किसी का
सरहद की सुरक्षा में डटा हुआ वह है पिता किसी का
विश्वबंधुत्व का भार ले तना हुआ है, भविष्य सबका
ऐसे जाँबाज़ वीर जवानों को मेरा है शत शत नमन॥ 2॥

देश हेतु लड़ते तिरंगे में जब सैनिक लिपटा हुआ आए
धरती काँपे आसमान रोए, तब हर एक आंसू बहाए
शोक व्याप्त होता इतना कि वर्णन शब्दों से न हो पाए
बस हाथ झुकें नम आँखों से करें शत शत नमन ॥ 3 ॥

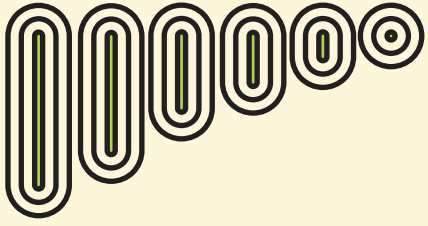
जिसका लाल हुआ बलिदान उस माँ की बात सुनो!
एक गया तो गम नहीं, दूजे तुम भी राष्ट्र की राह चुनो
करुणा वेदना थम गई, गर्व की अनुभूति हृदय में गुनो
देख त्याग समर्पण देशहित निर्मोही करे शत शत नमन॥ 4॥



श्री योगेन्द्र शास्त्री

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-4, मुंबई



श्री रामचंद्र रेगार

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-5, मुंबई

समर्पित आशीष



जीवन में एक बयार आई थी ,

जिसनें जीवन में हलचल मचाई थी।

जीवन के इस बदलाव से जीवन परिवर्तन हुआ ,

गमगीन माहौल हुआ।

उस निराशा भरे माहौल में, उनका आत्मिक सहारा मिला,

वह एक पथ प्रदर्शक बनकर जीवन बयार मिली।

हर मौसम , हर समय आपका सहारा मिला,

ईश्वर से हर समय, हर मौसम यही आशीष माँगूँ,

आपका आशीष, हर समय, हर मौसम हमारे साथ रहें।



अंकुर

एक नन्हा अंकुर फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया ।
सूरज ने भी उसे अपनी रोशनी से उसे नहालाया ।।
हवा के झोको ने भी उसे सहलाया ।
एक नन्हा अंकुर फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया ।।
नन्हा अंकुर अपनी अंगड़ाई से इठलाया ।
कोमल पत्तों ने बहारों में रंग लाया ।।

एक नन्हा अंकुर फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया ।
हरे – हरे कोमल पत्तों ने अपनी शाख बढ़ायी ।।
हवा के झोकों ने भी पत्तों को हिलाया, डुलाया और लहराया ।
फूलों की खूशबू ने हवा में घुल मिल बागों को महकाया ।।
एक नन्हा अंकुर फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया ।
फलों में भी उस अंकुर के बीज को अब अपनी यौवन के
मनमोहक, बागों में गदराया ।।

अंकुर पेड़ बन छाया देकर पथिक को एक पल का सकून
और आराम दिलाया ।

एक नन्हा फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया
अंकुर में ही सारा तत्व है, पेड़ों का गुण ।
जिसमें जीवन का सार है समाया, और ब्रह्माण्ड के तत्व में
विलीन है ।।

तेजांकुर हमारा, इस ज्ञान की गंगा में एक अंकुर फूटा
और धीरे से बाहर आया ।
एक नन्हा फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया ।।



श्रीमती सुमन दुबे

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-5, मुंबई

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



तेजोमय अंकुर को संसार में अब ज्ञान को मानव ने विश्व पटल पर लाया ।।

ज्ञान की गंगा द्वारा अब प्रकृति अब हरी-भरी हो जाएगी ।

हरा भरा संसार ही हमारे जीवन में नई ऊर्जा लाएगी ।।

एक नन्हा अंकुर फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया ।

मुझमें भी आज कविता रूपी एक अंकुर फूटा और शब्दों

द्वारा एक भाव उमड़ आया,

और, फिर भावों की अभिव्यक्ति द्वारा उसे एक अंकुर रूपी

बीज को आज कविता द्वारा सजाया ।।

फिर से फूल रूपी सुमन मुस्कराया ।

एक नन्हा अंकुर फूटा धीरे से बाहर आया और मुस्कराया ।।



ऐ हिंदी में तुझे क्या बतलाऊं

ऐ हिंदी में तुझे क्या बतलाऊँ.....
तू बारिश है सावन की और
भीगते रहने का दिल करता है।

ऐ हिंदी में तुझे क्या बतलाऊँ.....
तू चाशनी है, जलेबी सरीखी,
और डूबते रहने का दिल करता है...

ऐ हिंदी में तुझे क्या बतलाऊँ...
तू शीतल बयार है पहाड़ों की,
और दामन फैलाये रखने का दिल करता है...

ऐ हिंदी में तुझे क्या बतलाऊँ.....
तू बचपन की दोस्त तू रह गुजर,
बस तुझसे ही बतियाने को दिल करता है...

ऐ हिंदी में तुझे क्या बतलाऊँ.....
तू अमृत कलश है लबालब,
बस तुझको ही पीने को दिल करता है...

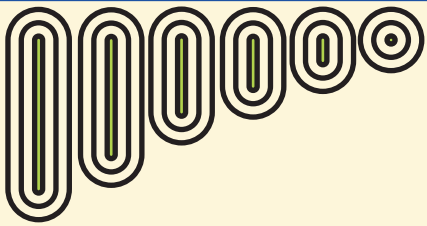
ऐ हिंदी में तुझे क्या बतलाऊँ.....
जिसकी उंगली पकड़ के इतने बड़े हुए "राजेश"
उसका दामन ना कभी छोड़ने का दिल करता है।



श्री राजेश कुमार

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, काकरापार



सफर को मंजिल बनाकर



श्री योगेश धानुका

प्राथमिक शिक्षक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, मैसूरु

जीवन एक डगर है, चुनौतियों भरा सफर है
घबरा मत इनसे, हौंसला हो मन में फिर क्या फिकर है
जमाना साथ हो या ना हो, बिना रुके इस डगर पे चलते
जाना है

राहों की मुश्किलों को ही तुझे हमसफर बनाना है,
सफर को मंजिल बनाकर मंजिल को पाना है।।

मुश्किलों के शोर में ही छिपा है, जीवन का गीत
मान लो तो हार है, ठान लो तो जीत
चट्टानों से टकराते हैं हम, पत्थरों से क्या घबराना है
सफर को मंजिल बनाकर मंजिल को पाना है।।

विश्वास की मशाल लिए अपने हाथों में,
न आगे न पीछे, चलना है सबके साथ में
इसी मशाल से उम्मीद का हर दीया जलाना है,
ये तो बस शुरूआत है, अभी बहुत दूर जाना है
सफर को मंजिल बनाकर मंजिल को पाना है।।

आसमान से ऊँचा हौंसला, समुद्र-सी विचारों में गहराई
रुकना नहीं थकना नहीं, फिर देख मेहनत क्या रंग लाई
जीवन के इस पथ पे, पत्थरों से क्या घबराना है
इन्हीं पत्थरों को अपनी कामयाबी की शिला बनाना है
सफर को मंजिल बनाकर मंजिल को पाना है।।

कौन कहता है इस जहाँ में किसी को मुक़मल जहाँ नहीं
मिलता, किसी को ज़मीन नहीं मिलती,
किसी को आसमान नहीं मिलता
ये ज़मीन भी तू है, ये आसमान भी तू है
बस इतना समझना है, कहीं और नहीं जाना है
खुद को खोकर ही खुद को पाना है
सफर को मंजिल बनाकर मंजिल को पाना है।।



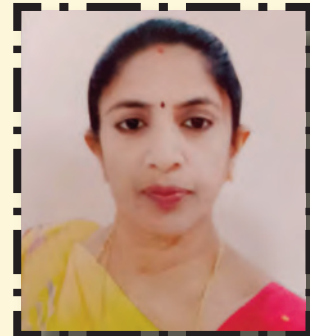
हम हैं बच्चे दिल के सच्चे

हम हैं बच्चे दिल के सच्चे कुछ करके दिखलाएँगे।
अपना पथ न छोड़ेंगे व प्रण कभी न तोड़ेंगे।।
पढ़-लिखकर हम बच्चे आगे बढ़ते जाएँगे।
हिम्मत से नाता जोड़ेंगे भारत की ध्वजा उड़ाएँगे।।

मान बड़े जिससे स्वदेश का काम करें हम अच्छे-अच्छे।
हमको नई सदी में जाना निज भारत को सुदृढ़ बनाना।।
हम हैं बच्चे वैज्ञानिक युग के, है विज्ञान हमारी थाती।
रोबोट और कंप्यूटर को हमने माना है साथी।।

भारत माँ के वीर निराले, आज़ादी के मतवाले।
मातृभूमि की रक्षा के हित स्वाभिमान का पहले बाना।।
नई सभ्यता सीखेंगे, नई प्रगति पथ जाएँगे।
नवभारत के हम है लाल, देश हमी से है खुशहाल।।

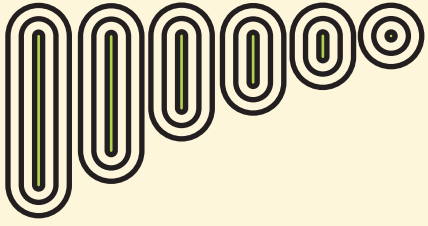
हम न किसी के आगे झुकेंगे, नमन करेंगे स्वतंत्रता
सेनानियों का।
शान तिरंगे की न मिटने पाए, यह हमको जान से है
प्यारा।।
बिना परिश्रम काम न बनता सत्य सभी ने माना है।
मेहनत का फल मीठा होता हम सब ने पहचाना है।।
आज का बच्चा, कल का युवा अपने कंधे जग का बोझ
उठाएँगे।
हम सब मिलकर अपने देश को आगे ले जाएँगे।।
भारत देश महान बनाकर दुनिया को फिर दिखलाएँगे।
हम हैं बच्चे दिल के सच्चे कुछ करके दिखलाएँगे।।



श्रीमती एम. लता

वरिष्ठ लिपिक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, मैसूरु



रस विचार



डॉ. धनुर्धर झा

स्नातकोत्तर अध्यापक

परमाणु ऊर्जा कनिष्ठ महाविद्यालय, मुंबई

काव्य आनन्दानुभूति का साधन है। यह आनन्द काव्य के समस्त प्रयोजनों का शिरोमणि है। काव्य श्रवण के अनन्तर शीघ्र ही रसास्वादन होने लगता है। रसास्वादन से आनन्द की प्राप्ति होती है। अत एव काव्यप्रकाशकार मम्मट ने काव्य प्रयोजन में लिखा है।

काव्यं यशसेऽर्थ कृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।

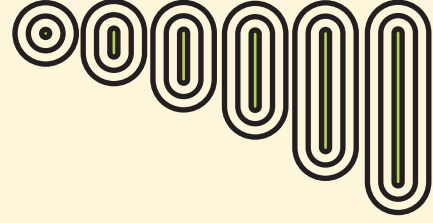
सद्यः परनिरवृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

काव्यप्रकाश 1/2।।

यहाँ पर 'सद्यः परनिरवृतये' अर्थात् सद्यः परमानन्द की प्राप्ति के लिए काव्य लिखा जाता है। उन्होंने इसे स्पष्ट करते हुए आगे लिखा है कि काव्य से वह आनन्द मिल सकता है जो यशप्राप्ति, अर्थार्जन, व्यवहार ज्ञान, अमङ्गल के निवारणादि सभी प्रयोजनों का प्रयोजन है, जिसके अनुभव में ज्ञाता-ज्ञेय और ज्ञान का भेद अस्तमित रहा करता है और जो बिना किसी बिलम्ब अथवा व्यवधान के ही एकमात्र विभावादि की वर्णन और उसकी चर्चण से निष्पन्न हुआ करता है।

आचार्य विश्वनाथ ने रस को ब्रह्मास्वाद सहोदर कहा है। तैत्तिरीयोपनिषद् में लिखा है कि रस से आनन्द की प्राप्ति होती है। वैदिक श्रुति 'रसो वै रसः' के आधार पर रस को आनन्दस्वरूप ब्रह्म ही माना गया है। वस्तुतः रस जीवन का सार है और मानव मात्र का जीवन 'रस' के लिए है। जितने भी क्रियाकलाप हैं; उनकी प्रेरणा और लक्ष्य, उनका उदय और अस्त रस में ही है। साथ ही साधनावस्था भी रस की अवस्था है। अत एव नाट्यशास्त्रकार भरत ने लिखा भी है – 'नहि रसादृते कश्चिदर्थः प्रवर्तते'।

'रस' शब्द 'रस' धातु से 'अ' (अच् अथवा घञ्) प्रत्यय करने से निष्पन्न हुआ है। संस्कृत व्युत्पत्ति के अनुसार 'रस्यते इति रसः'। अर्थात् वह जो आस्वादित किया जाए, अथवा 'रसते इति रसः' अर्थात् वह जो बहता है। इस प्रकार 'रस' में दो विशेषताएँ अन्तर्निहित हैं— 'आस्वाद्यत्व और द्रवत्व'।



सामान्य रूप से यदि देखा जाए तो काव्य या साहित्य पढ़ने, सुनने या देखने से जो आनन्द मिलता है, उसे रस कहते हैं। काव्य में 'रस' का अपना एक विशिष्ट स्वरूप है। जिस प्रकार नाना पदार्थों से तैयार किए हुए व्यंजन से रस की प्राप्ति होती है, उसी प्रकार अनेक प्रकार के भावों से रस की निष्पत्ति होती है। आशय यह है कि जिस प्रकार अनेक प्रकार के व्यंजनों से युक्त अन्न का भोग करते हुए स्वस्थ पुरुष आनन्द की प्राप्ति करते हैं उसी प्रकार विभाव, अनुभाव और संचारी भावों का आस्वादन करते हुए सहृदयजन रस का आनन्द लेते हैं।

इसकी परिभाषा विभिन्न आचार्यों ने अपने-अपने ग्रन्थों में अपने-अपने मतानुसार की है। उन सभी आचार्यों में भरत मुनि के द्वारा लिखित प्रसिद्ध ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में लिखित परिभाषा उल्लेखनीय है। उन्होंने लिखा है— 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः।' अर्थात् विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। इस परिभाषा को समझने के लिए सर्वप्रथम रस के अंगों/अवयवों को समझना परमावश्यक है। रस के मुख्य अंग निम्नलिखित हैं— (1) स्थायी भाव, (2) विभाव, (3) अनुभाव, (4) व्यभिचारी भाव / संचारी भाव। आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में लिखा है—

कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च। रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नायकाव्ययोः।

विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः। व्यक्तः स विभावाद्यैः स्थायीभावो रसः स्मृतः ॥

स्थायी भाव — किसी भी मनुष्य के हृदय में स्थायीरूप से रहने वाला भाव स्थायी भाव कहलाता है। यह प्रत्येक मनुष्य के हृदय में सहज व स्वाभाविक रूप से सुषुप्तावस्था में विद्यमान रहता है। अनुकूल परिस्थिति आने पर यह स्थायीभाव

जाग्रत होकर रस के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। जिस प्रकार पृथ्वी में गंध समायी रहती है, उसी प्रकार हमारे हृदय में वासनात्मक संस्कार सुप्त पड़े रहते हैं। जलसिंचन द्वारा जिस प्रकार पृथ्वी की गंध प्रकट हो जाती है, उसी प्रकार विभावादि का संयोग प्राप्त होते ही हमारे वासनात्मक संस्कार उद्बुद्ध होकर चमत्कृत आनन्द उत्पन्न कर देते हैं। वास्तव में वासना रूप बीज आलम्बनरूप हृदय क्षेत्र में पड़कर स्थायी भावरूप में अंकुरित होता है और उद्दीपनरूप जलवायु एवं गर्मी से बढ़ता है। पीछे यही अंकुर अनुभावरूप वृक्ष दिखाई देता है और फिर संचारी भावरूप अनेक पुष्प खिलते हैं जिनसे मकरन्दरूप रस पैदा होता है। कहा भी गया है—

यथा बीजात् भवेद् वृक्षो वृक्षात् पुष्पं फलं यथा। तथा मूलं रसाः सर्वे तेभ्यो भावा व्यवस्थिता ॥

साहित्य में 9 प्रकार के रस माने गए हैं। इसी प्रकार इन रसों के स्थायीभाव भी नौ प्रकार के हैं— रति, हास्य, शोक, क्रोध, उत्साह, भय, जुगुप्सा (घृणा), विस्मय और निर्वेद।

निर्वेद शांत रस का स्थायी भाव है। इस भाव को भरतमुनि ने बाद में स्वीकार किया है। भरतमुनि के बाद के आचार्यों ने 'भक्ति' और 'वात्सल्य' को भी रस के रूप में स्वीकार किया है। भक्ति रस में परमात्मा विषयक प्रेम विभाव आदि से परिपुष्ट होकर रस निष्पत्ति करता है, जबकि वात्सल्य रस में पुत्र, बालक, शिष्य, अनुज आदि के प्रति स्नेह विभाव आदि से परिपुष्ट होकर वात्सल्य रस की निष्पत्ति करता है। विभावादि का विवरण निम्नलिखित है —

विभाव — "विभावयन्ति इति विभावाः"। वे व्यक्ति या पदार्थ जो भावोत्तेजना के मूल कारण हैं, विभाव कहलाते हैं। अर्थात् स्थायी भावों को जाग्रत करने वाले कारण को विभाव कहते हैं। जिस सहृदय व्यक्ति का स्थायीभाव जाग्रत होता है, उसे आश्रय कहते हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं— आलम्बन

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

विभाव एवं उद्दीपन विभाव।

(क) आलम्बन विभाव—

आलम्बन विभाव वे हैं जिनका आलम्बन लेकर रति, हास, क्रोध, भय, जुगुप्सा, उत्साह, विस्मय आदि भाव जाग्रत हो जाते हैं। जैसे— कोई भी व्यक्ति जब 'सिंह' को देखता है तो सिंह को देखने मात्र से उसके मन में भय का संचार होता है। यहाँ भय का आलम्बन 'सिंह' है।

(ख) उद्दीपन विभाव—

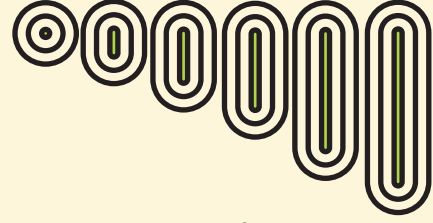
जिन वस्तुओं या स्थिति को देखकर रति आदि स्थायी भाव तीव्र या उद्दीप्त होने लगते हैं, वे विभाव कहलाते हैं। जैसे— साँप को देखने मात्र से हमारे मन में भय उत्पन्न होता है। यहाँ भय का आलम्बन साँप है। अब कल्पना कीजिए कि स्थान सुनसान है और साँप फन फैलाकर हमारे सामने है। यह दृश्य हमें और उत्तेजित कर देता है। यहाँ 'सुनसान स्थान' और 'साँप का फन फैलाना' उद्दीपन विभाव है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरणों के माध्यमों से भी इसे समझा जा सकता है। जैसे — महाभारत में जब द्रौपदी का चीर-हरण किया गया तो धृतराष्ट्र के दरबार में द्रौपदी के चीरहरण को देखकर 'आश्रय' भीम के मन का स्थायीभाव क्रोध जाग्रत हो गया। द्रौपदी के खुले केश, उसका रुदन, दुर्योधन और दुःशासन का अट्टहास आदि देखकर भीम का स्थायी भाव—क्रोध और अधिक उद्दीप्त हो उठा। इस प्रकार भीम यहाँ आश्रय है, जिनका स्थायीभाव क्रोध जाग्रत हुआ। आलम्बन विभाव द्रौपदी है और द्रौपदी के खुले केश, दुर्योधन तथा दुःशासन का अट्टहास, द्रौपदी के रुदन आदि उद्दीपन विभाव हैं।

अनुभाव— "अनुभावयन्ति इति अनुभावाः"। स्थायी भावों के उदय होने के पश्चात् जो शारीरिक विकार दिखाई देते हैं, वे अनुभाव कहलाते हैं। उपरिलिखित उदाहरण में भीम का क्रोध से काँपना, गदा उठाकर प्रतिज्ञा करना आदि शारीरिक चेष्टाएँ 'अनुभाव' हैं। उसी प्रकार साँप या सिंह को देखने के बाद 'देह में कँपकँपी होना', 'धड़कने बढ़ना' और 'आँखों के सामने उस दृश्य की भयंकरता का आना' अनुभाव हैं। अनुभाव मुख्यतः चार प्रकार के होते हैं— कायिक, मानसिक, आहार्य और सात्विक।

- I. कायिक — शारीरिक चेष्टाएँ कायिक अनुभाव के अन्तर्गत आती हैं। मारने के लिए हाथ उठाना, ऊँचे स्वर में बोलना आदि कायिक अनुभाव के उदाहरण हैं।
- II. मानसिक — मंद-मंद मुसकना, प्रमोद आदि मानसिक अनुभाव हैं।
- III. आहार्य — कृत्रिम रूप धारण करना, जैसे — 'रति' स्थायी भाव को व्यक्त करने के लिए गोपियों का कृष्ण रूप धारण करना आहार्य अनुभाव का उदाहरण है।
- IV. सात्विक — स्तम्भ (शरीर का जड़ हो जाना), स्वेद (पसीना), रोमांच, स्वर-भंग, कंठ विवर्णता (चेहरे का रंग बदलना), अश्रु, प्रलाप आदि सात्विक अनुभाव हैं।

व्यभिचारी भाव / संचारी भाव — व्यभिचारी भाव स्थायी भावों के विपरीत क्षणिक होते हैं। स्थायी भावों के सहकारी के रूप में वर्तमान रहते हैं। जिस प्रकार समुद्र में छोटी-छोटी लहरें उठती-गिरती हैं और एक बड़ी लहर के साथ मिल जाती हैं उसी प्रकार संचारी भाव स्थायी भावों के साथ उठते हैं और उसे पुष्ट बनाते हैं। स्थायी भाव और संचारी भाव में अंतर यह है कि स्थायी भाव आश्रय के मन में आरंभ से लेकर अंत तक रहते हैं जबकि संचारी भाव स्थायी



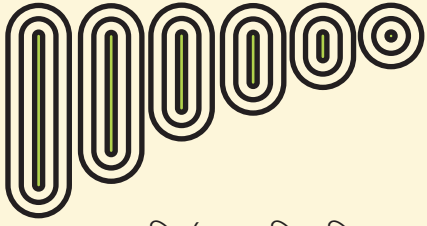
भाव के कारण उत्पन्न होते हैं और उन्हें पुष्ट करके, रस की अवस्था तक पहुँचाते हैं और विलीन हो जाते हैं। उदाहरण स्वरूप उपरिलिखित उदाहरणों में साँप को देखने के बाद मान लिया जाए कि डर के मारे आपकी आँखें झिप जाती हैं और आप चेतनाशून्य हो जाते हैं। यह दशा आत्म विस्मृति की होती है। यह अधिक देर तक रहती नहीं, एकाएक बिजली की तरह आकर फिर विलीन हो जाती है। यह क्षणिक अवस्था केवल भय में ही नहीं शोक, प्रेम, घृणा, विस्मय आदि में भी आती है। ऐसी ही वृत्ति को 'व्यभिचारी भाव' या 'संचारी भाव' कहते हैं। इस प्रकार अनेक रसों में व्यभिचरण करने के कारण संचारी भावों को व्यभिचारी भाव कहा जाता है।

संचारी भाव असंख्य हैं किन्तु आचार्यों ने इनकी संख्या तैंतीस मानी है।

ये संचारी भाव निम्नलिखित हैं—

1. निर्वेद (तत्त्वज्ञान आदि से समुद्भूत स्व अवमानन अर्थात् अपने सम्बन्ध में तुच्छता की बुद्धि)
2. ग्लानि (मनस्ताप आदि से उत्पन्न निष्प्राणता – निरुत्साहिता आदि का कारण एक चित्तवृत्तिविशेष)
3. शंका (आत्मदोष आदि से अनर्थसम्बन्धी चिन्तन)
4. असूया (परगुणासहिष्णुता अर्थात् गुणों में दोष निकालना)
5. मद (संमोह और आनंद का संमिश्रण – एक चित्तवृत्तिविशेष)
6. श्रम (ग्लानि की उत्पादिका चित्तवृत्ति)
7. आलस्य (मन की श्रमादिसंभूत निरुद्योगिता की अवस्था)
8. दैन्य (दुर्गति आदि से मन की ओजस्विता हानि)
9. चिंता (हित की अप्राप्ति में ध्यान की एकतानता)

10. मोह(दुःखादि चिन्तन से चित्त की विचिन्तता अर्थात् शून्यता)
11. स्मृति (सदृशानुभवादि से उत्पन्न पूर्वानुभूत वस्तु विषयक ज्ञान)
12. धृति (अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति में स्पृहानिवृत्ति)
13. ब्रीडा (चित्त का संकोच)
14. चपलता (द्वेषादिवश चित्त की अस्थिरता)
15. हर्ष (अभीष्ट प्राप्ति से मन की प्रसन्नता)
16. आवेग (अनर्थाधिक्य से मनःसंभ्रम)
17. जडता (चिन्तादिवश किसी कार्य में पटुता का अभाव)
18. गर्व (अपने प्रभावादि के आधिक्य के कारण अन्यत्र अवज्ञा)
19. विषाद (कार्यासिद्धि के कारण सत्त्वसंक्षय)
20. औत्सुक्य (अभिलषित वस्तु की प्राप्ति में विलम्ब की असहिष्णुता)
21. निद्रा (इन्द्रियों की श्रमादिवश व्यापारशून्यता)
22. अपस्मार (मनोव्यथा आदि के कारण स्मृतिप्रमोष)
23. सुप्त (निद्रावस्था में विषयाननुभूति)
24. प्रबोध (निद्रा समाप्ति में चैतन्य लाभ)
25. अमर्ष (अपमानादिवश कोप की स्थिरता की अवस्था)
26. अवहित्था (लज्जादिवश प्रसन्नता आदि का गोपन)
27. उग्रता (अधिक्षेपादिवश चित्त की प्रचण्डता अर्थात् अहंकारवश अपमानादि की असहिष्णुता)



28. मति (शास्त्रादि परिचयवश अर्थ निश्चय)
 29. व्याधि (विरहादिवश मनस्ताप)
 30. उन्माद (चित्तविभ्रम)
 31. मरण (मूर्च्छा)
 32. त्रास (मनःक्षोभ)
 33. वितर्क (संदेह में पड़ने पर विचार अथवा विमर्श)
- इन सभी संचारी भावों को याद करना कठिन हो जाता है। परन्तु कविता रूप में या श्लोक रूप में इसे याद करना सरल हो जाता है। इन सभी व्यभिचारी भावों को आचार्य मम्मट ने काव्यप्रकाश में निम्नलिखित रूप में स्पष्ट किया है—
निर्वेदग्लानिशङ्काख्यास्तथाऽसूयामदश्रमाः ।
आलस्यं चैव दैन्यं च चिन्ता मोहः स्मृतिर्धृतिः ॥31॥

ग्रीडा चपलता हर्ष आवेगो जडता तथा ।
गर्वो विषाद औत्सुक्यं निद्राऽपस्मार एव च ॥32॥

त्रासश्चैव वितर्कश्च विज्ञेया व्यभिचारिणः ।
त्रयस्त्रिंशदमी भावाः समाख्यातास्तु नामतः ॥
— काव्यप्रकाश, चतुर्थ उल्लास, श्लोक सं. 34 ॥

भरतमुनि के अनुसार रस के मुख्य नौ भेद हैं । इन नौ रसों के अतिरिक्त भरत के बाद के विद्वानों ने 'भक्ति' एवं 'वात्सल्य' रस को भी अलग से भेद स्वीकार किया है । इन्हें मिलाकर कुल 11 भेद हो जाते हैं । विवरण निम्नलिखित है —
शृंगार रस, हास्य रस, करुण रस, रौद्र रस, वीर रस, भयानक रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस, शांत रस, भक्ति रस, वात्सल्य रस ।



स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका

मुझे गर्व है कि मैं सुजलां सुफलां और समृद्ध भारत के बेटी हूँ। मेरे लिए यह अत्यंत हर्ष एवं उल्लास का विषय है कि मैं "हिंदी भाषा" हूँ और मैंने भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में सभी क्रांतिकारियों, आन्दोलनकारियों, पत्रकारों, लेखकों एवं कवियों को जोड़ने में एक अहम किरदार निभाया है। मौलिक चिंतन के उद्देश्यों से राष्ट्रीय आन्दोलन में (हिंदी भाषा) मेरी भूमिका पर अनेक सम्मेलन-संगोष्ठी आयोजित किये गए होंगे, परन्तु मेरे (हिंदी भाषा) विचार और मुझे क्या कहना है— इस पर कभी विचार नहीं हुआ।

आज मैं (हिंदी भाषा) अपने मनो-भाव आप तक पहुंचाने का प्रयास कर रही हूँ। वैसे तो मेरा इतिहास कई सहस्र वर्ष पुराना है। मेरे मानक रूप को मानक हिंदी कहकर मुझे विश्व की एक प्रमुख भाषा एवं भारत की राजभाषा का दर्जा दिया। मैं संवैधानिक रूप से "भारत की राजभाषा" हूँ, परन्तु राष्ट्रभाषा नहीं क्योंकि भारत के संविधान में किसी भी भाषा को ऐसा दर्जा नहीं दिया गया है। 'मैं' विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हूँ और विश्व आर्थिक मंच की गणना अनुसार विश्व की दस शक्तिशाली भाषाओं में से एक हूँ।

सम्पूर्ण भारत एवं अन्य देशों में जैसे— फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम, नेपाल, संयुक्त अरब अमीरात में मेरी बोली और बोलबाला है। फरवरी, 2019 में अबुधाबी न्यायालय की तीसरी भाषा के रूप में "मुझे" मान्यता मिली है। विभिन्न ऐतिहासिक काल खंडों में मुझे कई रूप में जाना और माना गया। सबसे ज्यादा गर्व मुझे इस बात का है की मेरे माध्यम से स्वतन्त्रता संग्राम की नींव रखी गई।

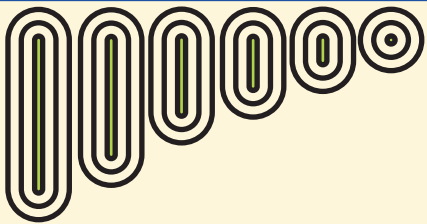
भारत के एक अन्वेषक हरी गोविंद गोविल जी ने 1937 में देवनागरी टाइपफेस का आविष्कार किया जिससे देवनागरी टाइप करने वाले उपकरणों एवं मशीनों के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ और मेरे सजने-संवरने के दिन आए। "प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं वक्तव्य" जिस तरह मनुष्य को उभारता है उसी तरह उसकी मनोदशा और भावनाओं पर काफी हद तक असर करता है। वक्तव्य अगर जानी मानी सरल भाषा में हो तो मनुष्य अपना एक संप्रदाय या समुदाय तुरंत बना लेता है। ऐसे ही आपकी जानी मानी सरल भाषा "हिंदी" ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।



श्रीमती ज्योति अविनाश पेटे

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई



स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी की भूमिका समझने से पहिले आईये हम स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों पर एक दृष्टि डालते हैं। उन दिनों स्वतंत्रता संग्राम या राष्ट्रीय आन्दोलन में चल-चित्र का उतना चलन नहीं था जितना मातृभाषा में विचार आदान प्रदान किया जाता था। चल-चित्र से अपने मन की बात बताने में काफी समय चला जाता। राष्ट्रीय आन्दोलन काफी हुए जैसे की सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा, स्वाधीनता और भारत छोड़ो आन्दोलन, आदि जिनके जन-नायकों के भाषणों की बात करें तो उनकी मातृभाषा हिंदी न होते हुए भी उन्होंने जनमानस तक मेरे (हिंदी भाषा) माध्यम से अपनी बातें सरलता से और स्पष्ट शब्दों में पहुंचाई।

ब्रिटिश हुकूमत से भारत को आजाद करने के पवित्र काम जहाँ अहिंसावादी आन्दोलनकारी, क्रांतिकारी, लेखक एवं कवि अपने प्राणों की आहुति देकर आजादी की अग्नि-शिखा प्रज्वलित रखने का प्रयास कर रहे थे उसी वक्त पं. जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में कलकत्ता में "उदन्त मार्तण्ड" से 30 मई, 1826 से मैंने सबसे पहले पत्रकारिता में प्रवेश किया और समाचार-पत्रों से यात्रा करते हुए जनमानस तक पहुंचकर स्वतंत्रता संग्राम को एक मजबूत जोर बना पाई।

1873 में काशी से "हरिश्चंद्र मैगजिन" और 1874 में "बाला बोधिनी पत्रिका" के माध्यम से "मुझे" न्यायालय की भाषा बनाने पर जोर दिया गया। सितंबर 1877 में प्रयाग के 'हिंदी प्रदीप' मासिक पत्रिका का प्रकाशन इतिहास की एक क्रांतिकारी घटना बना जिसने कलम की तेज धार व क्रांतिकारी संपादकों के तेवर ब्रिटिश सरकार को विशेषकर 'मेरे' और 'क्षेत्रीय भाषाओं' में प्रकाशित हुए। अखबारों ने 1878 के वर्नाकुलर प्रैस एक्ट बनाने पर मजबूर किया। अखबारों की संख्याओं में वृद्धि होती चली गई। देश में चली इस लहर से "मैं" स्वतंत्रता सेनानियों को जोड़ती चली गयी और राजनैतिक चेतना बढ़ती गयी। मेरठ में हुए 1857 के विद्रोह को पहला स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है, राजनैतिक विद्रोह की शृंखला

में कई सारे विद्रोह जैसे प्रांतों का विभाजन (बंगाल का विभाजन 1905), असहयोग आंदोलन (सितंबर 1920 से 1922), खिलाफत आंदोलन (1920 से 1924), जलियाँवाला बाग नरसंहार (13-4-1919), सविनय अवज्ञा (1930), सेन्ट्रल एसेम्बली में बमबारी (1929), 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन, 1942 का आजाद हिन्द फौज का गठन इन सभी आंदोलन में मेरी भूमिका स्पष्ट थी जो जनमानस में पहुंच कर "स्वतंत्रता संग्राम" का महासागर बन चुकी थी।

भारतीय स्वतंत्रता के सशस्त्र संग्राम की विशेषता यह रही है की क्रांतिकारियों के मुक्ति प्रयास 1857 से 1947 तक कभी शिथिल नहीं हुए और मुझे गर्व है की 'मैं, हिंदी' इन सभी संघर्षों एवं विद्रोहों में छोटे छोटे शब्दों की धाराओं से मुक्ति गंगा को प्रवाहित रख पाई। स्वतंत्रता का नारा बूंद-बूंद में 'जीवन' बनकर सभी विद्रोहों, आंदोलनकारियों और क्रांतिकारियों को सजग करती रही। पत्रकारिता के माध्यम से समय समय पर सामाजिक आवश्यकता का ध्यान रखकर मैंने स्वतंत्रता संग्राम में समन्वय और अखंडता का कार्य अत्यंत तत्परता और दूर-दृष्टि से किया है।

"गूगल" जैसे अनेकों माध्यमों ने आज के युग में मेरी उपयोगिता जागतिक स्तर पर सरल एवं व्यापक की है, परन्तु 'संचार' माध्यम की क्रांति सोशल मीडिया ने मुझे विकृत भी किया है। एक तरफ जहाँ मुझे विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा का दर्जा प्राप्त है तो दूसरी तरफ सार्वजनिक जगहों पर, संचार माध्यमों में लिखे गए मेरे अशुद्ध रूप को देखकर मेरे दिल को ठेस पहुंचती है। मेरे स्वरूप का शुद्धिकरण, व्याकरण एवं मानक स्वरूप को बरकरार रखने के लिए मैं आपको आगाह करती हूँ। कहीं मुझे स्वयं की स्वतंत्रता के लिए ही विद्रोह ना करना पड़े। मेरा वैभव बरकरार रहे इसलिए स्वतंत्रता संग्राम की उन गतिविधियों को तथा बलिदानों को याद कर आप सभी को इस माध्यम से निवेदन करती हूँ कि 'मैं' आपकी "हिंदी" भाषा हूँ और मुझे स्वतंत्र भारत की राजभाषा रहने दो।



कविता लेखन प्रतियोगिता-2020 / शीर्षक (क वर्ग) : 'नव-सामान्य परिदृश्य'

नव आँगन है, नव चौबारा ...

नव आँगन है नव चौबारा, है नव गृह कोना-कोना ।
मंदिर-मस्जिद का परिदृश्य भी, बदल गया है कोरोना ॥
मुखड़ा पूनम चाँद नहीं है, अधरों की मुस्कान नहीं है ।
आधे घूँघट-पट में पराए, अपनों की पहचान नहीं है ॥
सखियों का आलिंगन छूटा, लाली-गजरा-कंगन रूठा ।
वन-उपवन में धमाचौकड़ी, मीत-प्रीत कर-बंधन टूटा ॥
रिश्ते-नाते सभी निपट गए, मोबाइल में सभी सिमट गए ।
बिन आए-जाए अपनों के, मन से मन के तार कट गए ॥
बारह कब खाना-पीना है? बे-रंग जीवन ही जीना है ।
दो गज की दूरी ने लूडो, कैरम और शतरंज छीना है ॥
लेकिन बसुधा की हरियाली, धुली-धुली सी महक रही है ।
जल-धारा भी निर्मल हो गई, गौरैया भी चहक रही है ॥
बस और रेल है रेला नहीं है, तीज-त्यौहार है मेला नहीं है ।
शादी-ब्याह-सगाई में भी, किंचित ठेलम-ठेला नहीं है ॥
सड़कों पर बारात नहीं है, कान-फोड़ आवाज नहीं है ।
कोमल मन को कंपित कर दे, ऐसा कर्कश साज नहीं है ॥
माना कोरोना ने हमको, पल-पल बहुत सताया है ।
पर सेवा-सादगी-शुचिता का, एक नव-परिदृश्य दिखाया है ॥



श्रीमती राज योनी सिंह

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, नरौरा

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

कविता लेखन प्रतियोगिता-2020 / शीर्षक (ख वर्ग) : 'लॉकडाउन'

कुछ खोया, कुछ पाया है।

थम सा गया है सारा जीवन, सोचो कैसे समय बिताया है?
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।
 गहराया संकट महामारी का, बचना उससे जरूरी था,
 जान बचाने की खातिर, लॉकडाउन लगना जरूरी था।
 रुक सी गयी हैं सबकी सासें, जान पर खतरों का साया है,
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है। अपनों
 से मिलने की खातिर,

सिलसिला स्थानांतरण का चल रहा था,

कारवां चल रहा रास्तों पर,

बेबस गरीब पटरी पर कट रहा था,

खून पसीने की कमाई को, नफ़ाखोरों से लुटते अजमाया है,
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।
 धरे रह गए मंदिर मस्जिद, बाबा-मौलवी काम न आए ,

कितनों को दम तोड़ते देखा,

जो अस्पताल में जगह न पाए।

सगे, संबंधी पास न आये, दोस्तों को दूरी बनाते पाया है
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है,
 रईसों के तो ठाठ चले थे, जो थे आलीशान मकानों में,
 मशगूल हो गए थे रेसिपी और फेसबुक के चेलैजों में
 झोपड़ियों में गरीबों को, बिना निवाले दम तोड़ते पाया है
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है,
 कई अर्से बाद सारा परिवार एक-साथ आया है,
 एक-दूसरे के रहकर साथ, दिलों में सुकून जगाया है।
 बढ़ती परिवारिक दूरियों को कम करना हमें सिखाया है,
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।

दो दिन जब हम कैद रहे, बंद रहकर चार-दीवारों में,
 दर्द उनका महसूस हुआ, जिनको रखा है सलाखों में।
 क्या होती है आज़ादी, इसका एहसास हमें कराया है,
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।
 हम बैठे हैं अपने घरों में, वे दिन-रात सफर कर रहे हैं,
 पुलिस, डॉक्टर, नर्स, सिपाही, हमारी खातिर ही लड़ रहे हैं।

अलग नहीं है भगवान इनसे, यही हमको समझाया है,
 कोरोना के इस लॉकडाउन में, कुछ खोया, कुछ पाया है।



श्री सत्यवान भिवाजी लोखंडे

विशेष शिक्षक

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई



कविता लेखन प्रतियोगिता-2020 / शीर्षक (ग वर्ग) : 'प्रकृति'

प्रकृति में क्रोध है, तो करुणा भी ...

अरुणोदय में चिड़ियों की चह-चहाहट,
सुनहरी धूम की गर्माहट,
लहलहाती खेतों की हरियाली, जीवन की खुशहाली,
यह सारे वरदान, प्रकृति ने हमें किये हैं प्रदान।

मनुष्य के सारे हुनर हुए विकसित गोद में प्रकृति असीमित,
खान-पान, पालन-पोषण, ज्ञान-विज्ञान, सभी प्रकृति के उत्कर्ष,
लालच से मलिन है मानव! तू हो गया कितना निष्ठुर,
जीवनदायी पंचभूतों की नीड़ प्रदूषित कर, तोड़ी विश्वास की रीड़,
संस्कृति-संस्कारों को भूलकर, आमंत्रित किया विनाश अपने
ही कर।

खो दिया ऐतिहासिक ज्ञान, गुलाम किया तुझे अपना विज्ञान,
जीव-जंतु का किया पतन, गिरवी रख दिया अपना वतन,
एहसास न था तुझे, हो चुका तेरे विनाश का उद्घाटन,
बाढ़, भूकंप, तूफान और अकाल, महामारी इस वर्तमान काल,
न खून की रिश्ता, न दोस्ती, न अपना, न पराया,
तालाबंदी और कोरोना न सारी मनवता को हिलाया,
राजा या प्रजा, रईस या प्रवासी, विचलित हैं प्रत्येक निवासी।

प्रकृति में क्रोध है, तो करुणा भी है, देर है पर अंधेर नहीं,
और न चीरों इसकी छाती को, न कुरेदों इसके जख्मों को,
क्षमा कर दो इन अपराधियों को लौटा दो हमारी मुस्कानों को,
बच्चों के बचपन को, अमूल्य जिंदगी की स्वेच्छा को,
हे प्रकृति! स्वीकार करो, मेरी इस प्रार्थना को।



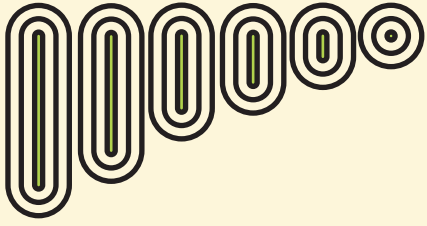
श्रीमती के. श्रीलता

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-1, तारापुर

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

कविता लेखन प्रतियोगिता-2021 / शीर्षक (क वर्ग) : 'विश्व शांति'



श्री जयवर्धन भटनागर

प्राथमिक शिक्षक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-4, रावतभाटा

गीत खुशी के हम गाएँ

अमन चैन की पवन चले और धरती पर खुशहाली छाप।
खिला रहे यूं हर इक गुलशन, कली कोई न मुरझाप।

लें साँसे हम अमन चैन की, गमों के बादल न मंडराएँ।
दुःख का कारण नहीं बनें हम, छोड़ पाप को पुण्य कमाएँ॥

रहें साथ मिलकर हम सारे, पल चाहे जैसा भी आएँ।
घृणा और नफ़रत मिटा कर, सबके दिल में प्रेम जगाएँ॥

हथियारों की होड़ बढ़ी है, ये कैसी नादानी है।
इंसान ही इंसान को मारे, ये कैसी हैवानी है॥

विध्वंसों को छोड़, बढ़ो अब निर्माणों की राहों में।
मानवता की बगिया महके, छोड़ सिसकती आहों को॥

हर हाथों को मिले काम और हर भूखे का खाना।
शिक्षा पर हो सबका हक, अब हमको ऐसा विश्व बनाना
है॥

धरा-गगन अब सबका होगा, कह दो इन नादानों से।
महकेगी बगिया फूलों से, इन जंगली वीरानों में॥

ऊँच-नीच और भेदभाव को भूल, अब सब इक हो जाओ।
मानवता हो धर्म हमारा, इक यही बस गीत गाओ॥

रहें साथ सब अमन चैन से, हर घर में खुशहाली आए।
रहे धरा पर विश्व-शांति और गीत खुशी के हम गाएँ।



कविता लेखन प्रतियोगिता-2021 / शीर्षक (ख वर्ग) : 'नयी पीढ़ी'

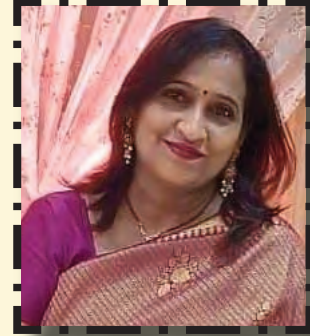
नयी पीढ़ी का आईना हूँ



अनामिका हूँ!
नयी पीढ़ी का आईना हूँ।

सुनती आयी हूँ, नयी पीढ़ी दिशाविहीन है।
स्वच्छंद है, महत्वाकांक्षी है, संस्कार विहीन है।।
नहीं है रिश्तों की अहमियत, न रीति-रिवाजों में विश्वास।
अत्याधुनिक इस नयी पीढ़ी का, नहीं है मूल्यों में विश्वास।।
मेरे भी अपने सपने हैं, मेरे भी अपने अरमान।
आज दिखाऊँ अंतर्मन में, क्या-क्या छिपे हुए हैं राज।।
सुंदर सपनों का एक छोटा सा ठिकाना हूँ।
अनामिका हूँ, नयी पीढ़ी का आईना हूँ।।

नहीं आता है शायद मुझको, अपने बड़ों से आदर जताना।
हाँ में हाँ उनकी मिलाकर, हरदम अपना शीश झुकाना।।
पर हाँ मैं ही हूँ, उनको जो स्मार्टफोन चलाना सिखाती हूँ।
उनके साथ मैं लेकर सेल्फी, जीने का चाह जगाती हूँ।।
दवाई भी खिलाती हूँ, पिज्जा बर्गर भी मंगवाती हूँ।
उनके चेहरे पर हँसी देखकर, मैं भी संतुष्ट हो जाती हूँ।।



श्रीमती अमला प्रदीप पंडित

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-6, मुंबई

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

उनके लिए तो मैं प्यार खजाना हूँ।
अनामिका हूँ, नयी पीढ़ी का आईना हूँ।।

अनगिनत दबाव हैं मेरे ऊपर, भार है आकांक्षाओं का।
तनाव है, दबाव है, डर है मुझको हार जाने का।।
दिग्भ्रमित सी मैं बावली, कभी नीम, कभी शहद बन जाती हूँ।
कभी तीखी सी मिर्ची बनकर, पलट जबाव दे जाती हूँ।।
आँख मूँद हर बात मानना, रही नहीं अब मेरी आदत।
पर आदर्शों, मूल्यों का करती हूँ मैं आज भी स्वागत।।
इसी फलसफे का इक सहमा सा तराना हूँ।
अनामिका हूँ, नयी पीढ़ी का आईना हूँ।।

छह गज के कपड़े में, आज नहीं लिपटती मेरी काया।
छोटी सी स्कर्ट में भी, सीखा है मैंने संस्कार निभाना।।
बार भी जाती हूँ, डिस्को भी जाती हूँ।
अपने ईश के सामने, शीश भी नवाती हूँ।।
अगर तुम थोड़ा मुझे समझो, मेरी आरजू पूरी हो जाएगी।
मैं भी तुमको समझ लूँगी, दूरियाँ दिल की मिट जायेंगी।।
इन्हीं ख्वाहिशों का इक, नन्हा सा परवाना हूँ।
अनामिका हूँ, नयी पीढ़ी का आईना हूँ।।





कविता लेखन प्रतियोगिता-2021 / शीर्षक (ग वर्ग) : 'पर्यावरण'

आँगन बगिया महकाओ ...

जैसे माँ तुम्हारी तुम पर ममता है उड़ेलती
मैं, पर्यावरण तुम्हारी सारी ज़रूरतें पूरा करता हूँ।
फिर क्यों फेरते हो मेरी आशाओं पर पानी
यह सोचकर मुझे होती है बड़ी हैरानी।

माना कि माँ को भी मिलती है कई बार उपेक्षाएँ
मैं, पर्यावरण भी रखता हूँ तुमसे कई अपेक्षाएँ।
पानी की मिठास धीरे-धीरे हो रही लुप्त
पानी पीने पर भी अब जी नहीं होता तृप्त।

रोता हूँ फूट-फूट कर जब तुम वृक्षों का काटते हो
घने फलदायक वृक्षों को बेवजह छाँटते हो।
तुलसी, आंवला, वट वृक्ष आज हुए बेगाने
इन वृक्षों के सामने शीश झुकाने से क्यों तुम शर्माते।

केवल टहनी नहीं वृक्षों की, काट रहे मेरी बाँहें
सुबक-सुबक कर रोता हूँ, दिल से निकलती हैं कराहें।
मैं पर्यावरण पुकार-पुकार कर करता यह आह्वान
रहम करो मुझ पर, और मत करो मेरा अपमान।

अगर समुचित किया होता तुमने मेरा आदर
बाढ़, ज्वालामुखी, तूफान का न होता तुम पर कहर।
जीव, जंतु, पेड़, पौधे, पक्षियों को गर हानि पहुँचाओगे
नाश होगा, बिन ऑक्सीजन तुम जी न पाओगे।

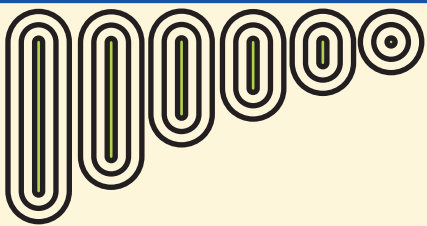
अभी भी वक्त है जागो और जन-जन को जगाओ
हर गली-गली, कूचे-कूचे यह आंदोलन चलाओ।
पेड़-पौधे लगाओ, आँगन बगिया महकाओ
जल बचाओ, गंदगी न फैलाओ।
हम भी जिएँ और पर्यावरण को भी सँवारें।



श्रीमती अनुपमा तपन मंडल

स्नातकोत्तर अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-1, तारापुर



श्रीमती आभा श्रीवास्तव

प्राथमिक शिक्षिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-1, तारापुर

शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है ...

शिक्षा जीवन को सरल एवं अर्थपूर्ण बनाने का आधारभूत स्तंभ है। शिक्षा एक सच्चे मित्र की तरह है जो किसी भी परिस्थिति में साथ नहीं छोड़ती। मानव यदि शिक्षा को अपना परम मित्र बना लेता है तो उसका जीवन आनंदमय एवं कल्पनाओं से भरा होता है। शिक्षा के विकास में भावनाओं का महत्त्व सबसे अधिक होता है, क्योंकि शिक्षा का स्तर वहीं होता है जहाँ प्रेम, संस्कार, एवं कल्पना होती है। यही कारण है कि कहा गया है—

कर्तव्यों का बोध कराती, अधिकारों का ज्ञान,
शिक्षा से ही मिल सकता है, सर्वोपरि सम्मान।
और साथ ही—
जिस समाज में हो शिक्षित सभी नर-नारी,
सफलता, समृद्धि स्वयं बने उनके पुजारी।

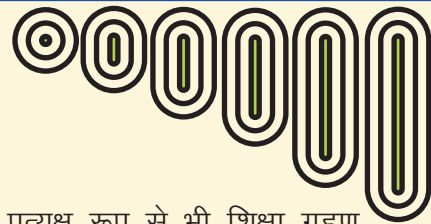
शिक्षा मानव को एक अच्छा इंसान बनाती है। शिक्षा का स्वरूप बड़ा व्यापक है जिसमें ज्ञान, उचित आचरण, तकनीकी दक्षता, शिक्षण और विद्या प्राप्ति का समावेश होता है। यह शिक्षा ही है जो बालक के अंदर निहित तत्वों को बाहर की ओर अग्रसरित करती है। थोड़ा व्यापक दृष्टि से देखें तो शिक्षा आजीवन चलने वाली एक प्रक्रिया है।

महात्मा गाँधी के शब्दों में— “शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा का उत्कृष्ट विकास है।” इस तरह शिक्षा का वास्तविक अर्थ— व्यक्तिगत निर्माण, संस्कृति की रक्षा और समाज की उन्नति होता है।

भारतीय समाज शिक्षा और संस्कृति के मामले में प्राचीन काल से ही बहुत समृद्ध रहा है। शिक्षक को समाज के समग्र व्यक्तित्व के विकास का उत्तरदायित्व भी सौंपा गया



निबंध लेखन-2020 / शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंक'



है। महर्षि अरविंद ने एक बार शिक्षकों के लिए कहा था— “शिक्षक राष्ट्र की संस्कृति के चतुर माली होते हैं। वे संस्कारों की जड़ों में खाद देते हैं और अपने श्रम से सींचकर उन्हें शक्ति में परिवर्तित करते हैं।”

यदि हम आज की बात करें तो देखेंगे कि समाज भी परिवर्तन पर टिका है। समयानुरूप वहाँ भी बदलाव की प्रक्रिया चलती रहती है। यही वजह है कि शिक्षा जो समाज का एक आवश्यक और अनिवार्य तत्व है उसमें भी समयानुसार परिवर्तन होते रहे हैं और भी हो रहे हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि भोजन-पानी जितना आवश्यक है उतनी ही आवश्यक शिक्षा है। इसी के द्वारा विद्यार्थी या बालक जीवन-कौशल सीखता है। यह भी सत्य है कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी अभूतपूर्व बदलाव आया है। साथ ही यह भी सत्य है कि शिक्षा जीविकोपार्जन का साधन मात्र बनती जा रही है।

थोड़ा समय का पहिया उलटा घुमाते हैं और पीछे चलते हैं जहाँ हम देखते हैं कि भारत में वर्तमान आधुनिक शिक्षा का राष्ट्रीय ढाँचा एवं प्रबंध औपनिवेशिक काल और आज़ादी के बाद के दौर में ही खड़ा हुआ है। सन् 1968 में बनी भारत की पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति में इस बात पर जोर है कि 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को अनिवार्य शिक्षा प्रदान की जाए और इसी संदर्भ में एक अप्रैल 2010 में शिक्षा का अधिकार भी एक कानून बना जिसके अनुसार 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को विद्यालयों में निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

समय-समय पर विभिन्न सरकारी नीतियों का पालन होता रहा और शिक्षण प्रक्रिया चलती रही, परंतु पिछले कुछ वर्षों में शिक्षा के क्षेत्र में भी सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विकास के कारण ऑनलाइन शिक्षण संस्थाएँ खुलीं। साथ ही शिक्षण

संस्थानों में भी बच्चे जाकर प्रत्यक्ष रूप से भी शिक्षा ग्रहण करते रहे। परंतु समय का चक्र कुछ ऐसा आया कि पिछले वर्ष जब विश्व कोरोना जैसी महामारी के आगे विवश हो गया और कोविड-19 का जो भयावह रूप सामने आया उससे कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। आज इस महामारी ने हमारे जीवन के हर पक्ष को बुरी तरह प्रभावित किया, शिक्षा जगत भी इससे अछूता नहीं रहा। कोरोना की भयावहता को देखकर सभी स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय बंद कर दिए गए और इन परिस्थितियों में शिक्षा का स्वरूप पूर्णरूपेण बदल गया। ऑनलाइन शिक्षण द्वारा कोर्स पूर्ण करने का सरकारी आदेश आया। विगत 6-7 महीनों से शिक्षार्थी इसी ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

इस दिशा में सरकार ने स्वयं अनेक प्लेटफार्मों जैसे-स्वयं, ई. पी.जी. पाठशाला, किशोरमंच, डिजिटल लाइब्रेरी, दीक्षा आदि ऐप का प्रयोग करने के निर्देश दिए हैं।

इसी ऑनलाइन शिक्षा को आज हम विद्यार्थियों के जीवन से इस कदर जुड़ा हुआ पाते हैं कि लगता है इस वैश्विक संकट के समय इसके अतिरिक्त दूसरा कोई उपाय ही नहीं, जिससे विद्यार्थी शिक्षण प्रक्रिया से जुड़े रहें। उनका यह महत्वपूर्ण सत्र और समय व्यर्थ न हो जाए, उनकी शिक्षा पर इस कठिन समय का कुप्रभाव न पड़े।

ऑनलाइन शिक्षा जो आज के बदले हुए समय की मांग है, जिसमें इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस और डिजिटल मीडिया के माध्यम से शिक्षा ग्रहण की जाती है। बुनियादी इंटरनेट, ऑडियो, विडियो की जानकारी मात्र होने से भी विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। आज की इन विषम परिस्थितियों में छात्र ऑनलाइन शिक्षकों के निर्देशानुसार ही विद्यार्जन में जुटे हैं और अपने विभिन्न पाठ्यक्रम पूरा कर रहे हैं। दूसरी ओर खेल-खेल में ज्ञानपरक कंप्यूटर कार्यक्रमों का

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

निबंध लेखन-2020 / शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंक'



निर्माण हुआ और हो रहा है।

कोरोना से अलग होकर भी यदि हम देखें तो भारत जैसे गरीब देश में ऑनलाइन शिक्षा एक जरूरत बनकर उभरी है क्योंकि इसके विकल्प से विद्यालयों पर दबाव कम होगा और माता-पिता एवं बच्चों की भी अपने-अपने तरीकों से पढ़ने-पढ़ाने की आज़ादी होगी।

अब तो यू.जी.सी. ने भी यह सुझाव दिया है कि भविष्य में जब भी शैक्षिक कार्यक्रम हो तब दो दिन ऑनलाइन शिक्षण गूगलमीट, वेबेक्स, जूम इत्यादि तकनीक के द्वारा, अगले दो दिन विद्यार्थी स्कूल, कॉलेज में प्रत्यक्ष शिक्षा ग्रहण करें और एक दिन प्रोजेक्ट वर्क रहे।

तात्पर्य यह है कि ऑनलाइन शिक्षा आज के समय के अनुसार विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग बनती जा रही है। इससे समय एवं धन की बचत होती है। इसका दूसरा पहलु भी है कि भारत जैसे गरीब देश में आधी से ज्यादा जनसंख्या गाँवों में निवास करती है जहाँ इस ऑनलाइन शिक्षण के महत्वपूर्ण घटक यानि इंटरनेट आसानी से उपलब्ध नहीं है। साथ ही इंटरनेट की कम स्पीड भी समस्या बनी रहती है। इसके साथ रेडिएशन का खतरा, नेत्रों की

ज्योति पर असर, सामाजिक वातावरण में अध्ययन न करने से सबके साथ सामंजस्य की समस्या, अकेलापन, अवसाद आदि अनेक समस्याएँ हैं। खेल, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, कला संबंधी कार्यक्रम भी रुके हुए हैं जिससे उनका समग्र विकास भी बाधित है।

परंतु इन सबके बावजूद जीवन को आगे बढ़ाने का ऑनलाइन शिक्षण ही एकमात्र उपाय है और देश की भावी पीढ़ी का भविष्य उज्ज्वल करके अच्छे नागरिक बनाने का। कोरोना का यह संकट जल्दी समाप्त होने वाला नहीं, ऐसे में सामाजिक दूरी को बनाए रखते हुए शिक्षा प्राप्ति का मुख्य

साधन ऑनलाइन शिक्षा ही है। पूरे विश्व में यह मत बन रहा है कि कोरोना के साथ ही जीना है क्योंकि जहाँ चुनौती होती है, वहाँ समस्या होती है, परंतु वहीं उसके समाधान भी निहित होते हैं।

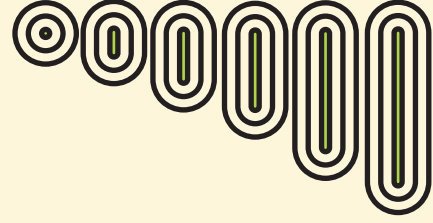
स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा था— “जीवन में आए अवसरों को व्यक्ति साहस एवं ज्ञान की कमी के कारण समझ नहीं पाता।” ऐसी स्थिति में हमें साहस एवं ज्ञान दोनों का परिचय देना होगा और ऑनलाइन शिक्षा को प्रोत्साहित करना होगा।

इस प्रकार की शिक्षा से विद्यार्थी तरह-तरह से ज्ञान प्राप्त कर सकता है। बिना किसी समय-सीमा बंधन के विभिन्न पाठ्यक्रम ऑनलाइन पूर्ण किए जा सकते हैं। विस्तृत पठन सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। ऑनलाइन शिक्षा पर्यावरण हितैषी भी है क्योंकि इसमें कॉपी-किताब पर निर्भरता कम होती है। देश की मातृभाषाओं में सभी विषयों की पठन सामग्री इंटरनेट पर उपलब्ध कराना एक चुनौती अवश्य है, परंतु असंभव नहीं। साथ ही साइबर क्राइम के प्रति सावधान करने वाले पाठ्यक्रम को महत्व देना होगा। पाठ्यक्रमों में बदलाव एवं कौशल शिक्षा का शामिल करने से इस ऑनलाइन शिक्षण को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

इस प्रकार यह ऑनलाइन शिक्षण देश और समाज के लिए हितकारी होगा। समय की मांग एवं विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य से जुड़ी यह ऑनलाइन शिक्षा छात्रों को रुचिकर एवं आकर्षक तरीके से शिक्षा प्राप्ति के अवसर भी प्रदान करती है। यही कारण है कि आज की इन परिस्थितियों में यह ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का एक अनिवार्य और अभिन्न अंग बन चुकी है और इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता है।



निबंध लेखन-2020 / शीर्षक (शिक्षक ख वर्ग) : 'ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंक'



व्यापक फायदों के लिए ...

विश्व में भारतीय शिक्षा का प्राचीन इतिहास रहा है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा सारे विश्व में प्रसिद्ध रही है। सबसे पहले गुरुकुल शिक्षा, उसके बाद नालंदा, तक्षशिला जैसे महान अध्ययन केंद्र जहाँ अध्ययन करके पाश्चात्य देशों ने अपने यहाँ विद्यालय बनवाए। ऐसी उच्च विद्याविभूषित संस्कृति वाला देश शिक्षा के क्षेत्र में कभी पीछे नहीं था, न ही है और न ही रहेगा। किंतु अब विज्ञान और तंत्रज्ञान के आविष्कार ने सारे क्षेत्रों को पूरी तरह से बदल दिया है। चाहे वो अंतरिक्ष, परमाणु, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा ऑटोमोबाइल्स, शिक्षण इत्यादि। इन सारे क्षेत्रों का चेहरा पूरी तरह से बदल गया है, इसलिए हमें शिक्षा के क्षेत्र में भी विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना अनिवार्य हो गया है और इसमें यह कारगर भी साबित हुआ है।

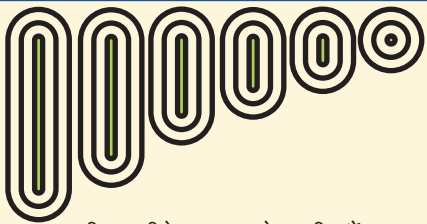
इन दिनों हर दिन नए-नए आविष्कार हो रहे हैं— जैसे मोबाइल, ऐप। इनके माध्यम से हमारा जीवन सरल हो गया है। इस सरल जीवन को 2019 से कोरोना जैसी महामारी ने जटिल कर दिया है। लेकिन इन परिस्थितियों में भी मानव ने अपना काम— विकास करना, संघर्ष करना छोड़ा नहीं है। बहुत सालों से शिक्षा के क्षेत्र में हम नए-नए उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं। लेकिन उसका सबसे ज्यादा उपयोग इन दिनों करना पड़ रहा है। क्योंकि, इस महामारी की वजह से विश्व की सारी गतिविधियाँ रुक सी गई थीं जो आज



श्री विश्वांभर शिवाजीयव लांडगे

प्राथमिक शिक्षक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-1, तारापुर



धीर-धीरे शुरू हो रही हैं।

कुछ साल पहले से ही बड़े संस्थानों ने ऑनलाइन शिक्षा शुरू की है, लेकिन उसका इतना प्रभाव सामान्य जन-जीवन पर नहीं था। बेशक हमें इस महामारी की वजह से ऑनलाइन शिक्षा का प्रयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ा किंतु इन दिनों ऑनलाइन शिक्षा ही कारगर साबित होती नजर आ रही है। यह सभी विद्यालयों के जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। यह शिक्षा का ऐसा माध्यम है जिसके माध्यम से शिक्षक घर बैठे देश के किसी भी कोने में बैठे हुए बच्चों को पढ़ा सकते हैं।

हम अगर मानते हैं कि यह विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग है, तो हमें इसके फायदों पर विचार करना होगा—

1) शिक्षक – विद्यार्थी संपर्क: इस शिक्षा से शिक्षकों – विद्यार्थियों का संपर्क बेहतर हो जाता है, क्योंकि किसी भी समय विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा से पढ़ाई कर सकते हैं। शिक्षक अपने समय के अनुसार बच्चों से संवाद कर सकते हैं और नई – नई तकनीकों का उपयोग करके पाठ सरल बना सकते हैं।

2) प्रभाव: इंटरनेट के माध्यम से प्रभावी तरीके से शिक्षक अपने विषय को विद्यार्थियों को पढ़ा सकता है।

3) तकनीक की सहजता: भारत की अधिकतर आबादी आज भी गाँवों में निवास करती है। आज कुछ अपवादों को छोड़कर लगभग सभी जगह पर इंटरनेट कनेक्टिविटी और मोबाइल, टीवी की पहुंच है। इन सुविधाओं के माध्यम से हम ग्रामीण बच्चों तक भी शिक्षा सहजता से पहुंचा सकते हैं।

4) नैसर्गिक विनाशकारी घटनाओं के समय फायदे: हम अक्सर कहते हैं कि जो दुःख के साथ खड़ा होता है वही सही होता है। हमारे जीवन में ऐसी कई घटनाएँ आती हैं जिसमें हमारा जीवन असहज हो जाता है, जैसे— कोरोना महामारी, बाढ़, भूस्खलन, सुनामी। इन आपदाओं के समय विद्यालय में औचारिक शिक्षा पाना संभव नहीं होता, तब ऑनलाइन शिक्षा एक वरदान साबित होती है।

5) सुविधाजनक: ऑनलाइन शिक्षा निश्चित रूप से मानव जीवन को सुलभ बनाती है।

6) सस्ता: मेरे विचार से यह प्रणाली सस्ती भी है, आने – जाने का खर्चा बचता है, ई-पुस्तकों की ऑनलाइन उपलब्धता पुस्तकों के भारी-भरकम खर्च से मुक्ति देता है।

7) पर्यावरण हितैषी:

इस प्रणाली में पेपर का इस्तेमाल कम हो जाता है जिससे पेपर की मांग कम होती है और पेपर निर्माण के लिए कच्ची सामग्री प्राप्ति के लिए वृक्षों की कटाई की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

किसी भी चीज के दो पहलू— लाभ और हानि होते हैं। ऑनलाइन शिक्षा के कुछ नकारात्मक पहलु होते हुए भी व्यापक फायदों के लिए नए युग की नई पीढ़ी को ऑनलाइन शिक्षा को अपनाना होगा और समर्थन करना होगा तभी यह आधुनिक शिक्षा और विद्यार्थियों का अभिन्न अंग बन पायेगा।



निबंध लेखन-2020 / शीर्षक (शिक्षक ग वर्ग) : 'ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंक'

शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास संभव नहीं

"स्कूल में मस्ती थी
हमारी भी कुछ हस्ती थी।
टीचर का सहारा था
दिल ये आवारा था।
कहाँ आ गए इस कोरोना के चक्कर में
वो स्कूल ही कितना प्यारा था।

स्कूल शब्द अपने आप में ही बहुत भावनात्मक है और यह दूसरी ही दुनियाँ है, जहाँ हम अपना आधा दिन पढ़ते हुए गुजारते हैं। स्कूल में पढ़ने लिखने के अलावा कई तरह की मौज मस्ती, मनोरंजक कार्य जैसे-खेल, नृत्य, संगीत आदि कर पाते हैं।

स्कूल एक ऐसी जगह है जहाँ हमारी चरित्र और व्यक्तित्व को राष्ट्र निर्माण के लिए ढाला जाता है।

समाज के निर्माण में विद्यालय का अहम योगदान है। विद्यालय और शिक्षा के बिना किसी भी राष्ट्र का विकास संभव नहीं है, इसलिए हमारे समाज में विद्यालय एवं विद्यालय में काम करने वाले शिक्षकों को अहम स्थान प्राप्त है।

शिक्षा लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। सुनामी हो या कोरोना पढ़ने – पढ़ाने का सिलसिला हमेशा जारी रहेगा। कोरोना काल में ऑनलाइन माध्यम ने साथ दिया। ऑनलाइन



श्रीमती एस. अनीता

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-1, कल्पाक्कम

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

निबंध लेखन-2020/ शीर्षक (शिक्षक ग वर्ग) : 'ऑनलाइन शिक्षा विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंक'

अध्यापन शिक्षा का एक आधुनिक डिजिटल तरीका है जहाँ पर शिक्षक और छात्र उपकरणों जैसे लैपटॉप, टैब, स्मार्टफोन आदि अन्य का उपयोग कर एक-दूसरे से संवाद स्थापित कर सकते हैं। अध्ययन की यह प्रणाली इन दिनों काफी प्रचलित है।

कोविड -19 महामारी को देखते हुए विद्यालयों ने ऑनलाइन अध्ययन को अपनाया है और इस प्रक्रिया को काफी हद तक सफल भी पाया है।

आज दुनिया के अधिकांश देशों में ऑनलाइन शिक्षा का उपयोग करके विद्यार्थी आसानी से पढ़ाई कर पा रहे हैं। शिक्षक स्काईप, जूम आदि ऐप के जरिये विडियो कॉल करते हैं और बच्चे लैपटॉप, कंप्यूटर और मोबाइल स्क्रीन पर शिक्षक को देख - सुन सकने के अलावा अपने प्रश्न भी कर सकते हैं।

इंटरनेट की सहज उपलब्धता ने ऑनलाइन शिक्षा को और भी लोकप्रिय बना दिया है। आज की वर्तमान स्थिति में ऑनलाइन शिक्षा ने शिक्षा प्राप्त करने का रास्ता काफी आसान कर दिया है। बच्चे निश्चिन्त होकर घर पर अपनी पढ़ाई पूरी कर पा रहे हैं।

वर्तमान ऑनलाइन अध्ययन

ऑनलाइन क्लासेस के बाद भी बच्चे ऑफलाइन नहीं हो पाते। खाते-पीते, उठते-सोते मोबाइल के साथ उनका रिश्ता और मजबूत हो गया है। अब बच्चे ऑनलाइन लर्निंग प्रोग्राम करके अपना मनपसंद करियर बना सकते हैं। उनके पास पूरी दुनिया के विश्वविद्यालयों द्वारा उपलब्ध प्रोग्राम्स और कोर्स की विशाल रेंज का विकल्प मौजूद है।

ऑनलाइन प्रोग्राम के खर्चे बहुत ही कम होते हैं। इससे यात्रा के समय की बचत के साथ-साथ पैसे की बचत भी होती है। शिक्षक छात्र के सीखने के अनुभव को बढ़ाते हुए कार्यक्रमों को फ्लैश कार्ड और गेम प्रस्तुत करते हैं जो वे रेगुलर क्लासेस में नहीं कर पाते।

छात्र अपनी ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर उसे कक्षा के

बाद पुनः सुन सकते हैं और कंसेप्ट को अच्छे से समझ सकते हैं।

ऑनलाइन क्लासेस में बच्चों के साथ, घर के बड़े भी शिक्षकों को सुन सकते हैं। इसीलिए शिक्षक और अधिक जिम्मेदारी से पढ़ाते हैं। शिक्षकों की कोशिश होती है कि वह बेहतरीन टूल्स का इस्तेमाल करें ताकि बच्चों को सीखने में आसानी हो।

जो छात्र काम करते हुए पढ़ना चाहते हैं उनके लिए ऑनलाइन शिक्षा एक बढ़िया विकल्प है। वे काम करते हुए या घर की देखभाल करते हुए अपनी पढ़ाई जारी रख सकते हैं।

ऑनलाइन शिक्षा छात्रों के लिए कितनी अच्छी?

सुविधाजनक : ऑनलाइन शिक्षा में जुड़ने के लिए एक अच्छे डिवाइस और इंटरनेट की आवश्यकता होती है।

सस्ता: ऑनलाइन शिक्षा के लिए छात्र को बाहर जाना नहीं पड़ता इसलिए ट्रांसपोर्ट का खर्चा नहीं होता। पुस्तकें भी हमें डाउनलोड करके मिल जाती है। इसमें केवल इंटरनेट का पैसा ही खर्च होता है।

सुरक्षित: ऑनलाइन शिक्षा इस महामारी में छात्रों के लिए एक वरदान है। यह एक सुरक्षित विकल्प है। घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

कम पेपर का इस्तेमाल: क्लासरूम की अपेक्षा डिजिटल शिक्षा से अध्ययन करने में पेपर का उपयोग कम है।

ऑनलाइन शिक्षा के अनेक फायदों के बावजूद इसके कुछ नुकसान भी हैं। ऑनलाइन कक्षा में छात्र इलेक्ट्रॉनिक गजेट्स का प्रयोग करते हैं। छात्र इन स्क्रीन को तीन या चार घंटे लगातार देखते हैं जिससे छात्रों में स्वास्थ्य संबंधी समस्या देखने को मिलती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी इंटरनेट की सुविधा इतनी अच्छी नहीं है। साथ ही गरीब माता-पिता पर स्मार्ट मोबाइल खरीदना एक बोझ के समान होता है।

कुल मिलाकर देखा जाए तो ऑनलाइन शिक्षा एक बढ़िया माध्यम है जिसमें विद्यार्थी बेहतर शिक्षा प्राप्त करके अपने परिवार व देश का नाम रोशन कर सकते हैं।



निबंध लेखन-2020 / शीर्षक (गैर-शिक्षक क वर्ग) : 'सोशल मीडिया'

सोशल मीडिया उपयोगकर्ता के अनुशासन और नियंत्रण को सुदृढ़ किया जाए तो ...

प्रस्तावना

सोशल मीडिया एक ऐसा मीडिया है जो बाकी सारे मीडिया जैसे प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि के समानान्तर एक अलग मीडिया है। सोशल मीडिया इंटरनेट ऑनलाइन के माध्यम से एक वर्चुअल संसार है जिसका उपयोगकर्ता सोशल मीडिया के किसी भी प्लेटफॉर्म जैसे- ट्विटर, फेसबुक, स्नेपचैट, हाईक, मैसेन्जर आदि का उपयोग कर सकता है। इसमें फेसबुक और ट्विटर सर्वाधिक प्रयोग किए जाते हैं।

सोशल मीडिया का महत्व

आज संसार को सोशल मीडिया ने अधिक सुलभ बना दिया है। इंटरनेट के माध्यम से सोशल मीडिया उपयोगकर्ता संसार भर की खबरों को पल भर में जान सकता है और अपनी बात को पूरे विश्व को शेयर कर सकता है।

सोशल मीडिया का योगदान

सोशल मीडिया अपरांपरागत एक विशाल संसार का नेटवर्क है। इस सोशल मीडिया नेटवर्क ने विशाल विश्व को सूक्ष्म बना दिया है। संगणक और ऐण्ड्रॉइड फोन ने फेसबुक और ट्विटर आदि के उपयोग को लगभग सभी हाथों में पहुंचा दिया है। इसके अलावा कम खर्च में विज्ञापन की दुनिया सोशल मीडिया पर फल-फूल रही है।



श्री रमेश तिलवे

वरिष्ठ लिपिक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-2, रावतभाटा



विकास कार्य में योगदान

बहुत से क्षेत्रों में सोशल मीडिया का उपयोग सकारात्मक कार्यों में किया जा रहा है। जैसे कोई मुसीबत में होने पर ट्विटर के माध्यम से रेल मंत्री से सहायता प्राप्त करता है तो कोई अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन इन सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर करता है।

सोशल मीडिया और लोकतंत्र

संसार के विभिन्न देशों में जहाँ लोकतांत्रिक सरकारें हैं वहाँ सोशल मीडिया का उपयोग राजनीतिक पार्टियों द्वारा प्रचार के लिए भी किया जाता है। भारत जैसा विशाल लोकतंत्र का चुनाव प्रचार भी इससे अछूता नहीं है।

सोशल मीडिया और आंदोलन

जन पहुँच का सरल और सहज माध्यम होने के कारण इन दिनों जन आंदोलनों पर भी सोशल मीडिया का काफी प्रभाव होता है। जन आंदोलनों के सोशल मीडिया पर आने से देश के युवाओं का जुड़ाव आसान हो जाता है। जैसे समाज सेवी अन्ना हजारे द्वारा शुरू किए गए "इंडिया अंगेस्ट करप्शन" आंदोलन में काफी बड़ी संख्या में युवा जुड़े। निश्चित ही आज के दौर में जन आंदोलनों के लिए सोशल मीडिया की शक्ति को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

सोशल मीडिया के नुकसान

- (1) लोग अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार अपनी पसंद के माध्यमों का चुनाव करते हैं। जैसा कि कहा गया है "अति हमेशा बुरी होती है" तो सोशल मीडिया भी इससे अलग नहीं है। लोग जितना सोशल मीडिया से करीब आ रहे हैं, उतना ही समाज से दूर हो रहे हैं।
- (2) सोशल मीडिया और वास्तविकता में अंतर करना मुश्किल हो रहा है।
- (3) युवा पीढ़ी सोशल मीडिया पर ज्यादा और आस-पास की दुनिया से बेखबर हो रही है।

- (4) कई बार बिना किसी उद्देश्य के समय की बर्बादी ज्यादा दिखती है।
- (5) कई बार तथ्यों की जानकारी के आभाव में अफवाहों को सत्य मान लिया जाता है जो सभ्य समाज के लिए कदापि उचित नहीं है।
- (6) कुछ शरारती तत्व सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की निजी और गोपनीय जानकारी को चुरा लेते हैं और उनका गलत उपयोग करते हैं।

उपसंहार

जैसा कि जीवन में देखने को मिलता है प्रत्येक चीज के अपने फायदे-नुकसान होते हैं। सोशल मीडिया के मामले में यह कहा जा सकता है कि इसके फायदे अधिक और नुकसान कम हैं। यदि समझदारी से इसका उपयोग किया जाए तो इन नुकसानों से भी बचा जा सकता है। बहरहाल, यदि इसके व्यापक प्रभाव को इससे समझा जा सकता है कि राजनीतिक, सामाजिक, कला क्षेत्र की अनेक हस्तियाँ जो आज शीर्ष पर हैं, वे सोशल मीडिया का ही उत्पाद हैं। किफायती होने के कारण विज्ञापन का एक बहुत बड़ा हिस्सा आज सोशल मीडिया पर मौजूद है। पहुँच बढ़ने के साथ-साथ यदि सोशल मीडिया उपयोगकर्ता के अनुशासन और नियंत्रण को सुदृढ़ किया जाए तो इसके बहुत से नकारात्मक पहलुओं को दूर किया जा सकता है। नफरत फैलाने वाली सामग्री को बिल्कुल स्वीकार्य नहीं किया जा सकता है अतः इसे रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाये जाएं। इसके लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर कड़े नियम और प्रतिबंध जैसी कार्रवाई पर विचार किया जाना चाहिए। लोगों की निजी और गोपनीय जानकारियों की सुरक्षा सुनिश्चित होनी चाहिए। साइबर अपराधों को रोकने के लिए हर जरूरी साइबर कानून बनाया और लागू किया जाए।



निबंध लेखन-2020 / शीर्षक (गैर-शिक्षक ख वर्ग) : 'सोशल मीडिया'

वास्तविकता से दूर सपनों की दुनिया में ...

मानव निर्मित अनूठी माया रूपी दुनिया, जिसका नाम "सोशल मीडिया" इस माया रूपी संसार में एक और माया रूपी संसार का आश्चर्यजनक अवतरण सोशल मीडिया है। इसका क्षेत्र व्यापक है। आज की इस आधुनिक और डिजिटल दुनिया में शायद ही कोई ऐसा होगा जो सोशल मीडिया से परिचित नहीं होगा। सोशल मीडिया नेटवर्किंग केवल किशोरों तक सीमित नहीं है, बल्कि बच्चे-बूढ़े भी इसमें सक्रिय हैं।

यह एक ऐसा मंच है जहाँ दुनियाभर के लोग एक जगह इकट्ठा होते हैं जहाँ हर छोटी-बड़ी बात आपस में शेयर की जाती है। सोशल मीडिया मानो मानव के हाथ में एक दिव्य-दृष्टि मिल गई है। एक ही जगह बैठे-बैठे पूरी दुनिया से घूम आते हैं। वास्तव में मानव में अब दो रूप धारण किए हुए हैं- एक भौतिक और दूसरा डिजिटल। दुनिया इसमें गजब का ताल-मेल बना कर जी रही है। लेकिन हर फायदेमंद चीज के कुछ नुकसान भी होते हैं। यहाँ इंसान की स्वयं की जिम्मेदारी है कि वह इसका उपयोग कैसे करता है। दोस्ती, मस्ती की सोशल नेटवर्किंग साइटों से शुरू हुआ सफर ऑरकुट से होता हुआ यूट्यूब, ट्विटर, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, टिक-टोक, व्हाट्सएप तक आ गया है। तमाम बदलावों के साथ सोशल मीडिया ने निरंतर लोकप्रियता हासिल की है।

सोशल मीडिया ने मानव के बीच भौतिक दूरियाँ तो कम की ही हैं, अपने मित्रों और परिजनों के बीच संपर्क का आसान और सस्ता माध्यम हो गया है। इसकी यही खूबी इसे शाक्तिशाली माध्यम का दर्जा देती है। वास्तव में यदि इसका विवेकपूर्ण सदुपयोग किया जाए तो इसके परिणाम हितकारी होते हैं। दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ लोग इस माध्यम का दुरुपयोग करते हैं और दूसरों के लिए समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। निजी जानकारियों से छेड़छाड़, साइबर धोकाधड़ी, गोपनीय जानकारियों की चोरी आदि कुछ ही कुछ दुरुपयोग के उदाहरण हैं।



श्री महेश वालेन्द

प्रयोगशाला सहायक

परमाणु ऊर्जा कनिष्ठ महाविद्यालय, मुंबई

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

निबंध लेखन-2020/ शीर्षक (गैर-शिक्षक ख वर्ग) : 'सोशल मीडिया'



वही, युवाओं की अत्यधिक सोशल मीडिया पर व्यस्तता, उन्हें समाज से दूर ले जा रही है। आभासी सोशल मीडिया की रंगीन पिक्चर वास्तविक जीवन की ब्लैक एंड व्हाइट पिक्चर को छिपा रही है। वास्तव में सोशल मीडिया आभासी दुनिया में जी रही है। नवयुवकों की सोशल मीडिया जीवन सुबह से शुरू होकर देर रात तक चलता है। नौजवान जीवन की वास्तविकता से दूर सपनों की दुनिया में डूबे रहते हैं। उनके जीवन की खुशियाँ सोशल मीडिया लाइक्स, व्यू और शेयर पर निर्भर हैं।

यह उनके स्वास्थ्य और कैरियर दोनों के लिए अहितकर है। युवा पीढ़ी को इससे शीघ्रताशीघ्र समझना चाहिए और अपना महत्वपूर्ण समय जितना आवश्यक हो उतना ही सोशल नेटवर्किंग में खर्च करना चाहिए। यहाँ माता-पिता और अभिभावकों की भी जिम्मेदारी बनती है कि वह अपने बच्चों का निरंतर मार्गदर्शन करते रहें।

सोशल मीडिया के उभरते पहलु अर्थात विज्ञापन की बात करें तो यह निःसंदेह लोगों तक संदेश पहुंचाने का एक सरल और सस्ता माध्यम है। उत्पाद, सेवाओं, कारोबार के प्रचार-प्रसार के लिए सोशल मीडिया का उपयोग खूब किया जा रहा है। कैरियर के लिए लिंकडइन जैसी साइट है तो बिज़नेस के लिए समर्पित साइट भी हैं।

युवा अपनी शिक्षा से संबंधित मुद्दों के लिए भी सोशल मीडिया का बेहतरीन उपयोग कर रहे हैं। यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि कोविड-19 वैश्विक महामारी के कठिन समय में सोशल मीडिया एक सच्चे मित्र की भाँति लोगों के लिए उपलब्ध रहा जिसने एकांतवास जैसी स्थिति को भी आसानी से गुजार दिया। सार रूप में कहा जाए तो सोशल मीडिया का विवेकपूर्ण उपयोग किया जाए तो मानव के लिए यह एक वरदान से कम नहीं है। उचित उपयोग निःसंदेह सफलता की कुंजी हो सकती है।



निबंध लेखन-2020 / शीर्षक (गैर-शिक्षक ग वर्ग) : 'सोशल मीडिया'

स्पष्ट नीति सोशल मीडिया के लिए समय की मांग ...

सामान्य शब्दों में, सोशल मीडिया को फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, लिंकडइन इत्यादि के समानार्थी के रूप में देखा जाता है। हालांकि, सोशल मीडिया इससे परे है और इसका क्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। यह उन वेबसाइटों और अनुप्रयोगों को संदर्भित करता है जो उपयोगकर्ताओं को सृजन करने, विषय-वस्तु साझा करने, परस्पर वार्ता करने और सोशल नेटवर्किंग में भाग लेने में सक्षम बनाता है।

सोशल मीडिया आज हमारे जीवन में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है। सोशल मीडिया आजकल सभी लोगों का बहुत ही दिलचस्प मनोरंजन का साधन बना हुआ है। लोग अपने परिवार, रिश्तेदार आदि सभी से इसके जरिए जुड़े रहते हैं और इसका लुप्त उठाते हैं। एक बटन दबाने पर ही हमारे पास अत्यंत विस्तृत संबंधित सकारात्मक और नकारात्मक किसी भी प्रकार की जानकारी पहुंच जाती है। जो कुछ भी हमें जानना होता है उसे बस एक क्लिक या एक बटन दबाकर प्राप्त कर सकते हैं। हम इस सच्चाई को अनदेखा नहीं कर सकते कि सोशल मीडिया आज हमारे जीवन में मौजूद बड़े और आकर्षक तत्वों में से एक है। सोशल मीडिया को 21वीं शताब्दी की मूक क्रांति के रूप में वर्णित किया गया है। वर्तमान में सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं की कुल संख्या तीन बिलियन से भी अधिक हो चुकी है जिसमें भविष्य में और अधिक वृद्धि होने का अनुमान है।

सोशल मीडिया एक बहुत ही सशक्त माध्यम है और इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर पड़ता है। पृथ्वी पर फैली कोविड-19 महामारी के इस मुश्किल दौर में तों सोशल मीडिया के बिना हमारे जीवन का कल्पना करना भी मुश्किल हो गया है। कुछ लोगों का तो यहाँ तक मानना है कि यदि



श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन

निजी सहायक

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

आप डिजिटल रूप में उपस्थित नहीं हैं, तो आपका अस्तित्व पूर्ण नहीं है।

सोशल मीडिया के विषय में इन दिनों बहुत बातें हो रही हैं। सोशल मीडिया अच्छा है या बुरा इस पर काफी बहस चल रही है। यह हमारे ऊपर है कि हम इसे सही तरीके से पढ़ें, समझें और निष्कर्ष तक पहुंचें। अगर बुद्धिमानी से इसका उपयोग किया जाये तो यह बेहद प्रभावी हो सकती है। सोशल मीडिया को अच्छा या बुरा कहने के बजाय, हमें अपने लाभ के लिए इसका उपयोग करने के तरीके को खोजना चाहिए। यह सवाल अभी भी बना हुआ है हमारे लाभ के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कैसे किया जा सकता है।

सोशल मीडिया के फायदे

1. शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया का महत्व: आजकल यूट्यूब पर शिक्षा एवं ज्ञान के लिए अनेक प्रकार के ज्ञानवर्धक चैनल चलाए जा रहे हैं जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति किसी भी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ अपना ज्ञान दूसरों में भी बांट सकता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि सोशल मीडिया शिक्षा के क्षेत्र में एक बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और छात्रों के बीच ये अधिक लोकप्रिय है। शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया के का महत्व—

- व्याख्यानों का सीधा प्रसारण
- सूचना का सहज आदान-प्रदान
- शिक्षा कार्य में आसानी
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर ई-कक्षाएँ
- शिक्षा में अधिक रोचकता
- शिक्षण ब्लॉग और लेखन
- सोशल मीडिया अपराध के विरुद्ध सरकार की मददगार
- प्रदर्शन का स्वतंत्र मंच
- व्यवसाय का नया माध्यम
- विज्ञापन, प्रचार-प्रसार का माध्यम
- बृहत सामाजिक नेटवर्क

• रोजगार सर्च का माध्यम

सोशल मीडिया के नुकसान

आंकड़ों के मुताबिक सबसे ज्यादा युवाओं द्वारा सोशल मीडिया का उपयोग किया जाता है। सोशल मीडिया के अति उपयोग से निम्नलिखित कुछ नुकसान भी हो रहे हैं—

- अब हमारे पास वास्तविक मित्रों की तुलना में आभासी मित्र अधिक होते जा रहे हैं और हम दिन प्रतिदिन एक-दूसरे से संबंध खोते जा रहे हैं।
- बच्चों में खराब मानसिक विकास का भी कारण बनते जा रहा है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग निद्रा को प्रभावित करता है।
- उपयोगकर्ता हैकिंग, आइडेंटिटी की चोरी, फिशिंग अपराध इत्यादि जैसे साइबर अपराध बढ़ रहे हैं।
- सोशल मीडिया का लंबे समय तक उपयोग, युवाओं में इसके लत का कारण बन सकता है।
- हनीट्रैप्स और अश्लील एमएमएस के केस बढ़े हैं।
- सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण लोग सामाजिक और पारिवारिक जीवन से दूर, फोन जैसे उपकरणों में व्यस्त हो रहे हैं।

सोशल मीडिया मानव के लिए वरदान बना रह सकता है यदि इसका संतुलित और सकारात्मक उपयोग किया जाए। यह शिक्षा की बेहतरी और छात्रों के लिए मददगार बन सकता है। इसके साथ-साथ निजता के कानूनों को सुदृढ़ करने, बेहतर कानून प्रवर्तन और सोशल मीडिया साइटों और एप्लीकेशन के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया के संभावित दुरुपयोगों के सम्बन्ध में जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता है। सरकार की स्पष्ट नीति सोशल मीडिया के लिए समय की मांग है ताकि इसका दुरुपयोग भारत के विरुद्ध षड्यंत्र करने और राष्ट्र-विरोधी प्रचार करने के लिए नहीं किया जा सके।



निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'शिक्षण सहायक सामग्री'

रचनात्मकता आज के समय की मांग ...

“शिक्षा का कुछ ऐसा असर हो,
ऊँचा अपना सर हो,
वर्तमान की सीमाओं से परे
कुछ नया कर गुजर जाएँ हम
चलो शिक्षा को रुचिकर बनाएँ हम।”



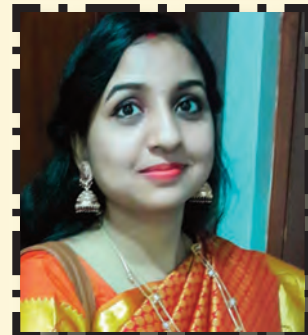
“शिक्षा को रोचक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए शिक्षक विभिन्न तकनीकों एवं उपकरणों का प्रयोग करते हैं, इन्हीं तकनीकों एवं उपकरणों को शिक्षण सहायक सामग्री कहते हैं।” शिक्षण का अर्थ है विद्यार्थियों को अधिगम कराना

अर्थात् सिखाना।

अधिगम की प्रक्रिया में अध्यापक स्वयं ही बड़ी शिक्षण सहायक सामग्री होता है जो अपने ज्ञान, अनुभव, व्यवहार, हाव-भाव एवं अपने शिक्षण कौशल से बच्चों के जीवन में अमिट छाप छोड़ जाते हैं। जिस प्रकार फूलों से बाग की शोभा बढ़ती है उसी प्रकार शिक्षण सहायक सामग्री का सही प्रयोग करके शिक्षण की प्रक्रिया को रुचिकर बनाया जा सकता है।

शिक्षण सहायक सामग्री का प्रभाव

अध्यापन अधिगम की जो प्रक्रिया है उसे सरल एवं प्रभावकारी



सुश्री रीना

प्राथमिक शिक्षिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय, अणुपुरम

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'शिक्षण सहायक सामग्री'



व रुचिकर बनाने के लिए शिक्षक विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग करते हैं जिससे शिक्षक को कठिन से कठिन विषय का अध्यापन करने में आसानी हो। विद्यार्थी अधिक क्रियाशील बनते हैं और समय की बचत होती है क्योंकि बच्चे देखकर जल्दी सीख जाते हैं।

शिक्षण सहायक सामग्री ऐसे अनेक उद्देश्यों को पूरा कर सकती है जिससे की छात्रों की क्रियाशील बनाने के साथ-साथ उनमें रुचि जागृत भी की जा सकती है।

- पाठ को रुचिकर बनाना
- विद्यार्थियों को अधिक क्रियाशील बनाना
- सीखने की गति में सुधार करना
- जटिल विषयों को सरल बनाना
- अध्यापन में नवीनता लाना
- निरीक्षण शक्ति का विकास करना
- विद्यार्थियों की क्षमता अनुरूप शिक्षा देना

शिक्षण सहायक सामग्री की उपयोगिता

कोई भी ऐसी सामग्री जिसके माध्यम से शिक्षण प्रक्रिया को उद्दीप्त किया जा सके अथवा श्रवणेन्द्रिय संवेदनाओं के द्वारा आगे बढ़ाया जा सके वह शिक्षण सहायक सामग्री कहलाती है। शिक्षा के स्तर को उठाने के लिए शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग आज के समय की आवश्यकता है। यह विचारों को प्रवाहात्मकता प्रदान करने के साथ-साथ अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर बनाती है। धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिए एवं अधिगम के प्रति नीरस हो चुके बच्चों में शिक्षण के प्रति रुचि का विकास करती है। अध्यापन रुचिकर होने पर छात्र भी सक्रिय और क्रियाशील रहते हैं और पाठ को अधिक सरलता से ग्रहण करते हैं। शिक्षा के स्तर को ऊँचा करके

देश को उन्नति के शिखर पर पहुँचाया जा सकता है। शिक्षा में अपेक्षित बदलावों के लिए शिक्षक, विद्यार्थी और माता-पिता सभी को सकारात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

महात्मा गाँधी ने भी कहा है—

“खुद वो बदलाव बनिए,

जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।”

अच्छी शिक्षण सहायक सामग्री की विशेषताएँ:—

- शिक्षण प्रक्रिया में नवीनता लाए।
- बच्चों की समग्र भागीदारी सुनिश्चित करें।
- अधिगम को रुचिकर बनाए।
- ज्ञानेंद्रियों का विकास करे।
- नीरसता हटाकर कक्षा में सक्रियता लाए।
- जटिलता को सरलता में बदले।
- रटने के बजाय वास्तविक ज्ञान पर बल दे।

शिक्षण सहायक सामग्री का प्रकार—

1. श्रव्य सामग्री:

- मौखिक उदारण
- रेडियो
- टेप रिकार्डर
- ग्रामोफोन
- लिंग्वाफोन
- डिक्टाफोन
- फोनोग्राफ

2. दृश्य सामग्री:

- श्यामपट्ट
- बुलेटिन बोर्ड
- फ्लैटबोर्ड



- मानचित्र
- ग्लोब
- चित्र / रेखाचित्र
- मॉडल
- पोस्टर
- स्लाइड्स, फिल्म आदि

3. श्रव्य-दृश्य सामग्री:

- चलचित्र
- नाटक
- कठपुतली
- टेलीविजन
- कंप्यूटर
- प्रोजेक्टर

एक शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में कंप्यूटर:

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के अधिगम हेतु उनके विषयों से संबंधित पाठ्य सामग्री को कंप्यूटर की सहायता से पढ़ाया जा रहा है। वर्तमान अध्ययन-अध्यापन में यह बहुत ही सशक्त और लोकप्रिय टूल है। शिक्षा में कंप्यूटर के समावेशन से क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिले हैं।

क्रियात्मक साधन:

शिक्षण सहायक सामग्री का चुनाव इस प्रकार होना चाहिए जो अभ्यास पर जोर दे और अनुभव आधारित शिक्षण प्रदान करे। क्रियात्मक साधनों का प्रयोग करके बच्चों को खेल-खेल में अधिगम कराया जा सकता है।

उदाहरण: रोल प्ले, मेले, प्रदर्शनियाँ, भ्रमण, प्रयोगशाला आदि

त्रि-आयामी सामग्री:

त्रि-आयामी सामग्री से अभिप्राय ऐसी सामग्री से है जिसमें तीन आयाम हों और जिसे बच्चा देख व छूकर संकल्पना का समझ सके।

उदाहरण: मॉडल, गणित की ठोस आकृतियाँ, वास्तविक पदार्थ आदि

तकनीक के आधार पर शिक्षण सहायक सामग्री:

सॉफ्टवेयर:

सॉफ्टवेयर के अंतर्गत स्लाइड, फिल्म, चित्र, चार्ट, मानचित्र फोटोग्राफ, ऐप आदि आते हैं जिनके प्रयोग से ज्ञान को स्थायी एवं अधिगम को रुचिकर बनाया जा सकता है।

हार्डवेयर:

इसमें रेडियो, टेलीविजन, कंप्यूटर आदि आते हैं। इनकी उपयोगिता सर्व ज्ञात है।

प्रक्षेपण के आधार पर शिक्षण सहायक सामग्री:

प्रक्षेपण के आधार पर शिक्षण सहायक सामग्री दो प्रकार की होती है—

प्रक्षेपी सामग्री और अप्रक्षेपी सामग्री

प्रक्षेपी सामग्री में एपिडियास्कोप, स्लाइड प्रोजेक्टर, जादू की लालटेन आदि आते हैं। प्रक्षेपी सामग्री के अलावा शेष सामग्री को अप्रक्षेपी सामग्री में सम्मिलित किया जाता है।

शिक्षण सहायक सामग्री प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें:

कोठारी आयोग (1964-66) ने अपनी रिपोर्ट में बताया कि शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए प्रत्येक विद्यालय में सहायक सामग्री उपलब्ध कराना अति आवश्यक है। किंतु महत्वपूर्ण है कि शिक्षण सहायक सामग्री का समुचित प्रयोग

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

निबंध लेखन-2021/शीर्षक (शिक्षक क वर्ग) : 'शिक्षण सहायक सामग्री'



किया जाए। यह सामग्री पाठ्य-वस्तु से संबंधित होनी चाहिए और अनावश्यक सामग्री का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। जो भी सामग्री प्रयोग में लायी जाने वाली है वह सही हालत में होनी चाहिए और उपयोग से पूर्व शिक्षक द्वारा एक बार उसका अभ्यास कर लेना चाहिए। साथ ही सामग्री छात्रों के अनुभव, समझ, आयु के अनुसार होनी चाहिए। उदाहरण के लिए पहली कक्षा के बच्चों को शरीर के अंगों के नाम सिखाने के लिए पाचन तंत्र के चित्र का प्रयोग अनुचित होगा। यह भी ध्यान रखा जाना चाहिए कि शिक्षण सहायक सामग्री बच्चों के लिए मनोरंजक होने के साथ-साथ शिक्षण प्रक्रिया के लक्ष्य को पूरा करती हो।

पठन-पाठन और याद रहने के संबंध में एडगर डेल का मत-

पढ़ना : 10:

सुनना : 20:

चित्र/विडियो देखना: 30:

प्रदर्शनी/प्रदर्शन : 50:

कार्यशाला में भाग लेना/पाठ को लिखना: 70:

करके सीखना (मॉडल बनाना) : 90:

शिक्षण सहायक सामग्री के संबंध में रचनात्मक सुझाव:

रचनात्मकता आज के समय की मांग और आवश्यकता है। छोटी-छोटी चीजों जैसे कागज के प्रयोग और बेकार पड़ी चीजों से अनेक उपयोगी और आकर्षक सामग्री तैयार की जा सकती हैं। इसके आलावा अपने परिवेश/वातावरण से भी शिक्षण सहायक सामग्री का चयन किया जा सकता है। बच्चों

में अभिनय और अभिव्यक्ति कौशल को निखारा जा सकता है। शिक्षा में ज्यादा से ज्यादा नवीनता को अपनाने का प्रयास होना चाहिए।

उपसंहार:

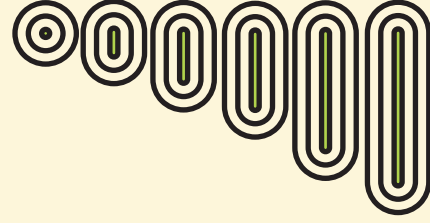
यदि हमें अपने शिक्षण को सार्थक बनाना है तो छात्रों की क्रियाशीलता और सहभागिता बढ़ानी होगी और कक्षा-कक्ष को रुचिकर एवं सक्रिय बनाना होगा। इससे शिक्षण को बेहतर किया जा सकता है और निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सकती है।

नवीनता का करके समागम,
आओ, अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर बनायें हम!





निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (शिक्षक ख वर्ग) : 'शिक्षण सहायक सामग्री'



शिक्षण सहायक सामग्री उपयोगी, कौतूहलपूर्ण और स्पष्ट हो...

प्रस्तावना

शिक्षण अधिगम के दौरान कभी-कभी पाठ्यपुस्तकों में दी गई संक्षिप्त जानकारी के आधार पर शिक्षक अपने विद्यार्थियों को विषय-वस्तु की संपूर्ण जानकारी नहीं दे पाते हैं। इसलिए शिक्षक को अतिरिक्त संदर्भ सामग्री एवं सहायक सामग्री की



आवश्यकता होती है। विषय-वस्तु से संबंधित अतिरिक्त जानकारी देकर शिक्षक विद्यार्थियों के अधिगम को स्थायित्व प्रदान कर सकता है। विद्यार्थी भी शिक्षण सहायक सामग्री व अतिरिक्त संसाधनों के द्वारा अपने पूर्व ज्ञान से संबंध स्थापित करके वर्तमान पाठ्य सामग्री को अधिक गुणवत्तापूर्ण तरीके से समझ सकते हैं। पाठ्य-पुस्तकों में कक्षा के स्तर को ध्यान में रखकर ही अध्ययन सामग्री को समाहित किया जाता है। पाठ्य-पुस्तक में विषय-वस्तु से संबंधित सभी जानकारियों, चित्र, आरेख आदि को शामिल किया जाना संभव नहीं हो पाता है, हालांकि वर्तमान में पाठ्य-पुस्तकों में कोड के माध्यम



श्री सतीश एम. मेश्राम

प्राथमिक शिक्षक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-4, मुंबई

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (शिक्षक ख वर्ग) : 'शिक्षण सहायक सामग्री'

से डिजिटल सामग्री डाली है लेकिन वह सामग्री शिक्षण में सहयोग नहीं कर पाती, केवल शिक्षार्थी व्यक्तिगत रूप से उसका उपयोग कर सकते हैं।

शिक्षण प्रक्रिया में दो प्रकार की सामग्री उपयोग में ली जाती है।

- 1) पठन सामग्री
- 2) शिक्षण अधिगम / सहायक सामग्री

शिक्षण – अधिगम सामग्री:

शिक्षण – अधिगम सामग्री वे साधन हैं जिनके द्वारा छात्रों के लिए कठिन विषयों को सरल, स्पष्ट एवं रोचक बनाया जाता है। इसके प्रयोग से छात्रों को पाठ्य-वस्तु की ओर आकर्षित कर अध्ययन में सक्रिय बनाया जाता है। कोई भी वस्तु या सामग्री जो शिक्षा को सरल, सुगम, आकर्षक, हृदयग्राही और बोधगम्य बनाती है वह शिक्षा को "शिक्षण अधिगम सामग्री" काही जाती है। शिक्षण अधिगम/ सहायक सामग्री वह सहायक सामग्री है जो विषय-वस्तु को रोचक, सरल और अभिप्रेरक उपक्रम के रूप में उद्दीपन कराने का कार्य करने और बालक में पाठ के प्रति अधिक रुचि उत्पन्न करने तथा स्थायी रूप उसे ग्रहण कराने में समर्थ होती है।

शिक्षण सहायक सामग्री की आवश्यकता एवं महत्व :-

1. शिक्षण – अधिगम सामग्री मौखिक कथन की पूरक होती है।
2. प्रभावी शिक्षण हेतु आवश्यक।
3. सीखे हुए ज्ञान को स्थायी बनाने हेतु।
4. पाठ को रोचक बनाने हेतु।
5. विषय – वस्तु की वास्तविकता एवं वस्तु-स्थिति का परिचय करने हेतु।

6. सूक्ष्म वस्तु को बड़े आकार में व अत्यधिक बड़ी वस्तु तथा परिस्थिति को छोटे आकार में प्रस्तुत कर विषय-वस्तु को स्पष्टता प्रदान करना।

एक अच्छी शिक्षण सहायक सामग्री की विशेषताएँ :-

1. शिक्षण सहायक सामग्री ऐसी हो जो "उद्देश्यों की प्राप्ति" में सहायक हो।
2. शिक्षण सहायक सामग्री नामांकित, सुंदर व आकर्षक हो।
3. शिक्षण सहायक सामग्री का आकार समानुपातिक और अनुकूल हो।
4. शिक्षण सहायक सामग्री उपयोगी, कौतूहलपूर्ण और स्पष्ट हो।
5. शिक्षण सहायक सामग्री द्वारा प्रकट किए जाने वाले तथ्य का भाव स्पष्ट रूप से व्यक्त होने चाहिए।
6. जिस सामग्री को प्रस्तुत किया जाए, उसमें क्रियाएँ दिखाई जानी चाहिए जिसमें बालकों को कुछ संकेत मिलेंगे और शिक्षक भी अपने उद्देश्यों को सिद्ध कर सकेगा।

श्रव्य साधन

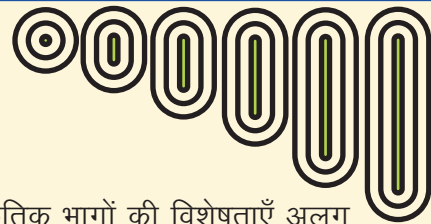
श्रव्य साधन इनका संबंध कानों से होता है। इनसे सुनकर छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं। आजकल स्मार्ट फोन ने लगभग सभी श्रव्य साधनों को आत्मसात कर लिया है। इनमें श्रवण द्वारा सूचनाएँ प्राप्त की जाती हैं। श्रव्य साधन की विशेषता है कि यह श्रोता की काल्पनिक शक्ति को उद्दीप्त करती है। उदाहरण: रेडियो, टेप रिकॉर्डर, ग्रामोफोन तथा लिंगवा फोन ऑडियो कैसेट प्लेयर, सीडी / डीवीडी प्लेयर, मोबाइल आदि।

दृश्य साधन

इनका संबंध नेत्रों से है। श्यामपट्ट, चित्र, मानचित्र, विस्तारक यंत्र आदि दृश्य सहायक शिक्षण सामग्री इस प्रकार में आते



निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (शिक्षक ख वर्ग) : 'शिक्षण सहायक सामग्री'



हैं। इसमें दृश्य इंद्रियों का उपयोग किया जाता है।

उदाहरण: चार्ट, मानचित्र एवं ग्लोब, प्रतिमान, स्लाइड, फिल्म स्ट्रिप तथा फिल्म, ग्राफ, चित्र एवं रेखाचित्र, पत्र पत्रिकाएँ, पलैश काइस, श्यामपट्ट, बुलेटिन बोर्ड, पलेनल बोर्ड, वास्तविक पदार्थ, समय रेखा, आरेख, व्यंग्य चित्र, पोस्टर, मॉडल, कार्टून एलबम आदि।

श्रव्य – दृश्य साधन

दृश्य-श्रव्य उपकरणों का संबंध छात्रों की आंख एवं कान दोनों से है। इसमें दृश्य इंद्रियाँ एवं श्रवण इंद्रियाँ दोनों का एक साथ प्रयोग करके छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं।

उदाहरण : टेलीविजन, चलचित्र, नाटक, मल्टीमीडिया, समाचार, संवाद सामग्री आदि।

क्रियाकलाप सहायक सामग्री :-

इनके द्वारा प्राप्त ज्ञान वास्तविक होता है। इनके द्वारा नई-नई चीजों का अध्ययन किया जाता है। इससे बालकों को व्यक्तिगत अनुभव की प्राप्ति होती है।

उदाहरण: क्षेत्र भ्रमण, प्रयोग, नाटक, शिक्षण मशीनें, स्कूल का संग्रहालय, विशिष्ट व्यक्तियों का आगमन, शैक्षणिक पर्यटन, त्योहार, मेले, राष्ट्रीय पर्व मनाना आदि।

मौखिक साधन

दृष्टांत, उदाहरण, प्रश्नोत्तर आदि।

प्रक्षेपी साधन-

एपिडास्कोप, ओवर हेड प्रोजेक्टर (ओएचपी), एल.सी.डी. प्रोजेक्टर, स्लाइड प्रोजेक्टर, फिल्म-स्ट्रिप्स आदि।

शिक्षण सहायक सामग्री का उपयोग कैसे करें?

1) कार्डों का उपयोग –

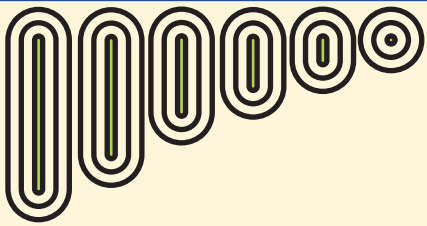
जैसे राजस्थान के समस्त प्राकृतिक भागों की विशेषताएँ अलग अलग कार्डों पर लिख कर मिला दें। प्रत्येक बालक को एक-एक कार्ड बाँट दीजिए। बालकों को निर्देशित करें कि उनके पास जो कार्ड है वो किस प्राकृतिक भाग से संबंधित है तथा उसे अपने अन्य साथियों को ढूँढना है जिनके पास अपने पास के प्राकृतिक भाग की विशेषता बताने वाला कार्ड है।

2) समाचार पत्रों में से समाचार कटिंग से संबंधित प्रश्न पूछना व उनसे संबंधित स्थानों को मानचित्र में ढूँढना।

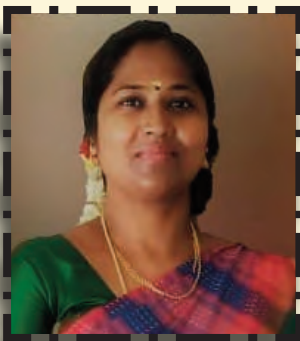
3) विद्यालय भवन का शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में उपयोग – कक्षा कक्ष, बरामदे की दीवारों पर मानचित्र, अभ्यास मानचित्र, पैमाने, गिनती 2-3 फीट की ऊँचाई के अभ्यास हेतु श्यामपट्ट, स्वास्थ्य संबंधी जानकारियाँ, विज्ञान, गणित, अंग्रेजी आदि से संबंधित चार्ट, चित्र आदि बनाए जा सकते हैं।

4) अन्य शिक्षण सहायक सामग्रियों का उपयोग यथासमय पूर्ण कुशलता के साथ करना चाहिए।

आज वही शिक्षक छात्रों के लिए आदर्श होते हैं, और उसी शिक्षक का शिक्षण आदर्श कहलाता है जो अपनी पाठ्य सामग्री को इन रोचक सहायक सामग्री के माध्यम से प्रस्तुत करता है। यह न केवल छात्रों का ध्यान केंद्रित करती हैं बल्कि उन्हें उचित प्रेरणा भी देती हैं। चाहे वह वास्तविक वस्तु हो, चित्र, चार्ट या कोई तकनीकी उपकरण। सभी छात्रों के मस्तिष्क में एक बिम्ब निर्माण करते हैं। हम कह सकते हैं की वर्तमान शिक्षण के अंतर्गत अध्यापन में नवीनता लाने के लिए सहायक सामग्री का प्रयोग आवश्यक है।



“मात्र चॉक और चुनौतियों के सही मिश्रण से, शिक्षक जीवन बदल सकते हैं”



श्री एस. अनीता

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-1, कल्पाक्कम

शिक्षण सहायक सामग्री:

अध्यापन के दौरान पाठ्य-सामग्री को समझाते समय शिक्षक जिन सामग्रियों का प्रयोग करता है वह शिक्षण सहायक सामग्री कहलाता है। इसकी सहायता से अध्ययन को रोचक और प्रभावपूर्ण बना सकते हैं। इनके प्रयोग से शिक्षक अपने अध्यापन के प्रति उत्साहित रहते हैं और परिणाम स्वरूप कक्षा का वातावरण हमेशा सकारात्मक बना रहता है।

शिक्षण सहायक सामग्री न केवल छात्रों का ध्यान केंद्रित करने में सहायक होते हैं, बल्कि उन्हें प्रेरित भी करते हैं। वर्तमान शिक्षण के अंतर्गत अध्यापन में नवीनता लाने के लिए सहायक सामग्री का प्रयोग काफी महत्वपूर्ण है।

शिक्षण सहायक सामग्री को मुख्यतः दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

इन्द्रियाँ आधारित शिक्षण सहायक सामग्री-

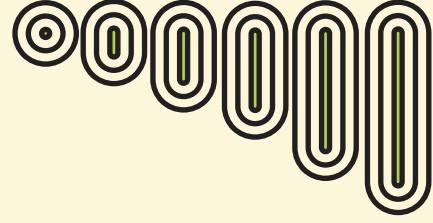
इनके चार प्रकार हैं:

(1) श्रव्य सामग्री:

इस प्रकार में सुनकर सूचना ग्रहण की जाती है। जैसे- रेडियो, टेपरिकार्डर, ग्रामोफोन आदि।

(2) दृश्य सामग्री:

आँखों से देखकर सूचना ग्रहण की जाती है। जैसे-



श्यामपट्ट, चित्र, पत्र-पत्रिकाएँ, मॉडल, नक्शे, चार्ट, ग्राफ, स्लाइड फिल्म आदि

(3) श्रव्य-दृश्य सामग्री:

इन सामग्रियों से बच्चे अधिकतम इन्द्रियों का उपयोग करते हैं। बेहतर अधिगम के लिए सभी इन्द्रियों का उपयोग करना आवश्यक है। इसके कुछ उदाहरण हैं— नाटक, चलचित्र, टेलीविजन, कंप्यूटर आदि

(4) क्रियात्मक साधन:

इस साधन के द्वारा प्राप्त ज्ञान वास्तविक होता है और नई-नई चीजों का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण— किसी ऐतिहासिक स्थान, संग्रहालय, उद्यान का भ्रमण

तकनीक आधारित शिक्षण सहायक सामग्री—

इनके तीन प्रकार हैं:

- (1) सरल हार्डवेयर: ऐपीडोस्कॉप, स्लाइड
- (2) जटिल हार्डवेयर: रेडियो, टेलीविजन
- (3) फिल्म, चित्र, चार्ट आदि

शिक्षण सहायक सामग्री प्रयोग करते समय ध्यान देने योग्य बातें:

- सामग्री का प्रयोग छात्रों के अनुभव, आयु के अनुसार करना चाहिए।
- सामग्री पाठ्य-वस्तु से संबंधित होनी चाहिए।
- सामग्री का चयन करते समय सुनिश्चित किया जाए कि यह छात्रों में विषय के प्रति रुचि जाग्रत करने वाली है।
- अनावश्यक सामग्री का प्रयोग नहीं करना चाहिए।
- जिस शिक्षण सामग्री का प्रयोग किया जा रहा है वह सही हालत में हो।
- सामग्री प्रदर्शन से पहले एक बार उसका परीक्षण अवश्य

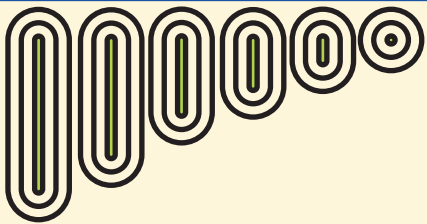
कर लें।

- सामग्री के प्रभावी प्रयोग के लिए सभी संबंधित निर्देशों का पालन किया जाए।
- सामग्री प्रयोग के बाद तुरंत छात्रों के पास से उन्हें हटा लें।

शिक्षण सहायक सामग्री के फायदे:

- यह विषय को स्थायी रूप से सीखने व समझने में सहायक हैं।
- यह अनुभवों द्वारा ज्ञान प्रदान करता है।
- अध्यापन रुचिकर होने से छात्र अधिक सक्रिय बने रहते हैं।
- छात्रों को वस्तुओं को प्रत्यक्ष रूप से देखने, छूने, महसूस करने का अवसर मिलता है।
- वे प्राकृतिक एवं कृत्रिम वस्तुओं के तुलनात्मक भेद का जान पाते हैं।
- पढ़े हुए विषय को आत्मसात करना आसान हो जाता है।
- यह छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देते हैं।
- शिक्षण सहायक सामग्री से अभिप्रेरणा मिलती है।
- सहायक सामग्री डर और भाषा संबंधी कठिनाईयों को दूर करती है।

एक शिक्षक को शिक्षण सहायक सामग्री बनाते या चयन करते समय छात्रों की आयु और समझ को ध्यान में रखना चाहिए तथा क्रिएटिव दृष्टिकोण रखना चाहिए। साथ ही विद्यार्थियों की शिक्षण सुगमता और प्रभावकता हेतु शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग किया जाना चाहिए।



‘खेल आज को बेहतर बनाता है और भविष्य का निर्माण करता है’



श्री अनूप पाठक

प्रयोगशाला सहायक

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-4, रावतभाटा

प्रस्तावना:

भारत का यदि इतिहास खंगाला जाए तो देखेंगे कि यह सुंदर अतुल्य देश हमेशा से ही अन्य देशों की आँख में तिनके की तरह खटकता रहा है और यह स्थिति आज भी जस की तस बनी हुई है।

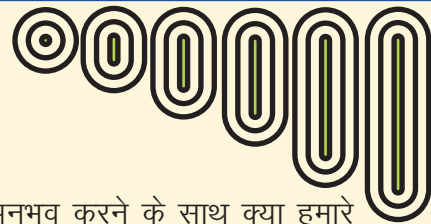
प्रश्न यह उठता है कि आखिर ऐसा क्या है भारत में जो कि यहाँ इतने वीर जन्म लेते हैं, यहाँ तक कि वीरता दिखाने में यहाँ की नारी शक्ति भी पीछे नहीं रहती हैं। यदि इसके पीछे हम कारण ढूँढ़ेंगे तो पायेंगे कि यह सब यहाँ की जीवन शैली की वजह से है। प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों ने योग को दिनचर्या के अभिन्न अंग के रूप में अपनाया और योगिक क्रियाओं को इस प्रकार से विकसित किया कि इसने खेलों का रूप ले लिया जैसे जिमनास्टिक, कुश्ती, मलखम्ब, कबड्डी आदि। यदि हम देखें तो इंग्लैंड एक ठंडा प्रदेश है और वहाँ जब भी सूर्य देव दर्शन देते हैं तो लोगों का उत्साह देखते ही बनता है, लोगों ने धूप का आनंद लेते-लेते क्रिकेट के खेल का विकास कर लिया। इसी प्रकार विभिन्न स्थानों पर विभिन्न तरह के खेलों का विकास होता रहा और अधिक लोकप्रियता वाले खेल विश्व में प्रचलित होते गये।

विषय विस्तार:

खेलों ने भारत को अंतर्राष्ट्रीय पहचान दी है, सचिन तेन्दुलकर को यूनीसेफ ने ब्रैंड एम्बेसेडर भी बनाया जिससे भारत का



निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (गैर-शिक्षक क वर्ग) : 'खेलों में आज का भारत'



विदेशी मुद्रा भंडार व आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई। खेल जगत में मेजर ध्यानचंद, मिल्खा सिंह, के.डी. जाधव जैसे खेलों के पुरोधा हमारे लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। राज्यवर्धन सिंह राठोड़ जैसे खिलाड़ी सरकार का भी हिस्सा रहे।

हमारा देश शुरू से ही ओलंपिक, एशियाड, कॉमन वेल्थ, विंबलडन, सुपर सौकर, फ्रेंच ओपन जैसे सभी प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय खेलों में लम्बे समय से भाग लेता रहा है और इन सभी खेलों में अनेक मैडल भी प्राप्त करता रहा है।

भारत दिन-प्रतिदिन खेल के क्षेत्र में प्रगति करता जा रहा है तथा भारतीय खिलाड़ी राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलों में देश का नाम रोशन कर रहे हैं। क्रिकेट में तो भारत बहुत अच्छे रैंक पर है।

खेलों में युवा शक्ति की प्रतिभा को और निखारने के लिए सी.बी.एस.ई. व भारत सरकार ने विद्यालय स्तर पर खेलों को अनिवार्य किया तथा कक्षा दसवीं के बाद खेल-कूद को एक मुख्य विषय के रूप में पहचान मिली जो भारत को खेल के क्षेत्र में और मजबूत करने के लिए सराहनीय कदम है।

हाल ही में टोक्यो ओलंपिक्स व टोक्यो पैरालंपिक्स में भी भारतीय खिलाड़ियों जैसे नीरज चोपड़ा, मीरा बाई चन्नु, पी. वी. सिंधू, बजरंग पुनिया, रवि कुमार दहिया, भारत की पुरुष व महिला हॉकी टीम ने जैवलिन, कुश्ती, बैडमिंटन, आदि खेलों में स्वर्ण, रजत व कांस्य श्रेणी में मैडल जीत कर देश का मान बढ़ाया। इसी प्रकार टोक्यो पैरालंपिक्स में भी अभूतपूर्व क्षमता का प्रदर्शन करते हुए अविनि लखेश, सुमित अतिल, मनीष नारवाल, प्रमोद भगत, सुहास यथिराज, भाविना पटेल, निषाद कुमार, देवेन्द्र झाझरिया, सुन्दर सिंह गुर्जर आदि ने विभिन्न खेलों में अनेक मैडल प्राप्त कर देश को सम्मान दिलाया।

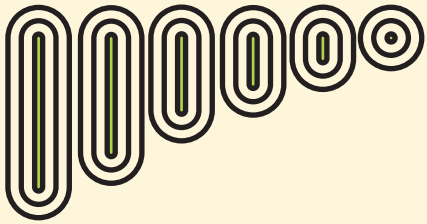
किन्तु आज भी बहुत से देश भारत से बहुत आगे हैं।

इन उपलब्धियों पर गर्व का अनुभव करने के साथ क्या हमारे मन में क्या यह प्रश्न नहीं उत्पन्न होता है कि क्या हमारी यह उपलब्धि काफी है? क्या हम इससे आगे नहीं जा सकते थे? यदि आपके मन में यह प्रश्न उठ रहा है तो इसका उत्तर हाँ में होना चाहिए क्योंकि यह भी एक कटु सत्य है कि हमारे देश में खिलाड़ियों में हुनर तो बहुत है जिसके बूते पर हम सर्वोत्तम प्रदर्शन करने की क्षमता रखते हैं किन्तु हम इस हुनर को निखारने में क्या पूर्णतया सफल रहे हैं? यूं तो कहने के लिए खेलों को बढ़ावा देने वाली बहुत सी योजनाएँ लागू हैं, लेकिन इन योजनाओं का क्रियान्वयन सही तरीके से नहीं हो पाता है जिसका सीधा असर हमारे खिलाड़ियों के प्रदर्शन पर पड़ता है क्योंकि इन योजनाओं का पूर्ण लाभ खिलाड़ियों को नहीं मिल पाता है। इस सबके पीछे गौर करें तो हम पायेंगे कि इसके एक नहीं अनेक कारण हैं। खिलाड़ियों के प्रशिक्षण, उनके पौष्टिक भोजन, उनके लिए उपकरण व किट उपलब्ध करवाने के लिए जो पैसा सरकार द्वारा उपलब्ध करवाया जाता है उसका समुचित उपयोग न करते हुए उसे बेईमानी से लोगों की जेब गरम करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, खिलाड़ियों के अभ्यास करने के लिए अच्छे स्टेडियम व प्रशिक्षण के लिए अच्छे कोच की उचित व्यवस्था नहीं होती है। कई बार तो गाँवों में रहने वाले प्रतिभावान खिलाड़ियों को उचित अवसर तक प्रदान नहीं किया जाता है।

इतिहास गवाह है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन कर हमारे बहुत से खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड जैसे प्रतिष्ठित सम्मान प्राप्त करने के बावजूद बहुत ही गरीबी का जीवन व्यतीत करना पड़ा और कईयों को तो अपने मैडल, अवार्ड आदि बेच कर भोजन का प्रबंध करने के लिए मजबूर होना पड़ा क्योंकि देश को सम्मान दिलाने वाले खिलाड़ियों को देश ने ही भुला दिया जो कि बहुत ही शर्मनाक और

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (गैर-शिक्षक क वर्ग) : 'खेलों में आज का भारत'



विचारणीय है। कुछ लोग कहेंगे कि यह परिदृश्य बहुत पुराना है और आज यह स्थिति है कि केन्द्र सरकार, राज्य सरकार व अन्य संस्थाओं द्वारा प्रतिष्ठित खेलों में मैडल प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को बड़ी रकम दे कर सम्मानित किया जाता है। किन्तु इस बात को भी नकारा नहीं जा सकता है कि चयन प्रक्रिया से पहले तो खेल प्रतिभा को बहुत सी दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है और चयन प्रक्रिया में भी अनेक प्रकार की विसंगतियाँ पाई जाती हैं जिसके चलते बहुत से सक्षम उम्मीदवारों की जगह अक्षम उम्मीदवारों को बढ़ावा दिया जाता है और प्रतिभा का गला घोट दिया जाता है जिसके चलते हमारे देश का प्रदर्शन कमतर रह जाता है।

उपसंहार:

सरकार को खेल प्रतिभा की पहचान कर उसको निखारने से लेकर उसकी व उसके परिवार की देखभाल, उसके भविष्य तक की पूर्ण जिम्मेदारी लेते हुए उसका संरक्षण करना चाहिए, जैसी सुविधाएँ सैनिकों के लिए उपलब्ध हैं जैसे कैंटीन सब्सिडी, राशन, क्लब, सरकारी निवास, पेन्शन आदि दे कर उन्हें खेलों में आने के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करना चाहिए। यदि यह संभव हुआ तो वह दिन दूर नहीं कि खेलों में भारत विश्व भर में शिरोमणि कहलाएगा।

“खेलेंगे हम देश बढ़ेगा, विश्व पटल पर भारत चमकेगा
संभव यह होगा तब, योगदान मिलेगा सबका जब
प्रण लें आज हम भी खेलेंगे, तिरंगे को अपने ऊँचा रखेंगे।”



निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (गैर-शिक्षक ख वर्ग) : 'खेलों में आज का भारत'

पुरुषों और महिलाओं के खेलों की लोकप्रियता के बीच एक बड़ा अंतर है ...

प्रस्तावना:

खेल एक शारीरिक क्रिया है, जिसके खेलने के तरीकों के अनुसार उसके अलग-अलग नाम होते हैं। खेल बच्चों और बूढ़ों सभी के द्वारा पसंद किए जाते हैं। आमतौर पर, लोगों द्वारा खेलों के लाभ और महत्व के विषय में कई सारे तर्क दिए जाते हैं। और हाँ, हरेक प्रकार का खेल शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। यह एक व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है। नियमित रूप से खेल खेलना हमारे मानसिक कौशल के विकास में काफी सहायक होता है। यह एक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक कौशल में भी सुधार करता है। यह हमारे अंदर प्रेरणा, साहस, अनुशासन और एकाग्रता लाने का कार्य करता है। स्कूलों में खेल खेलना और इनमें भाग लेना विद्यार्थियों के कल्याण के लिए आवश्यक कर दिया गया है।

खेल-कूद के क्षेत्र में आज देश में अनेक खिलाड़ी उभर रहे हैं— कुश्ती में रवि कुमार दहिया और बजरंग पूनिया, भाला फेंक में नीरज चोपड़ा, भारोत्तोलन में मीराबाई चानू और लवलीना इन्होंने ओलंपिक्स में पदक हासिल किये हैं। विश्वनाथन आनंद, पीवी सिंधु और साइना नेहवाल जैसे अनेक हस्तियों ने भी पदक हासिल किए हैं और अपने देश का नाम रोशन किया है। इनमें से कईयों ने खेल के कोचिंग सेंटर खोलकर खेलों में कोचिंग और ट्रेनिंग भी दे रहे हैं।

खेलों के लिए वर्तमान प्रोत्साहन

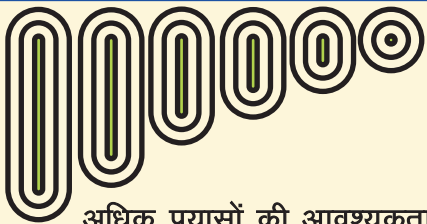
हमारे देश में खेल संबंधित व्यवस्था में सुधार के लिए पहले से ही प्रयास किए जा रहे हैं। युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय भारत में खेलों की बेहतरी के लिए काम करता है। भारत के बजट में खेलों के लिए बड़ी राशि आबंटित की जाती है जो पहले आबंटित राशि से कई गुना ज्यादा है। खेलों में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न, अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार जैसे कई पुरस्कार प्रदान किए जाने हैं।



श्रीमती शकुंतला जलगांवकर

वरिष्ठ लिपिक

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई



अधिक प्रयासों की आवश्यकता

जहाँ क्रिकेट में भारत का प्रदर्शन शानदार है, वहीं अन्य खेलों में हम अभी भी पीछे हैं। यदि हम ओलंपिक में अमेरिका और चीन द्वारा जीते गए पदकों की संख्या की तुलना करें, जो सौ से अधिक हैं, तो हमें पता चलता है कि हम खेलों में इन देशों से बहुत पीछे हैं। फुटबॉल में भारत की रैंकिंग संतोषजनक नहीं है। भारत की हॉकी टीम की स्वर्णिम चमक दिखाई नहीं देती। भारत में खेलों को ठीक से विकसित करने और भारतीय युवाओं की पूरी क्षमता का उपयोग करने के लिए अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। हमें हॉकी, कबड्डी, बैडमिंटन, टेनिस जैसे खेलों को उतना ही महत्व देना चाहिए जितना हम क्रिकेट को देते हैं। इन खेलों के लिए बुनियादी ढाँचा बहुत खराब स्थिति में है। टेनिस, बैडमिंटन जैसे खेलों के लिए विशेष कोर्ट की आवश्यकता होती है जो आमतौर पर केवल शहरी क्षेत्रों में मौजूद होते हैं और उनमें भी भीड़ होती है। भाला-फेंक, शॉट-पुट, निशानेबाजी जैसे खेलों के लिए विशेष उपकरणों की आवश्यकता होती है जो आसानी से उपलब्ध नहीं होते हैं। मैदान दिन-ब-दिन कम पड़ते जा रहे हैं।

खेल व्यवस्थापन यह समस्या केवल सरकार से संबंधित नहीं है, बल्कि काफी हद तक भारतीय मानसिकता से भी संबंधित है। बच्चों के स्कूल के दिनों से ही खेलों को महत्व नहीं दिया जाता है। हमेशा पढ़ाई को प्राथमिकता दी जाती है और दोनों के बीच संतुलन की कमी है। पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए अक्सर अन्य विषयों के शिक्षकों द्वारा खेल की कक्षा की अवधि ली जाती है।

खेलों में नारी शक्ति

खेलों में लड़कियों की भागीदारी एक और महत्वपूर्ण मुद्दा है। खेलों में लड़कियों की संख्या लड़कों की तुलना में काफी कम है। पुरुषों और महिलाओं के खेलों की लोकप्रियता के बीच एक बड़ा अंतर है। लड़कियों को प्रोत्साहित नहीं किया

जाता है, बल्कि खेल में करियर बनाने के लिए निरुत्साहित किया जाता है। इन सभी कमियों को व्यवस्थित रूप से दूर करने की जरूरत है। स्कूल स्तर से ही खेलों को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। छात्रों को भाला फेंक, गोला फेंक, कराटे, तीरंदाजी, कुश्ती जैसे खेलों से परिचित कराना चाहिए। प्रत्येक स्कूल में इन खेलों के लिए आवश्यक उचित उपकरण होने चाहिए। सरकार को शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में बैडमिंटन और टेनिस के लिए कोर्ट, फुटबॉल और हॉकी के लिए मैदान, तैराकी के लिए तरण-तालाब, भाला-फेंक, गोला-फेंक और कुश्ती के लिए मैदान जैसे और अधिक उपकरणों का निर्माण करना चाहिए। इन सुविधाओं को संभालने के लिए अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों की नियुक्ति की जानी चाहिए।

विद्यालयों में खेलों को बढ़ावा

स्कूल में शिक्षकों को खेल के प्रति बच्चों के माता-पिता की मानसिकता को बदलने की दिशा में काम करना चाहिए। शिक्षकों को माता-पिता को प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने बच्चों को खेल के प्रति प्रोत्साहित करें। सरकार द्वारा नियंत्रित खेल अकादमियों में खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने के लिए उत्कृष्ट प्रशिक्षकों की नियुक्ति की जानी चाहिए। खेलों में लड़कियों की भागीदारी को प्रभावशाली लोगों द्वारा प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। उपरोक्त के अलावा, विभिन्न खेलों के लिए टीमों की चयन प्रक्रिया को और अधिक पारदर्शी बनाया जाना चाहिए। योग्य खिलाड़ियों को हमेशा अपनी उत्कृष्टता साबित करने का मौका मिलना चाहिए। खेलों में प्रतिबंधित दवाएँ, रिश्वत और भ्रष्टाचार से सख्ती से निपटा जाना चाहिए।

यदि सुनियोजित योजना बनाकर प्रयास किया जाए तो निश्चित रूप से भारत में खेलों की स्थिति में सुधार होगा। खेल की व्यवस्था और उपकरणों का उपयोग सुलभ होगा और खेलों में युवाओं की भागीदारी में वृद्धि होगी और हम निश्चित रूप से भारत में खेलों का स्वर्णिम युग ला पायेंगे।



निबंध लेखन-2021 / शीर्षक (गैर-शिक्षक ग वर्ग) : 'खेलों में आज का भारत'

खेल वर्तमान को बेहतर बनाते हैं और भविष्य का निर्माण करते हैं...

किसी राष्ट्र की प्रतिष्ठा खेलों में उसकी उत्कृष्टता से बहुत कुछ जुड़ी होती है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में अच्छा प्रदर्शन केवल पदक जीतने तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह किसी राष्ट्र के स्वास्थ्य, मानसिक अवस्था एवं लक्ष्य के प्रति सजगता को भी सूचित करता है। आजकल, एक बेहतर भविष्य का निर्माण करने के लिए खेल एक बहुत ही प्रभावी तरीका है क्योंकि यह सभी के लिए समान और अच्छी नौकरी के अवसरों का मार्ग प्रशस्त करता है। इसके द्वारा खेल गतिविधियों का आयोजन करने वाले देश के अर्थव्यवस्था को बढ़ावा भी मिलता है। अंतरराष्ट्रीय खेल गतिविधियों में जीतने पर यह विजेता देश के नागरिकों को गौरवान्वित भी महसूस कराता है। मानव के समग्र विकास में खेलों की अहम भूमिका रही है। भारत विभिन्न क्षेत्रों में विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। आज खेलों को विकास का एक अंग मानकर ही भारत विश्व के अन्य विकसित देशों के साथ खड़ा हो रहा है। अब भारत में वैश्विक आयोजन हो रहे हैं ओलम्पिक खेल, वर्ल्ड कप, अनेक प्रतियोगिताओं के साथ क्रिकेट का आई.पी.एल. संस्करण तो विश्वभर में लोकप्रिय बन चुका है। क्रिकेट में पुरुष टीम तो अच्छा प्रदर्शन करती ही है पर आज महिला टीम भी इस खेल में चमत्कारी प्रदर्शन करती देखी जा रही है। सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा, धोनी, विराट, गोस्वामी के साथ-साथ आज अनेक युवा खिलाड़ी हर क्षेत्र में आगे आते दिख रहे हैं और खेलों में अच्छा प्रदर्शन करके देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

भारत अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न खेलों में उत्कृष्टता प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित उपाय किए जा रहे हैं:



श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन

निजी सचिव

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई



1- खेलों से राजनीतिक प्रभाव हटाना:

भारत में हर खेल संस्था में महत्वपूर्ण पदों पर राजनेता बैठे हुए हैं जिनकी खेल की समझ बिल्कुल जीरो है। खिलाड़ियों को कोई सुविधा उपलब्ध कराने में उनकी खास दिलचस्पी नहीं रहती। अगर इन संस्थाओं में राजनेताओं की जगह पूर्व खिलाड़ियों को रखें तो हर खेल की स्थिति में सुधार होगा। क्योंकि एक खिलाड़ी की मानसिकता और जरूरतों को उस दौर से गुजर चुका या उससे लगाव रखने वाला व्यक्ति ही बेहतर समझ सकता है।

2- जमीनी स्तर से प्रशिक्षण की व्यवस्था:

चाहे चीन हो, ऑस्ट्रेलिया हो या अमेरिका इन सभी देशों में जमीनी स्तर से बच्चों को प्रशिक्षण दिया जाता है। भारत सरकार उचित योजना बना रही है ताकि प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को सही प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके।

3- तकनीक का बेहतर प्रयोग:

आज भारत के क्रिकेट, फुटबॉल, हॉकी हर खेल में तकनीक का प्रयोग कर खिलाड़ियों को कोचिंग दी जा रही है। हर खेल से जुड़ी तकनीक हमारे खिलाड़ियों और कोचों को उपलब्ध कराई जा रही है। आज तकनीकी प्रशिक्षण पर बहुत ज्यादा जोर दिया जाता है। जिसके दम पर आज भारत देश हर खेल में चैम्पियन बनने की कोशिश कर रहा है।

4- स्पोर्ट्स बजट का सदुपयोग:

स्पोर्ट्स बजट के नाम पर जो पैसा सरकार हर साल देती है उससे यूथ एकेडमी बनाने के साथ ही देश के विभिन्न कोनों से छिपे टैलेंट को ढूंढने और तराशने में लगाया जा रहा है। भारत सरकार खेल बजट में बढ़ोतरी कर बेहतरीन खिलाड़ियों के निर्माण के लिए जिन सुविधाओं की जरूरत है उनको खिलाड़ियों को दे रही है।

खेल वर्तमान को बेहतर बनाते हैं और भविष्य का निर्माण करते हैं। ओलंपिक में नए भारत का बुलंद आत्मविश्वास हर खेल में दिखा है। जिसमें हमारे खिलाड़ी अपने से बेहतर खिलाड़ियों और टीमों को चुनौती दी है।

भारत सरकार अपनी विभिन्न खेल प्रोत्साहन योजनाओं के जरिए राज्य सरकारों और राष्ट्रीय खेल संघों (एनएसएफ) के प्रयासों में सहायता करती है।

भारतीय खेल प्राधिकरण (साई), युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त निकाय है। यह प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की पहचान करने व उन्हें राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में उत्कृष्टता प्राप्त करने को लेकर प्रशिक्षित करने के लिए देशभर में निम्नलिखित खेल प्रोत्साहन योजनाओं को लागू कर रहा है:

- राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (एनसीओई)
- साई प्रशिक्षण केंद्र (एसटीसी)
- एसटीसी का विस्तार केंद्र
- राष्ट्रीय खेल प्रतिभा प्रतियोगिता (एनएसटीसी)

साई ने देशभर में उपरोक्त खेल प्रोत्साहन योजनाओं को लागू करने के लिए 23 एनसीओई और 67 एसटीसी की स्थापना की है। साई की उपरोक्त खेल प्रोत्साहन योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए एनसीओई, एसटीसी और विस्तार केंद्र आदि सहित कुल 189 केंद्र कार्यरत हैं।

टारगेट ओलंपिक पोडियम स्कीम (टीओपीएस) के तहत भारत सरकार ओलंपिक और पैरालंपिक खेलों की तैयारी कर रहे भारत के शीर्ष खिलाड़ियों को सहायता प्रदान करती है। मंत्रालय की सामान्य योजनाओं के तहत अन्य सहायता उपलब्ध नहीं होने पर चयनित खिलाड़ियों को अनुकूलित प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय खेल विकास कोष (एनएसडीएफ) से वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। सरकार ने अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर उच्चतम स्तर की उपलब्धि प्राप्त करने के लिए प्रतिभा की पहचान व खेल प्रतिभा को प्रशिक्षित करने के लिए खेलो इंडिया योजना शुरू की है। यह योजना अखिल भारतीय यानी शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों को कवर करती है।

“खेल एकता, सामाजिकता, देश प्रेम और अनुशासन की भावना बलवित करता है।”



कहानी

शहरी संस्कृति और बदलता परिवेश

चिलचिलाती धूप में एक बड़ी सी गाड़ी से राधिका उतरी ही थी कि मामाजी अपने परिचितों के साथ स्वागत के लिए दरवाजे पर खड़े हो गए। कानों में चमकते हुए कीमती हीरे दूर से ही राधिका की समृद्धि बर्याँ कर रहे थे। मामाजी अपने परिचितों को बड़े ही गर्व से कह रहे थे कि राधिका बिटिया दिल्ली में रहती है, राधिका बिटिया के पति कमिश्नर हैं और बच्चे अमेरिका में रहते हैं। बहुत अमीर हैं, बहुत बड़ा घर है, कई बरसों के बाद यहाँ आना हुआ है। हमारी आँखें तो इन्हें देखने के लिए तरस जाती हैं।

परिवार के अन्य सदस्य भी उसके स्वागत के लिए आकर खड़े हो गए। राधिका भी मन ही मन गर्व युक्त प्रसन्नता का अनुभव कर रही थी। इतना अपनापन और प्यार उसे अपने माता-पिता और मामा-मामी के घर में ही मिलता है। पिछले 30 साल इतने बड़े शहर में रहते बीत गए किंतु उसे अब तक यह शहर बेगाना ही लगता है। वहाँ तो दोस्ती रिश्ते सब मतलब पर आधारित होते हैं। बहुत से मेहमान और परिचित लोग पहले से ही एकत्रित हो चुके थे और मामा जी कनखियों में इशारा कर राधिका की संपन्नता के बारे में बड़े ही गर्व से बता रहे थे। हर वर्ष वैशाखी पर उसके मामा जी के यहाँ फसल की पैदावार के पश्चात एक भोज का आयोजन होता है इसलिए राधिका अपनी माँ के साथ मामा जी के गाँव गई थी।

मामा जी के यहाँ हर शुभ काम की शुरुआत सत्यनारायण व्रत कथा से होती है। जैसे ही पूजा खत्म हुई, सभी को प्रसाद आबंटित किया गया। सभी ने अपने प्रसाद

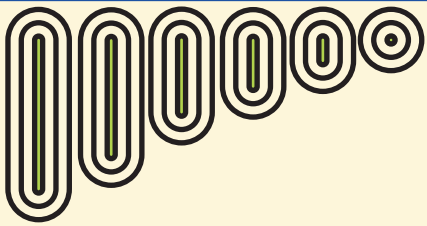


श्रीमती किरन देवी

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापिका

परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय-4, मुंबई

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था



को ग्रहण किया और भोजन के लिए कतार में बैठ गए। राधिका ने भी प्रसाद ग्रहण किया और अपने पति के साथ एक आसन पर बैठ गई। परंतु राधिका की मामी की पुत्रवधू प्रसाद अपने आंचल में बांधकर मेहमानों की देखरेख और अन्य कामकाज में व्यस्त हो गई। राधिका ने कहा “भाभी पहले प्रसाद खा लो, काम बाद में कर लेना।” उसने मुसकुरार जवाब दिया— “दीदी अभी तक मम्मी ने कुछ भी नहीं खाया, आज उनका व्रत है। मैं उनके खाने के बाद ही प्रसाद ग्रहण करूँगी।”

उसका उत्तर सुनते ही राधिका अवाक् रह गई। एक क्षण में उसकी संपन्नता विलुप्त हो गई। उसे एहसास हुआ कि गाँव की धरती में परंपराएँ और संस्कृति आज भी जीवित है। शहरों के दिखावटी कल्चर में आदमी ने अपनी मान-मर्यादा और परंपराओं को खो दिया है। बहुमंजिला इमारतों में रहनेवाले पढ़े-लिखे, ऊँचे पद-पेशेवाले इस सम्मान के बारे में कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। जो सम्मान और प्यार उसकी मामी को मिलता है उसके बारे में तो वह सोच भी नहीं सकती। उसके उच्च शिक्षित पुत्र और पुत्रवधू इन परंपराओं से कोसों दूर हैं। कहाँ विदेशी टाट और कहाँ यह गाँव की अभाव से परिपूर्ण जिंदगी? दोनों में कोई तालमेल नहीं, मगर खुशियाँ किसी संपत्ति की मोहताज़ नहीं होतीं। यहाँ तो लोग छोटी-छोटी चीजों में भी खुशियाँ खोज लेते हैं। घटना बहुत छोटी है मगर उसने राधिका की आँखें खोल दीं। उसे इस बात का एहसास हुआ कि आज सब कुछ होते हुए वास्तव में वह कंगाल है।



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा-2020

प.ऊ.कें. विद्यालयों और केंद्रीय कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताएँ

क्र. सं.	प्रतियोगिता	दिनांक	वर्ग	शीर्षक	पुरस्कार
1	पोस्टर एवं स्लोगन	21/09/2020	कला शिक्षक	स्वास्थ्यकर्मी	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)
			गैर-कला शिक्षक/ अन्य सभी कर्मचारी)	सुरक्षाकर्मी	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)
2	हिंदी निबंध लेखन (शिक्षकों हेतु)	25/09/2020	क, ख एवं ग-तीन वर्ग	ऑनलाइन शिक्षण-विद्यार्थी जीवन का अभिन्न अंग	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
	हिंदी निबंध लेखन (गैर-शिक्षकों हेतु)		क, ख एवं ग-तीन वर्ग	सोशल मीडिया	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
3	हिंदी मौलिक कविता लेखन (शिक्षकों और गैर-शिक्षकों हेतु)	28/09/2020	क, ख एवं ग-तीन वर्ग	क- नव-सामान्य परिदृश्य ख- तालाबंदी(लॉकडाउन) ग- प्रकृति	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा-2020

हिंदी पखवाड़ा-2020 के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की सूची

प्रतियोगिता एवं वर्ग	दिनांक	वर्ग	क्र.सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
निबंध लेखन (शिक्षक वर्ग)	25-09-2020	क	1	श्रीमती आभा श्रीवास्तव (2544)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	प्रथम
			2	सुश्री प्रतिमा (3301)	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	द्वितीय
			3	सुश्री रूपा झा (3252)	प.ऊ.कें.वि.-1, मुंबई	तृतीय
		ख	4	श्री विशम्भर शिवाजीराव लें. (3202)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	प्रथम
			5	सुश्री सरीफा पिन्हेरो (2578)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	द्वितीय
			6	श्री सत्यवान भिवाजी लोखंडे (3140)	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	तृतीय
		ग	7	श्रीमती एस. अनीता (2685)	प.ऊ.कें.वि.-1, कल्पाक्कम	प्रथम
			8	श्रीमती राजलक्ष्मी श्रीधर (2238)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	द्वितीय
			9	श्रीमती कन्नगी इलांगोवन (2492)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	तृतीय
निबंध लेखन (गैर-शिक्षक वर्ग)	25-09-2020	क	10	श्री रमेश तिलवे (2017)	प.ऊ.कें.वि.-2, रावतभाटा	प्रथम
			11	श्री अनूप पाठक (1850)	प.ऊ.कें.वि.-4, रावतभाटा	द्वितीय
			12	श्रीमती रूपा मंगेश सावंत (2403)	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	तृतीय
		ख	13	श्री महेश एम. वालेन्द्र (2825)	प.उ.क.म.वि., मुंबई	प्रथम
			14	श्रीमती रेशमा आ. वेंगुलेंकर (3083)	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	द्वितीय
			15	श्री विकास आ. पाटील (2074)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	तृतीय
		ग	16	श्रीमती पुष्पा भास्कर चंदन (2214)	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	प्रथम
			17	श्रीमती एम. लता (2107)	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	द्वितीय
			18	श्रीमती शोभना डी. पनीकर (1361)	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	तृतीय



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा-2020

पोस्टर एवं स्लोगन	21-09-2020	कला शिक्षक	19	श्री संजय कुमार (3229)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	प्रथम
			20	श्री सुनिल ताथु माली (3183)	प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगुडा	द्वितीय
			21	श्री निरोज कुमार मोहन्ती (2474)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	तृतीय
		अन्य शिक्षक	22	सुश्री अश्विनी मांजरेकर (3021)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	प्रथम
			23	सुश्री पिउ रॉय (3110)	प.ऊ.कें.वि.-1, कल्पाक्कम	द्वितीय
			24	श्रीमती माया देवी (2841)	प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम	तृतीय
मौलिक कविता लेखन	28-09-2020	क	25	श्रीमती राज रानी सिंह (2154)	प.ऊ.कें.वि., नरौरा	प्रथम
			26	श्री धर्मेन्द्र चौधरी (3331)	प.ऊ.कें.वि.-2, कल्पाक्कम	द्वितीय
			27	श्री योगेन्द्र कुमार (3217)	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	तृतीय
		ख	28	श्री सत्यवान भिवाजी लोखंडे (3140)	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	प्रथम
			29	सुश्री प्रिया प्रमोद पिंपलकर (3192)	प.ऊ.कें.वि.-3, तारापुर	द्वितीय
			30	श्रीमती अमला प्रदीप पंडित (2038)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	तृतीय
		ग	31	श्रीमती के. श्रीलता (3009)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	प्रथम
			32	श्रीमती एस. अनीता (2685)	प.ऊ.कें.वि.-1, कल्पाक्कम	द्वितीय
			33	श्रीमती टी.सी. प्रीति (2498)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	तृतीय

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा-2021

प.ऊ.के. विद्यालयों और केंद्रीय कार्यालय में आयोजित प्रतियोगिताएँ

क्र सं	प्रतियोगिता	दिनांक	वर्ग	शीर्षक	पुरस्कार
1	पोस्टर एवं स्लोगन	21/09/2021	कला शिक्षक	भारत का कोई विश्व धरोहर स्थल	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)
			गैर-कला शिक्षक/ अन्य सभी कर्मचारी)	योग	प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 3 पुरस्कार)
2	हिंदी निबंध लेखन (शिक्षकों हेतु)	25/09/2021	क, ख एवं ग-तीन वर्ग	शिक्षण सहायक सामग्री	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
	हिंदी निबंध लेखन (गैर-शिक्षकों हेतु)		क, ख एवं ग-तीन वर्ग	खेलों में आज का भारत	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
3	हिंदी मौलिक कविता लेखन (शिक्षकों और गैर-शिक्षकों हेतु)	28/09/2021	क, ख एवं ग-तीन वर्ग	क- विश्व शांति ख- नई पीढ़ी ग- पर्यावरण	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)
4	हिंदी वक्तुत्व प्रतियोगिता (शिक्षकों और गैर-शिक्षकों हेतु)	29/10/2021	क, ख एवं ग-तीन वर्ग	क- घर से कामकाज ख- सफलता के सच्चे मायने ग- पारिवारिक रिश्ते वर्तमान में	तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार (कुल 9 पुरस्कार)



परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा-2021

हिंदी पखवाड़ा-2021 के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों की सूची

प्रतियोगिता एवं वर्ग	दिनांक	वर्ग	क्र.सं.	विजेता प्रतिभागी	विद्यालय	स्थान
निबंध लेखन (शिक्षक वर्ग)	25-09-2021	क	1	सुश्री रीना (3315)	प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम	प्रथम
			2	श्री दीपक कुमार चौधरी (3333)	प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम	द्वितीय
			3	सुश्री प्रतिमा (3301)	प.ऊ.कें.वि.-5, मुंबई	तृतीय
		ख	4	श्री सतीश म. मेश्राम (3225)	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	प्रथम
			5	सुश्री पल्लवी गर्ग (2693)	प.ऊ.कें.वि., इंदौर	द्वितीय
			6	सुश्री प्रीति वा. रोहरा (2426)	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	तृतीय
		ग	7	श्रीमती एस. अनीता (2685)	प.ऊ.कें.वि.-1, कलपक्कम	प्रथम
			8	श्रीमती के. श्रीलता (3009)	प.ऊ.कें.वि., मणुगुरू	द्वितीय
			9	श्री एम.वी.साईनाथ च. (2591)	प.ऊ.कें.वि., अणुपुरम	तृतीय
निबंध लेखन (अधिकारी/लिपिक वर्ग)	25-09-2021	क	10	श्री अनूप पाठक (1850)	प.ऊ.कें.वि.-4, रावतभाटा	प्रथम
			11	श्री रमेश तिलवे (2017)	प.ऊ.कें.वि.-2, रावतभाटा	द्वितीय
			12	श्री विजय कुमार गोयल (1848)	प.ऊ.कें.वि.-4, रावतभाटा	तृतीय
		ख	13	श्रीमती शकुंतला प्र. जलगांवकर	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	प्रथम
			14	श्रीमती रेशमा आ. वेंगुर्लेकर	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	द्वितीय
			15	श्री महेश एम. बालेन्द्र (2825)	प.उ.क.म.वि., मुंबई	तृतीय
		ग	16	श्रीमती पुष्पा भा. चंदन (2214)	केंद्रीय कार्यालय, मुंबई	प्रथम
			17	श्रीमती एम. लता (2107)	प.ऊ.कें.वि., मैसूर	द्वितीय
			18	श्री जॉन अँनटोनी (2324)	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	तृतीय
पोस्टर एवं स्लोगन	21-09-2021	कला शिक्षक	19	श्री संजय कुमार (3229)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	प्रथम
			20	श्री सुनिल ताथु माली (3183)	प.ऊ.कें.वि.-3, मुंबई	द्वितीय

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित प्रमुख कार्यक्रमों की झलक: हिंदी पखवाड़ा-2021

			21	श्री अमोल विजय तोते (3282)	प.ऊ.कें.वि.-2, रावतभाटा	तृतीय
		अन्य शिक्षक	22	श्रीमती अमूल्या वेदांतम (3378)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	प्रथम
			23	श्रीमती अश्विनी मां. (3021)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	द्वितीय
			24	श्रीमती मीता साहा (2628)	प.ऊ.कें.वि.-1, जादूगोडा	तृतीय
			25	श्री जयवर्धन भटनागर (1933)	प.ऊ.कें.वि.-4, रावतभाटा	प्रथम
मौलिक कविता लेखन	28-09-2021	क	26	श्री अतुल मित्तल (2646)	प.ऊ.कें.वि., नरौरा	द्वितीय
			27	श्रीमती नीरजा त्रिपाठी (2121)	प.ऊ.कें.वि.-4, मुंबई	तृतीय
			28	श्रीमती अमला प्र. पंडित (2038)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	प्रथम
		ख	29	श्री विश्वास माने (2366)	प.ऊ.कें.वि.-2, मुंबई	द्वितीय
			30	श्री आजिनाथ गायकवाड (3198)	प.ऊ.कें.वि.-2, तारापुर	तृतीय
			31	श्रीमती अनुपमा तपन मंडल (2554)	प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	प्रथम
		ग	32	श्रीमती टी.सी. प्रीति (2498)	प.ऊ.कें.वि., कुडनकुलम	द्वितीय
			33	सुश्री सरीफा पिन्हेरो (2578)	प.ऊ.कें.वि.-6, मुंबई	तृतीय
हिंदी वक्तृत्व	28-10-2021	क	34	श्रीमती सत्य प्रभा (2808)	प.ऊ.कें.वि., नरौरा	प्रथम
			35	श्री अभिषेक कुमार (3367)	प.ऊ.कें.वि.-1, कलपक्कम	द्वितीय
			36	सुश्री स्नेहलता आचार्य (3216)	प.ऊ.कें.वि.-2, कलपक्कम	तृतीय
		ख	37	श्री सुधीर खुल्लर (2496)	प.उ.क.म.वि., मुंबई	प्रथम
			38	डॉ. राहुल ल. खिल्लारे (3235)	प.ऊ.कें.वि.-3, रावतभाटा	द्वितीय
			39	श्री महेश दि. बरवाकर (3262)	प.ऊ.कें.वि.-2, रावतभाटा	तृतीय
		ग	40	श्रीमती शांति श्रीकुमार (2632)	प.ऊ.कें.वि., इंदौर	प्रथम
			41	श्रीमती एस. अनीता (2685)	प.ऊ.कें.वि.-1, कलपक्कम	द्वितीय
42	श्रीमती अनुपमा त. मंडल (2554)		प.ऊ.कें.वि.-1, तारापुर	तृतीय		



परमाणु ऊर्जा कनिष्ठ महाविद्यालय, मुंबई में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी (18 से 19 नवंबर, 2022) में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हुए सचिव, परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था और मुंबई स्थित परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालयों के प्रमुख, शिक्षक एवं पदाधिकारी



नवी मुंबई नराकास की 36वीं बैठक में परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था के अध्यक्ष और मुंबई स्थित परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालयों के प्रमुख, शिक्षक, पदाधिकारी, राजभाषा विभाग एवं कोंकण रेलवे के पदाधिकारी



परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-1, हैदराबाद के संसदीय राजभाषा निरीक्षण का प्रदर्शनी स्टॉल



परमाणु ऊर्जा केन्द्रीय विद्यालय-1, कल्याक्कम के संसदीय राजभाषा निरीक्षण का प्रदर्शनी स्टॉल

परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था

(परमाणु ऊर्जा विभाग, भारत सरकार का स्वायत्त निकाय)

केंद्रीय कार्यालय, पश्चिमी क्षेत्र, प.ऊ.कें.वि.-6, अणुशक्तिनगर, मुंबई-400094

दूरभाष नं.: 022-25565049 / 25503328 / 25571501 / 25503310

वेबसाइट: www.aees.gov.in

ईमेल: chairman@aees.gov.in, secretary@aees.gov.in

hau@aees.gov.in, rajbhasha@aees.gov.in
